सुधा

सी-डैक वार्षिक हिंदी पत्रिका

अंक 3 | वर्ष 3 | विक्रम संवत 2083 | सितंबर 2026 ।



प्रगत संगणन विकास केंद्र
CENTRE FOR DEVELOPMENT OF ADVANCED COMPUTING

कवर पेज डिजाइन के बारे में

यह आवरण हिंदी भाषा और देवनागरी लिपि के विकास को भारत की समृद्ध भाषाई एवं सुलेख परंपरा से जोड़ता है। पृष्ठभूमि में प्राकृत और देवनागरी परंपराओं के साथ 1778 ईस्वी की देवनागरी में लिखित शिवमहिम्न स्तोत्र की पांडुलिपि का संदर्भ है। केंद्र में देवनागरी के आद्यक्षर 'अ' को लयात्मक और प्रवाहपूर्ण सुलेख के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। इसके स्वरूप में संरचनात्मक संतुलन, गति और सामंजस्य के साथ लिपि की कलात्मक अभिव्यक्ति को उभारा गया है। न्यूनतम दृश्य शैली ऐतिहासिक संदर्भों, विरासत और सुलेख को सहज रूप से एक साथ प्रस्तुत करती है। पृष्ठ आवरण पर "नागबंध" देवनागरी अक्षरों को परस्पर जोड़कर लिपि की सौंदर्यात्मक और कलात्मक संभावनाओं को दर्शाता है।

About cover page design

The cover design traces the evolution of Devanagari, drawing from India's rich linguistic and calligraphic heritage. Its background combines Prakrit and Devanagari traditions with a 1778 AD manuscript of the "Shivamahimna Stotra" written in Devanagari. At the centre, the Adyakshara—the initial "A" of Devanagari—is expressed through rhythmic, fluid calligraphic strokes. The design balances structural integrity, movement, and harmony while highlighting the expressive beauty of the script. A minimal visual language allows history, heritage, and calligraphy to coexist without overwhelming the composition. The back cover features the "Nagabandha", transforming Devanagari letters into an interconnected ornament that celebrates the script's artistic possibilities.

राजभाषा गतिविधियाँ




एक दिवसीय राजभाषा कार्यशाला










केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो,
राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय,
अनुवाद प्रशिक्षण केंद्र मुंबई द्वारा
सी-डैक, पुणे में आयोजित
5 दिवसीय



ई. मगेश
महानिदेशक
E. Magesh
Director General

प्रगत संगणन विकास केंद्र
CENTRE FOR DEVELOPMENT OF ADVANCED COMPUTING

International Year of Cooperatives 2025

सी-डैक CDAC

इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय की वैज्ञानिक संस्था, भारत सरकार
A Scientific Society of the Ministry of Electronics and Information Technology, Government of India

सी-डैक इनोवेशन पार्क
पंचवटी, पाषाण, पुणे - 411008, भारत
C-DAC Innovation Park, Panchavati
Pashan, Pune - 411008, India
फ़ोन / Tel:+91-20-2586 8080
फ़ैक्स / Fax: +91-20-2586 8081
ई-मेल / email: dg@cdac.in /
magesh@cdac.in
www.cdac.in

महानिदेशक का संदेश

यह हर्ष का विषय है कि सी-डैक पुणे केंद्र द्वारा नियमित रूप से वार्षिक हिंदी पत्रिका **'सुधा'** का प्रकाशन किया जा रहा है। इसी क्रम में, इसके तृतीय अंक का प्रकाशन मेरे लिए विशेष प्रसन्नता का विषय है। 'सुधा' आज केवल रचनात्मक अभिव्यक्ति का मंच नहीं, बल्कि राजभाषा हिंदी के प्रति हमारी प्रतिबद्धता, तकनीकी एवं वैज्ञानिक विषयों को हिंदी में सहज एवं प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने की क्षमता तथा साहित्यिक-सांस्कृतिक चेतना के संवर्धन का सशक्त माध्यम बन चुकी है।

सी-डैक देश की उन्नत प्रौद्योगिकी क्षमताओं के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। ऐसे में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के साथ हिंदी का समन्वय समय की आवश्यकता है। हमारी तकनीकी उपलब्धियाँ तभी व्यापक समाज तक प्रभावी रूप से पहुँच सकती हैं, जब ज्ञान-विज्ञान की भाषा सरल, सहज और जनसुलभ हो। इस दिशा में 'सुधा' जैसे प्रयास विशेष महत्त्व रखते हैं।

मुझे विश्वास है कि पत्रिका में प्रकाशित रचनाएँ सी-डैक परिवार के सदस्यों की सृजनात्मक प्रतिभा को अभिव्यक्ति देने के साथ-साथ हिंदी के प्रति रुचि और दायित्व-बोध को भी सुदृढ़ करेंगी। यह प्रयास कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग तथा राजभाषा नीति के प्रभावी कार्यान्वयन को नई ऊर्जा प्रदान करेगा।

मेरी कामना है कि यह पत्रिका निरंतर ज्ञान, सृजन और संवेदना की समृद्ध धारा प्रवाहित करती रहे। 'सुधा' के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल एवं सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ।

ई. मगेश

ई. मगेश

सी-डैक CDAC
इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय
की वैज्ञानिक संस्था, भारत सरकार
A Scientific Society of Ministry of
Electronics and Information Technology
Government of India

संजय वांढेकर Sanjay Wandhekar
केंद्र प्रमुख, पुणे Centre Head, Pune
सी-डैक इनोवेशन पार्क, पंचवटी, पाषाण, पुणे - 411 008.
C-DAC Innovation Park, Panchavati, Pashan, Pune - 411 008.
+91-20-25868082
centrehead-pune@cdac.in, sanjayw@cdac.in www.cdac.gov.in

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि सी-डैक, पुणे केंद्र की वार्षिक हिंदी पत्रिका **'सुधा'** अपने तृतीय अंक के रूप में आप सभी के समक्ष प्रस्तुत हो रही है। इस अवसर पर पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी सहकर्मियों एवं रचनाकारों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिंदी केवल हमारी अभिव्यक्ति और संवाद की भाषा ही नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति, संवेदनाओं और ज्ञान-परंपरा की भी महत्वपूर्ण वाहक है। आज जब विज्ञान और प्रौद्योगिकी हमारे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित कर रही है, तब यह आवश्यक है कि तकनीकी ज्ञान और नवाचार की भाषा भी अधिकाधिक जनसुलभ और भारतीय भाषाओं से जुड़ी हो। इस दिशा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन लर्निंग, प्राकृतिक भाषा संसाधन (NLP), भाषा प्रौद्योगिकी तथा भारतीय भाषाओं के लिए विकसित डिजिटल समाधानों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है।

सी-डैक का कार्य देश में उन्नत सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के विकास के साथ-साथ भारतीय भाषाओं को डिजिटल दुनिया में सशक्त बनाने की दिशा में भी महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के लिए भाषा संसाधनों, अनुवाद तकनीकों, वाक् प्रौद्योगिकी तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित समाधानों का विकास इस बात का उदाहरण है कि तकनीक और भाषा एक-दूसरे के पूरक बनकर ज्ञान को अधिक व्यापक और समावेशी बना सकते हैं।

'सुधा' का यह अंक इसी समन्वय को रेखांकित करने का एक सुंदर प्रयास है। इसमें प्रकाशित रचनाएँ न केवल हिंदी के प्रति हमारे प्रेम और प्रतिबद्धता को अभिव्यक्त करेंगी, बल्कि विज्ञान, प्रौद्योगिकी और हिंदी के बीच बन रहे नए संबंधों की झलक भी प्रस्तुत करेंगी। मेरा विश्वास है कि इस प्रकार के प्रयास हमारे कार्यस्थल पर हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करने के साथ-साथ तकनीकी विषयों को हिंदी में समझने और अभिव्यक्त करने की संस्कृति को भी सुदृढ़ करेंगे।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम 'तकनीक के साथ हिंदी' और 'हिंदी के माध्यम से तकनीक'—दोनों दृष्टियों को आगे बढ़ाएँ। हमारी तकनीकी उपलब्धियों का लाभ तभी व्यापक रूप से समाज तक पहुँच सकेगा, जब ज्ञान की भाषा सहज, सरल और सर्वसुलभ होगी।

मैं 'सुधा' के तृतीय अंक की सफलता की कामना करता हूँ और आशा करता हूँ कि यह अंक सी-डैक परिवार के सदस्यों की रचनात्मकता, तकनीकी दृष्टि और हिंदी के प्रति उनके अनुराग का सुंदर प्रतिबिंब बनेगा।

पत्रिका के संपादकीय मंडल एवं सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

संजय वांढेकर

संजय वांढेकर

“साहित्यशक्ति, शब्द-शक्ति मनुष्य तभी प्रकट कर सकता है, जब वह सामान्य मन से ऊपर उठकर जनता के मानस की तरफ देखे।”

विनोबा भावे

संपादक की कलम से



सुधीर कुमार मिश्र

भारतीय साहित्य और पत्रकारिता के इतिहास में 'सुधा' नाम विशेष महत्व रखता है। समय-समय पर हिंदी, मराठी, कन्नड़ तथा अन्य भारतीय भाषाओं में सुधा नाम से अनेक पत्रिकाएँ, समाचार-पत्र और साहित्यिक प्रकाशन प्रकाशित होते रहे हैं। इन सभी का मूल उद्देश्य ज्ञान, साहित्य, संस्कृति और समाज के श्रेष्ठ विचारों का प्रसार रहा है। इस प्रकार 'सुधा' केवल एक नाम नहीं, बल्कि भारतीय भाषाई और सांस्कृतिक चेतना का साझा प्रतीक बनकर उभरता है।

संस्कृत में 'सुधा' का अर्थ अमृत, ज्ञानरस अथवा जीवनदायी सार है। भारत की भाषाई विविधता में यह नाम समान रूप से स्वीकार्य, आत्मीय और सकारात्मक भाव का संचार करता है। यह विभिन्न भाषाओं, परंपराओं और विचारधाराओं के बीच संवाद, समन्वय और सांस्कृतिक एकात्मता का संदेश देता है। सी-डैक, पुणे केंद्र की वार्षिक हिंदी पत्रिका के लिए 'सुधा' नाम का चयन भी इसी व्यापक दृष्टि का परिचायक है। सी-डैक स्वयं विभिन्न भारतीय भाषाओं, सूचना प्रौद्योगिकी, अनुसंधान और नवाचार के संगम का केंद्र है। ऐसे में 'सुधा' केवल एक पत्रिका का शीर्षक नहीं, बल्कि ज्ञान, भाषा, तकनीक और संस्कृति के समन्वित प्रवाह का प्रतीक बन जाता है। यह नाम इस विश्वास को अभिव्यक्त करता है कि भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, बल्कि विविध संस्कृतियों, विचारों और ज्ञान-परंपराओं को जोड़ने वाला सेतु भी है।

इसी भावना के साथ 'सुधा' का उद्देश्य हिंदी के माध्यम से भारतीय भाषाओं के पारस्परिक सम्मान, सांस्कृतिक समन्वय, मौलिक चिंतन और ज्ञान-विनिमय को प्रोत्साहित करना है, ताकि यह पत्रिका अपने नाम के अनुरूप साहित्य, विज्ञान, प्रौद्योगिकी और संस्कृति का 'ज्ञान-अमृत' पाठकों तक पहुँचा सके।

हमें अत्यंत हर्ष और संतोष के साथ 'सुधा' वार्षिक हिंदी पत्रिका के तृतीय अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए प्रसन्नता हो रही है। यह अंक हिंदी भाषा, साहित्य, ज्ञान और सृजनात्मक अभिव्यक्ति के विविध आयामों को समर्पित है। इस वर्ष हमें सीडैक पुणे केंद्र के विभिन्न समूहों से अभूतपूर्व उत्साह के साथ 87 रचनाएँ प्राप्त हुईं। यह हिंदी के प्रति बढ़ते अनुराग, रचनात्मक ऊर्जा और साहित्यिक प्रतिबद्धता का प्रेरक प्रमाण है।

वर्तमान समय में कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित तकनीकों के व्यापक उपयोग ने लेखन की प्रक्रिया को नई गति और सुविधा प्रदान की है। शोध, भाषा-संपादन एवं विचार-संग्रह जैसे कार्यों में ये तकनीकें सहायक सिद्ध हो सकती हैं, किंतु इसके साथ मौलिक सृजन की पहचान और संरक्षण एक महत्वपूर्ण चुनौती के रूप में सामने आया है। ऐसे परिवेश में किसी भी साहित्यिक प्रकाशन की विश्वसनीयता उसके प्रकाशित लेखों की मौलिकता पर ही निर्भर करती है।

इसी दृष्टि से संपादकीय मंडल ने यह निर्णय लिया है कि पत्रिका में केवल लेखक की मौलिक एवं स्वलिखित रचनाओं को ही प्रकाशन हेतु स्वीकार किया जाएगा। सभी रचनाएँ उचित संदर्भों सहित कॉपीराइट, बौद्धिक संपदा अधिकारों एवं नैतिक मानकों के अनुरूप होना अनिवार्य होगा। कृत्रिम बुद्धिमत्ता या अन्य तकनीकी साधनों से तैयार सामग्री को लेखक की स्वयं की मौलिक रचना के रूप में प्रस्तुत करना स्वीकार्य नहीं होगा। यह नीति पत्रिका की गुणवत्ता, साहित्यिक गरिमा एवं विश्वसनीयता को बनाए रखने के उद्देश्य से भविष्य के लिए एक मानक के रूप में अपनाई जा रही है।

प्राप्त रचनाओं में तकनीकी लेख, गैर-तकनीकी लेख, साहित्य यात्रा, भाषा-विमर्श, यात्रा संस्मरण, कविता, कथा/कहानी, कला (चित्रकारी) तथा पारिवारिक स्तंभ जैसी विविध विधाओं का समृद्ध समावेश है। प्रत्येक रचना अपने विषय, दृष्टिकोण और अभिव्यक्ति की विशिष्टता के कारण महत्वपूर्ण है। संपादकीय मंडल ने सभी प्रविष्टियों का गंभीरता और निष्पक्षता के साथ अध्ययन कर इस अंक के लिए चयन किया है। हमारा प्रयास रहा है कि पाठकों को ज्ञानवर्धक, विचारोत्तेजक और प्रेरणादायी सामग्री का संतुलित संकलन प्राप्त हो।

आज के बदलते समय में हिंदी केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक चेतना, सामाजिक संवेदनशीलता और बौद्धिक संवाद का सशक्त आधार है। इस अंक में सम्मिलित विविध रचनाएँ परंपरा और आधुनिकता के बीच सार्थक संवाद स्थापित करती हैं तथा पाठकों को नए दृष्टिकोणों से परिचित कराती हैं।

हम सभी लेखकों, कवियों, कलाकारों और सहयोगियों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं, जिनके उत्साह, परिश्रम और सृजनशीलता ने इस अंक को समृद्ध बनाया। साथ ही, अपने पाठकों का भी धन्यवाद, जिनके निरंतर स्नेह, विश्वास और प्रोत्साहन से 'सुधा' निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है।

हमें विश्वास है कि 'सुधा' का यह तृतीय अंक आपके ज्ञान, संवेदना और साहित्यिक रुचि को नई दिशा प्रदान करेगा तथा हिंदी भाषा और साहित्य के प्रति आपका अनुराग और अधिक सुदृढ़ करेगा।

- डॉ. सुधीर कुमार मिश्र

सुधा वार्षिक हिंदी पत्रिका

अंक - 3 | वर्ष - 3 | विक्रम संवत 2083| सितंबर 2026

-| संरक्षक |-



संजय वांढेकर

-| प्रधान संपादक |-



डॉ. सुधीर कुमार मिश्र

-| संपादक मंडल |-



लक्ष्मी पानट



असीमा मिश्रा



अमित गुप्ता



ऋचा रस्तोगी



अस्मिता गारगोटे



सायली गोडबोले



प्रभाकर पाण्डेय



जयश्री पोकळे

-| संयोजिका |-



सुनैना शर्मा

-| कला निर्देशक एवं मुखपृष्ठ रचना |-



मनोज गोपीनाथ

-| वेब संस्करण |-



शशांक कुमार

पत्रिका हेतु लेख/ सुझाव

ई-मेल: sudha-pune@cdac.in

राजभाषा अनुभाग

प्रगत संगणन विकास केंद्र (सी-डैक)

पंचवटी, पाषाण, पुणे - 411008 महाराष्ट्र (भारत)

मुखपृष्ठ संकल्पना

हिंदी भाषा और

देवनागरी लिपि का विकास

मौलिकता, बौद्धिक संपदा एवं प्रकाशन नीति

राजभाषा वार्षिक हिंदी पत्रिका का प्रकाशन कार्यालय में हिंदी के प्रगामी प्रयोग को प्रोत्साहित करने का एक सशक्त माध्यम है। इसका उद्देश्य अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी में मौलिक लेखन के लिए प्रेरित करना, उनकी हिंदी लेखन क्षमता का विकास करना तथा हिंदी के प्रति रुचि, सृजनात्मकता और स्वस्थ साहित्यिक वातावरण का निर्माण करना है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए यह अपेक्षा की जाती है कि पत्रिका में प्रकाशित अधिकतम सामग्री मौलिक, सहज, सरल एवं प्रवाहमयी हिंदी में हो, जिससे कर्मचारियों की रचनात्मक प्रतिभा को अभिव्यक्ति का अवसर प्राप्त हो। साथ ही, मौलिक एवं स्व-लेखन को प्रोत्साहित करने के लिए ही पत्रिका में प्रकाशित लेखों/रचनाओं/कृतियों के लिए प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किए जाने का भी प्रावधान किया जाता है, जिससे कर्मचारियों में हिंदी लेखन के प्रति उत्साह और गुणवत्तापूर्ण सृजन की भावना विकसित हो।

पत्रिका हेतु प्रेषित प्रत्येक रचना लेखक/लेखिका की मौलिक, स्वलिखित एवं अप्रकाशित कृति होनी चाहिए । रचना में प्रयुक्त तथ्य, उद्धरण, चित्र, आँकड़े एवं अन्य स्रोतों का यथोचित संदर्भ देना तथा कॉपीराइट, बौद्धिक संपदा अधिकारों एवं अकादमिक/साहित्यिक नैतिक मानकों का पालन करना लेखक/लेखिका का दायित्व होगा।

किसी अन्य स्रोत से प्राप्त सामग्री अथवा कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) एवं अन्य डिजिटल टूलों से पूर्णतः अथवा आंशिक रूप से सृजित सामग्री को स्वयं की मौलिक रचना के रूप में प्रस्तुत करना निषिद्ध है।

साहित्यिक चोरी (Plagiarism), अनधिकृत स्रोतों के उपयोग, तथ्यात्मक मिथ्याकरण, संदर्भों के अनुचित प्रस्तुतीकरण अथवा बौद्धिक संपदा अधिकारों के उल्लंघन की स्थिति में संपादक मंडल के पास बिना पूर्व सूचना दिए संबंधित रचना को अस्वीकृत अथवा निरस्त करने का अधिकार सुरक्षित रहेगा। ऐसे किसी भी उल्लंघन से उत्पन्न किसी भी स्थिति का उत्तरदायित्व संबंधित लेखक/लेखिका का ही होगा।

पत्रिका में प्रकाशित प्रत्येक लेख, रचना अथवा अभिव्यक्ति में व्यक्त विचार, मत, तथ्य एवं निष्कर्ष संबंधित लेखक/लेखिका के व्यक्तिगत हैं। उनमें प्रयुक्त भाषा, शब्दावली, तथ्यों की प्रामाणिकता तथा व्यक्त विचारों के लिए संबंधित लेखक/लेखिका स्वयं पूर्णतः उत्तरदायी होंगे। इन विचारों को संस्था, पत्रिका अथवा संपादक मंडल का आधिकारिक मत या दृष्टिकोण नहीं माना जाएगा।

अनुक्रमणिका

1. तकनीकी लेख संकलन

क्या एआई मनुष्यों की जगह लेगा या उन्हें नए रूप में परिभाषित करेगा - नेहा गुप्ता 1

श्रुतलेखन-एडवांस - महेश भार्गव 4

क्वांटम संगणना : एक अन्वेषण - दीक्षा कुशवाह 6

डिजिटल युग में वेबसाइट स्थानीयकरण (Localization) का महत्व - सविता सोलंके 10

प्रोटोटाइप फास्ट ब्रीडर रिएक्टर - भारत की परमाणु छलांग! - अमित गुप्ता 13

संवादात्मक रोबोटिक्स : एक संक्षिप्त परिचय - डॉ. अनामिका कुमारी 16

2. साहित्य यात्रा

'मधुशाला' काव्य रचना की समीक्षा - जयश्री पोकळे 20

कठिन समय में भी दृढ़ता सिखाती है - रमेश घोलप की किताब "इथे थांबणे नाही..." - डॉ. धनंजय झालटे 22

The Birhors : A Little known Jungle Tribe of Chota Nagpur **पुस्तक की समीक्षा** - डॉ. शिल्पा 24

3. भाषा विमर्श

मशीनी अनुवाद में पुनरुक्ति शब्दों की समस्या (गूगल और बिंग ट्रांसलेटर के संदर्भ में) - डॉ. शिल्पा 26

4. यात्रा संस्मरण

केरल यात्रा - देवेन्द्र कुमार 29

ब्रज धाम की पावन यात्रा - मनीष कुमार गुप्ता 32

भीमाशंकर एक अविस्मरणीय यात्रा - तेजश्री मेहर 38

मुंबई यात्रा - नितीन कराळे 41

5. कविता

कल किसने देखा.... - नीलिमा साहू 46

तुम्हारी है, तुम ही संभालो ये दुनिया - सायली गोडबोले 47

दौड़ती जिंदगी, ठहरते रिश्ते - तेजस विलास मुर्डीव 48

पिता क्या होता है? - राजेश दगडू आबणावे 49

भारत एक लोकतंत्र - शशांक कुमार 50

6. कथा/कहानी

गाँव का चूल्हा - देवेन्द्र कुमार 51

परवरिश - डॉ. अनामिका कुमारी 53

7. चित्रकला

ख्वाब - किशोर पाटिल 58

एलोरा गुफा - प्रशांत खैरनार 59

8. गैर तकनीकी लेख संकलन

'उम्मीद की रन 4.0' में 5 किलोमीटर का सफर - लाइश्रम ऋषिकांत मैतै 60

कट्टनभावी – शिवाजी कागनीकर की बायोगैस विरासत - चंद्रकांत सोनटक्के 62

पत्थरों की अद्भुत दुनिया (विजयनगर साम्राज्य हंपी) - किशोर पाटिल 64

परंपरा से पिक्सेल तक रंग, रूप और नई सोच की यात्रा - काजल किरण 68

आईपी का प्रभाव : रचनात्मकता, व्यापार और समाज में इसकी भूमिका - परिमल खाडे 70

मेरी नई पहचान - अनिता एस 73

सपनों और जिम्मेदारियों के बीच - रेणुका परदेशी 74

9. पारिवारिक स्तंभ

भारतीय कला : हमारी गौरवशाली विरासत - कु. आरना गुप्ता, पुत्री श्री मनीष कुमार गुप्ता 76

पूर्वोत्तर भारत की अद्भुत सैर : असम और मेघालय - कु. पूर्वा गोडबोले, पुत्री सुश्री सायली गोडबोले 79

कैनवास के उस पार - कु. नाइशा कवडीकर, पुत्री सुश्री नेहा गुप्ता 82

घुंघरू की गुंजन - कु. आरना गुप्ता, पुत्री श्री मनीष कुमार गुप्ता 82

शाम का दृश्य - कु. तोमथीन लाइश्रम, पुत्री श्री लाइश्रम ऋषिकांत मैतै 83

तारों की छाँव में - चि. देवोमीत भास्कर, पुत्र सुश्री मौमिता चौधुरी 83

राधा एवं कृष्ण - कु. निष्ठा सैनी, पुत्री श्री करुनेश्वर प्रसाद 84

प्रतीक्षा - कु. हर्षीणि हासलकर, पुत्री सुश्री नूतन हासलकर 84

प्रकृति की सुंदरता - चि. परम तांबे, पुत्र श्री प्रितम तांबे 85

गोजो बनाम काकाशी - मोहम्मद नूह खान, पुत्र डॉ. अतिउर रहमान खान 85

शुभ होली - चि. श्रीअंश विश्वकर्मा, पुत्र श्री शशांक कुमार 86

मेरे घर आए बाल गणेशजी - कु. सिया गोडबोले, पुत्री सुश्री सायली गोडबोले 86

विविधता में एकता - कु. लास्या येनिशेट्टी, पुत्री सुश्री स्वप्ना येनिशेट्टी 87

भारतीय अभिनेत्री - साई पल्लवी - कु. लाइश्रम हेनथोइ चनु, पुत्री श्री लाइश्रम ऋषिकांत मैतै 87

10. प्रतियोगिता परिणाम वर्ष - 2025

88

“किसी देश की शब्द-परंपरा अर्थात् भाषा; कुछ काल तक चलकर जो अर्थ विधान करती है, वही उस देश का साहित्य कहलाता है।”

आचार्य रामचंद्र शुक्ल

तकनीकी लेख संकलन

क्या एआई मनुष्यों की जगह लेगा या उन्हें नए रूप में परिभाषित करेगा



नेहा गुप्ता

जब भी लोग कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) की बात करते हैं, तो वातावरण में एक हल्की सी चिंता महसूस होती है। दफ्तरों के गलियारों से लेकर खाने की मेज तक एक ही सवाल बार-बार उभरता है "क्या एआई हमारी जगह ले लेगा?"

यह एक बहुचर्चित सवाल है, लेकिन शायद सही सवाल नहीं है। एक बेहतर सवाल यह हो सकता है कि जब सोचने, निर्णय लेने और सृजन करने की क्षमता केवल मनुष्यों तक सीमित नहीं रहेगी, तब क्या होगा?

क्या मशीनों के वर्चस्व का ही भय है?

दशकों से तकनीक ने मानव श्रम को बदला है। औद्योगिक क्रांति के दौरान मशीनों ने शारीरिक श्रम का स्थान लिया। कंप्यूटरों ने गणनाओं को स्वचालित किया। सॉफ्टवेयर ने कार्यप्रवाह को सरल बनाया। अब, एआई के साथ रचनात्मक और बौद्धिक कार्य, जो कभी केवल मानव विशेष माने जाते थे, अब बदल रहे हैं।

एआई अब -

- लेख लिख सकता है।
- एआई चित्रों का सृजन कर सकता है।
- डेटा का विश्लेषण कर सकता है।
- सॉफ्टवेयर के लिए कोड लिख सकता है।

स्वाभाविक रूप से इससे यह चिंता उत्पन्न होती है कि अगर एआई सब कुछ कर सकता है, तो मनुष्यों की भूमिका कहाँ रह जाएगी?

वास्तविकता तो यह है कि एआई कार्यों को बदलता है, मनुष्यों को नहीं

नई तकनीकों ने हमेशा हमारे काम करने के तरीके को बदला है और मनुष्य हर बार इसके साथ खुद को ढालते आया है। टेलीफोन, जेरॉक्स मशीन, फैक्स और इंटरनेट इन सभी ने हमारे काम को बदला, लेकिन हमें प्रतिस्थापित नहीं किया। कैलकुलेटर के आने पर भी ऐसा ही डर था कि यह लोगों की गणितीय क्षमता को कम कर देगा। लेकिन हुआ इसका उल्टा, इसने हमें और अधिक जटिल कार्य करने की क्षमता दी। यही बात लैपटॉप और टाइपिंग के साथ भी हुई।

इतिहास इस विषय पर महत्वपूर्ण दृष्टिकोण प्रदान करता है। जब एटीएम आए, तो लोगों को लगा कि बैंक कर्मचारियों की आवश्यकता समाप्त हो जाएगी। इसके बजाय, उनकी भूमिकाएँ बदलीं, जिसके परिणामस्वरूप वे संबंध प्रबंधक, सलाहकार और समस्या समाधानकर्ता बन गए।

एआई हमारे काम करने के तरीके को बदल रहा है और आगे भी बदलता रहेगा, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि मनुष्यों की आवश्यकता समाप्त हो जाएगी। मनुष्य दिशा तय करेंगे और विभिन्न भूमिकाओं में आवश्यक बने रहेंगे।

हालाँकि कुछ उद्यमों में स्थिति अलग हो सकती है। उदाहरण के लिए क्लॉड (Claude) के नए प्लगइन जैसे उपकरण उच्च गुणवत्ता का कंप्यूटर कोड तैयार कर रहे हैं, जिससे कोडिंग के कई कार्य सॉफ्टवेयर को सौंपे जा रहे हैं। क्या इसका यह मतलब है कि हमें मानव प्रोग्रामरों की जरूरत नहीं रहेगी? नहीं, इसका मतलब यह है कि अब हमें अलग तरह के कौशल वाले सॉफ्टवेयर इंजीनियर चाहिए,

जो सुरक्षा मानकों का ध्यान रखें, उत्पाद का परीक्षण करें और नियमों की अनुरूपता सुनिश्चित करें।

कुछ सीमित कार्यों में एआई पूरी तरह स्थान ले सकता है, जैसे कारखानों में वस्तुओं को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाना। लेकिन कॉर्पोरेट और ज्ञान आधारित कार्यों में एआई किसी व्यक्ति की पूरी भूमिका का पूर्ण प्रतिस्थापन नहीं है।

एआई मनुष्य को नहीं बल्कि विशेष कार्यों को प्रतिस्थापित करता है, जैसे -

- दोहराव वाले कार्य स्वचालित हो जाएँगे।
- डेटा-आधारित विश्लेषण और भी तेजी से होंगे।
- नियमित निर्णय अधिक अनुकूलित हो जाएँगे।

एआई पुनर्परिभाषा है, प्रतिस्थापन नहीं

एआई मानव प्रासंगिकता का अंत नहीं, बल्कि उसका पुनर्परिभाषण है।

एआई को एक शक्तिशाली सहयोगी के रूप में देखा जाए, तो -

- एक लेखक प्रारूप के लिए एआई का उपयोग करता है, लेकिन उसमें अर्थ और शैली जोड़ता है।
- एक डॉक्टर निदान में एआई की मदद लेता है, लेकिन अंतिम निर्णय स्वयं करता है।
- एक डिजाइनर एआई से विचार लेता है, लेकिन परिकल्पना को अंतिम आकार वही देता है।

हर स्थिति में एआई मानव क्षमता को बढ़ाता है, उसे समाप्त नहीं करता।

जोखिम क्या हो सकता है? शायद अपनी मानवीयता खो देना।

वास्तविक खतरा केवल नौकरी खोना नहीं है। बड़ा जोखिम यह है कि एआई पर अत्यधिक निर्भर होना, आलोचनात्मक सोच में कमी आना और मौलिकता का ह्रास होना आदि।

यदि मनुष्य सवाल पूछना, कल्पना करना और स्वतंत्र रूप से सृजन करना बंद कर दे, तो एआई हमें प्रतिस्थापित नहीं करेगा, बल्कि हम स्वयं को धीरे-धीरे प्रतिस्थापित कर देंगे।

आज के समय में कौशल विकास और पुनः कौशल (upskilling and reskilling) अत्यंत महत्वपूर्ण हो गए हैं। एक आम कहावत है कि "एआई आपकी नौकरी नहीं लेगा, लेकिन जो व्यक्ति एआई जानता है, वह ले सकता है।"

विडंबना यह है कि एआई हमें कम नहीं, बल्कि अधिक मानवीय बनने के लिए प्रेरित कर सकता है। जैसे-जैसे मशीनें तर्क और दक्षता संभालती हैं, वैसे-वैसे मानव मूल्य निम्न क्षेत्रों की ओर स्थानांतरित होंगे। जैसे -

- सहानुभूति
- कहानी कहने की कला
- नैतिकता
- नवाचार
- उद्देश्यपूर्ण सोच
- निर्णय क्षमता
- संदर्भ के साथ रचनात्मकता
- भावनात्मक बुद्धिमत्ता
- नैतिक सोच

बुद्धिमान मशीनों से भरी दुनिया में मानवीय गहराई ही सबसे दुर्लभ और मूल्यवान होगी।

तो, क्या एआई मनुष्यों की जगह लेगा?

हम अभी भी एआई के ऐसे चरण में हैं, जहाँ मानव निर्णय आवश्यक है, यह सुनिश्चित करने के लिए कि हम सही

दिशा में हैं और एआई की त्रुटियों से बच सकें। हालाँकि, कुछ संगठन बिना दीर्घकालिक प्रभाव को समझे, मनुष्यों की जगह एआई को अपना रहे हैं, जो कि चिंता का विषय है।

वास्तव में एआई हमारे काम करने के तरीके को बदलेगा, हमारे कार्यों को पुनर्परिभाषित करेगा और हमारी पहचान को चुनौती देगा, लेकिन यह मानव उपस्थिति की आवश्यकता को समाप्त नहीं करेगा।

भविष्य मनुष्यों और एआई के बीच प्रतिस्पर्धा का नहीं, बल्कि सहयोग का है। अंततः सफल वे लोग होंगे जो एआई का विरोध नहीं बल्कि उसके साथ काम करने, उसे आकार देने और इस प्रक्रिया में अपनी मानवीयता को बनाए रखना सीखेंगे।

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिनु निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिए को सूल॥"

भारतेन्दु हरिश्चंद्र

श्रुतलेखन-एडवांस

एआई आधारित भारतीय भाषाओं के लिए विकसित अत्याधुनिक वाक् पहचान (Speech Recognition) तकनीक



महेश भार्गव

आज के डिजिटल युग में कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित तकनीकें हमारे कार्य करने के तरीके को तेजी से बदल रही हैं। विशेष रूप से वाक् पहचान (Speech Recognition) तकनीक ने कंप्यूटर और मानव के बीच संवाद को सरल बना दिया है। इसी दिशा में सी-डैक, पुणे के बहुभाषी प्रौद्योगिकी समूह द्वारा विकसित श्रुतलेखन-एडवांस एक अत्याधुनिक सॉफ्टवेयर है, जो बोले गए शब्दों को स्वचालित रूप से लिखित पाठ में परिवर्तित करता है।

यह सॉफ्टवेयर विशेष रूप से भारतीय भाषाओं को ध्यान में रखकर विकसित किया गया है, जिससे हिंदी सहित अन्य नौ (कन्नड़, तेलुगु, मराठी, बंगाली, तमिल, भोजपुरी, गुजराती, संस्कृत और ओड़िया) भाषाओं में आसानी से बोलकर टाइप किया जा सकता है। यह डिजिटल इंडिया के लक्ष्य को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

श्रुतलेखन-एडवांस

श्रुतलेखन-एडवांस एक एआई आधारित वाक् पहचान प्रणाली है, जो उपयोगकर्ता द्वारा बोले गए शब्दों को तत्काल (Real-Time) पाठ में बदल देती है।

यह प्रणाली डीप लर्निंग आधारित एंड-टू-एंड मॉडल का उपयोग करती है, जो ऑडियो इनपुट को सीधे लिखित पाठ में परिवर्तित करती है। सरल शब्दों में कहा जाए तो जो हम बोलते हैं, वही कंप्यूटर स्क्रीन पर स्वतः लिख जाता है। यह तकनीक उन लोगों के लिए अत्यंत उपयोगी है, जिन्हें तेजी से दस्तावेज तैयार करने होते हैं या जो टाइपिंग में अधिक समय लगाते हैं।

मुख्य विशेषताएँ

- तत्काल (Real-Time) वाक् से पाठ
- उच्च सटीकता (High Accuracy)
- वाक् आदेश (Voice command) द्वारा विराम चिह्न, संख्या, तिथि, मुद्रा, पाठ प्रारूपण
- ऑडियो फाइल का लिप्यंकन (Transcription)
- एपीआई आधारित संयोजन (Integration)
- वेब एवं ऑन-प्रिमाइस डिप्लॉयमेंट विकल्प

https://shrutlekhanasr.rb-aai.in/asr/

https://cdac.in/index.aspx?id=product_details&productId=ShrutlekhanAdvance

तकनीक

श्रुतलेखन-एडवांस एक उन्नत वाक् पहचान प्रणाली है, जिसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन अधिगम तथा डीप लर्निंग आधारित वाक् संसाधन (speech processing) तकनीकों पर विकसित किया गया है। यह प्रणाली बड़े एवं विविध स्पीच डेटासेट पर प्रशिक्षित होकर वास्तविक परिस्थितियों में भी उच्च सटीकता प्रदान करती है।

मुख्य तकनीकी घटक निम्नानुसार हैं:

वाक् कॉर्पस का विकास (Speech Corpus Development)

भारतीय भाषाओं की विविधता को ध्यान में रखते हुए विभिन्न क्षेत्रों, आयु वर्ग तथा उच्चारण करने वाले वक्ताओं की आवाज का व्यापक संग्रह किया गया है। इस डेटा में पुरुष एवं महिलाओं की आवाज, भिन्न ध्वनि परिस्थितियाँ (शोरयुक्त वातावरण), सामान्य वार्तालाप, भाषण तथा औपचारिक संवाद शामिल हैं। यह समृद्ध स्पीच कॉर्पस एआई मॉडल को वास्तविक उपयोग परिदृश्यों के अनुरूप प्रशिक्षित करने में सहायक है।

डीप लर्निंग मॉडल - कॉनफॉर्मर आर्किटेक्चर (End-to-End model)

प्रणाली में आधुनिक एंड-टू-एंड कॉनफॉर्मर आर्किटेक्चर (एन्कोडर-डिकोडर तंत्र) का उपयोग किया गया है, जो ऑडियो सिग्नल को प्रोसेस कर ध्वनि पैटर्न की पहचान करता है तथा उन्हें शब्दों एवं वाक्यों में परिवर्तित करता है। यह आर्किटेक्चर जटिल उच्चारण तथा शोरयुक्त वातावरण में भी प्रभावी प्रदर्शन सुनिश्चित करता है।

उपयोगिता एवं लाभ

सरकारी बैठकों, प्रशासनिक कार्यवाही एवं आधिकारिक दस्तावेजों का त्वरित लिप्यंकन (Transcription)

- शिक्षा क्षेत्र में व्याख्यान एवं अध्ययन सामग्री का स्वचालित दस्तावेजीकरण
- स्वास्थ्य सेवाओं में मेडिकल डिक्टेशन एवं क्लिनिकल नोट्स तैयार करने में सहायक
- मीडिया एवं पत्रकारिता में साक्षात्कार लिप्यंकन तथा उपशीर्षक (subtitle) निर्माण
- अनुसंधान कार्यों हेतु भाषाई डेटा का डिजिटल रूपांतरण
- उद्योग एवं संगठनों में बैठक का कार्यवृत्त एवं वॉइस आधारित दस्तावेज तैयार करना
- मैनुअल टाइपिंग के समय एवं श्रम में उल्लेखनीय कमी
- कार्य दक्षता एवं दस्तावेजीकरण की गति में वृद्धि
- ऑडियो सामग्री को खोजने योग्य पाठ आर्काइव में परिवर्तित करने की सुविधा
- डिजिटल रूपांतर (Digital Transformation) को बढ़ावा

भविष्य की दिशा

श्रुतलेखन-एडवांस वर्तमान में दस भारतीय भाषाओं में उपलब्ध है तथा भविष्य में इसे भारत की कुल बाईस भाषाओं तक विस्तारित करने हेतु कार्य प्रगति पर है। इसके साथ ही, इस प्रणाली का उद्देश्य विभिन्न बोलियों का समर्थन करना, कम संसाधन वाली भाषाओं के लिए सटीकता बढ़ाना तथा वाक्, पाठ एवं दस्तावेज विश्लेषण (Document Analytics) जैसी मल्टीमॉडल कृत्रिम बुद्धिमत्ता क्षमताओं को शामिल करना है। भविष्य में वास्तविक समय में बहुभाषी लिप्यंकन (Multilingual Transcription) एवं बड़े स्तर पर तैनाती की दिशा में भी कार्य किया जाएगा।

श्रुतलेखन-एडवांस भारतीय भाषाओं के लिए स्वदेशी एआई तकनीक विकसित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह प्रणाली सटीक एवं तेज वाक् से पाठ (speech-to-text) रूपांतरण प्रदान कर विभिन्न क्षेत्रों में दस्तावेजीकरण, सूचना उपलब्धता एवं ज्ञान प्रबंधन को सशक्त बनाती है।



क्वांटम संगणना : एक अन्वेषण



दीक्षा कुशवाह

"प्रकृति शास्त्रीय नहीं है... और यदि आप प्रकृति का अनुकरण (सिमुलेशन) करना चाहते हैं, तो आपको उसे क्वांटम यांत्रिकी के आधार पर ही करना होगा।"

- रिचर्ड फाइनमैन, नोबेल पुरस्कार विजेता भौतिकशास्त्री (1981)

चार दशक पूर्व जब प्रसिद्ध भौतिकशास्त्री रिचर्ड फाइनमैन ने यह विचार रखा कि अणुओं और परमाणुओं के व्यवहार को समझने के लिए हमें एक ऐसे कंप्यूटर की आवश्यकता होगी जो स्वयं क्वांटम यांत्रिकी के नियमों पर कार्य करे, तब अधिकांश वैज्ञानिकों ने इसे एक सैद्धांतिक कल्पना माना। आज वर्ष 2026 में, क्वांटम कंप्यूटिंग एक कल्पना नहीं बल्कि एक वास्तविकता बन चुकी है, भले ही अभी यह अपनी प्रारंभिक अवस्था में है।

लेकिन यह 'क्वांटम' है क्या? यह क्लासिकल कंप्यूटर से भिन्न कैसे है? और इसका भारत तथा हमारे दैनिक जीवन पर क्या प्रभाव पड़ सकता है?

1. क्लासिकल कंप्यूटिंग की सीमाएँ

आज के सभी कंप्यूटर चाहे वे मोबाइल फोन हों, लैपटॉप हों या विश्व के सबसे शक्तिशाली सुपरकंप्यूटर; सभी क्लासिकल कंप्यूटिंग के सिद्धांत पर कार्य करते हैं। इनकी मूलभूत इकाई बिट है, जो किसी भी समय केवल दो अवस्थाओं में से एक में हो सकती है - 0 या 1।

पिछले कई दशकों में मूर के नियम के अनुसार हर दो वर्षों में एक चिप पर ट्रांजिस्टरों की संख्या लगभग दोगुनी होती रही, ट्रांजिस्टर छोटे होते गए और हर चिप की संगणन क्षमता बढ़ती गई। परंतु अब हम उस भौतिक सीमा के निकट हैं, जहाँ ट्रांजिस्टर का आकार कुछ ही परमाणुओं जितना रह जाता है। ऐसी स्थिति में क्वांटम प्रभाव, जैसे इलेक्ट्रॉनों का अनियंत्रित टनलिंग, स्वतः उत्पन्न होने लगते हैं और चिप अपेक्षित रूप से कार्य नहीं कर पाती।

लेकिन हार्डवेयर की इस सीमा से भी अधिक मूलभूत बात यह है कि कई गणितीय एवं वैज्ञानिक समस्याएँ ऐसी हैं, जिनमें संभावनाओं की संख्या इनपुट के आकार के साथ घातांकीय रूप से बढ़ती है। उदाहरण के लिए यदि 100 अणुओं की एक प्रणाली के संभावित विन्यासों की गणना करनी हो, तो क्लासिकल कंप्यूटर को लगभग 2^{100} अवस्थाओं का परीक्षण करना होगा, यह संख्या ज्ञात ब्रह्मांड में उपस्थित परमाणुओं की कुल संख्या से भी अधिक है। ऐसी समस्याओं के लिए क्लासिकल कंप्यूटर चाहे कितना भी तीव्र हो, व्यावहारिक रूप से अपर्याप्त है। यही वह बिंदु है जहाँ क्वांटम कंप्यूटिंग एक मूलभूत परिवर्तन (fundamental change) का प्रस्ताव करती है।

2. क्वांटम कंप्यूटिंग के मूलभूत सिद्धांत

क्वांटम कंप्यूटर क्वांटम यांत्रिकी के कुछ मूल सिद्धांतों, सुपरपोजीशन, एंटैंगलमेंट और क्वांटम व्यतिकरण का उपयोग करके गणना करता है। इन अवधारणाओं की एक विशेषता यह है कि जितना गहराई में जाएँ, उतनी नई परतें खुलती जाती हैं। मेरे लिए सबसे उपयोगी निष्कर्ष यह रहा कि इनकी 'जटिलता'(complexity) अक्सर प्रकृति की नहीं, बल्कि हमारे क्लासिकल अंतर्ज्ञान की सीमा है और यही कारण है कि क्वांटम कंप्यूटिंग को समझने के लिए हमें कुछ नई भाषा और नए मानसिक मॉडल अपनाने पड़ते हैं।

जिस तरह मैं इसे समझती हूँ - जल तापमान के अनुसार ठोस, द्रव और गैस तीनों रूपों में प्रकट होता है। यदि किसी प्रेक्षक को तापमान की अवधारणा का ज्ञान न हो और वह केवल जल का बदलता व्यवहार देखेगा, तो उसे यह अत्यंत

विचित्र प्रतीत होगा। वही पदार्थ कभी ठोस, कभी बहता हुआ, कभी अदृश्य रूप में होगा। परंतु तापमान को समझते ही यह सारी जटिलता एक सुसंगत भौतिक नियम बन जाती है। क्वांटम यांत्रिकी के साथ भी कुछ ऐसा ही है, हम क्लासिकल दृष्टिकोण से क्वांटम व्यवहार को देखते हैं, इसलिए वह हमें अजीब लगता है। वस्तुतः, सुपरपोजीशन, एंटैंगलमेंट और क्वांटम व्यतिकरण कोई विशेष अपवाद नहीं, बल्कि सूक्ष्म जगत का एक मूलभूत गुण है। आइए इन तीन मूल सिद्धांतों को अधिक गहराई से समझते हैं:

(क) सुपरपोजीशन - एक साथ अनेक अवस्थाओं में होना

क्लासिकल बिट किसी भी समय या तो 0 है या 1। परंतु क्यूबिट एक ही समय में 0 और 1 दोनों अवस्थाओं के संयोजन में हो सकता है। गणितीय रूप में:

$$|\psi\rangle = \alpha|0\rangle + \beta|1\rangle$$

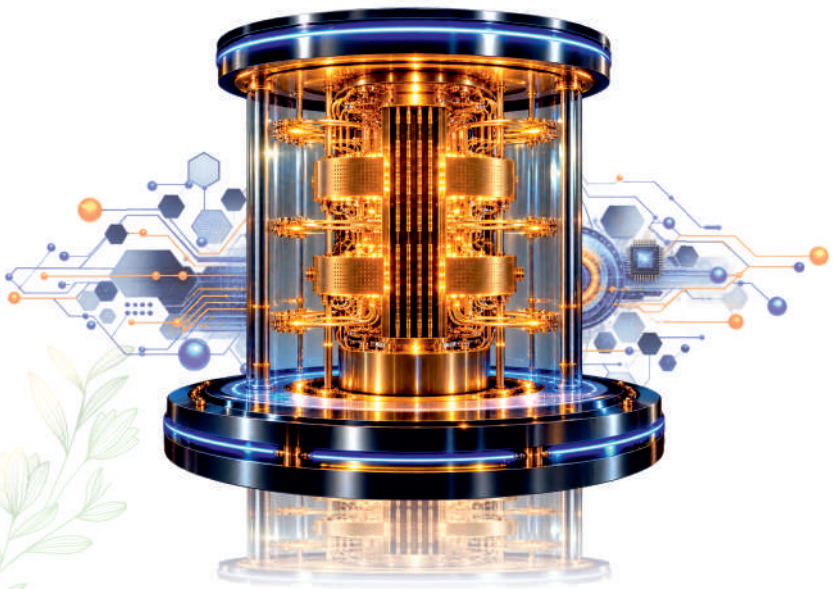
जहाँ α और β सम्मिश्र संख्याएँ (Complex Numbers) हैं और $|\alpha|^2 + |\beta|^2 = 1$ है।

इसे एक सरल उपमा से समझें: एक क्लासिकल बिट किसी स्विच की भाँति है या तो चालू (1) या बंद (0)। परंतु एक क्यूबिट एक पृथ्वी के ग्लोब की तरह है, जहाँ उत्तरी ध्रुव 0 और दक्षिणी ध्रुव 1 है, किंतु क्यूबिट की अवस्था ग्लोब की सतह पर कहीं भी हो सकती है। इस प्रकार, एक क्यूबिट अत्यंत सूक्ष्म तरीके से 0 और 1 के विभिन्न अनुपातों को एक साथ धारण कर सकता है।

इसका व्यावहारिक अर्थ यह है कि जहाँ n क्लासिकल बिट किसी एक समय में केवल एक विन्यास को दर्शा सकते हैं, वहीं n क्यूबिट एक साथ 2^n विन्यासों का सुपरपोजीशन धारण कर सकते हैं। मात्र 300 क्यूबिट 2^{300} अवस्थाओं को एक साथ व्यक्त कर सकते हैं।

(ख) एंटैंगलमेंट - क्वांटम उलझाव

जब दो या अधिक क्यूबिट विशेष क्वांटम संक्रियाओं द्वारा उलझा दिए जाते हैं, तो उनकी अवस्थाएँ परस्पर जुड़ जाती हैं, इस प्रकार कि एक क्यूबिट को मापने से दूसरे की अवस्था तुरंत निर्धारित हो जाती है, चाहे दोनों के बीच कितनी भी दूरी हो।



यह कोई सूचना का संप्रेषण नहीं है (अतः यह आइंस्टीन के विशेष सापेक्षता सिद्धांत का उल्लंघन नहीं करता), बल्कि यह एक सहसंबंध है, जो क्लासिकल भौतिकी में संभव नहीं है। एंटैंगलमेंट क्वांटम कंप्यूटिंग को अपनी वास्तविक शक्ति प्रदान करता है, क्योंकि इसके बिना एक साथ अनेक क्यूबिट पर समन्वित संक्रियाएँ संभव नहीं हैं।

(ग) क्वांटम व्यतिकरण (Quantum Interference)

यह सिद्धांत प्रकाश या ध्वनि तरंगों के व्यतिकरण के सदृश है। क्वांटम कंप्यूटिंग में सही उत्तरों की प्रायिकता को बढ़ाने और गलत उत्तरों की प्रायिकता को घटाने के लिए व्यतिकरण का उपयोग किया जाता है। जब दो तरंगें एक ही दिशा में हों, तो वे रचनात्मक व्यतिकरण (Constructive Interference) करती हैं और प्रबल होती हैं; जब विपरीत दिशा में हों, तो विनाशकारी व्यतिकरण (Destructive Interference) करती हैं और निरस्त हो जाती हैं।

एक सफल क्वांटम एल्गोरिथ्म वह है जो इन तीनों सिद्धांतों का समन्वित उपयोग करके सही उत्तर तक न्यूनतम चरणों में पहुँचता है।

3. क्वांटम गेट और परिपथ (Quantum Circuits) : यूनिटरी विकास

पारंपरिक लॉजिक गेट (AND/OR/NOT) के समान, क्वांटम संगणना में क्वांटम गेट्स होते हैं, जिनका गणितीय स्वरूप यूनिटरी मैट्रिक्स है। यूनिटरी विकास का अर्थ है कि क्वांटम अवस्था की कुल प्रायिकता संरक्षित रहती है।

कुछ सामान्य गेट - Pauli-X (क्लासिकल NOT जैसा), Hadamard (सुपरपोजीशन उत्पन्न करने हेतु अत्यंत उपयोगी), CNOT (एंटैंगलमेंट बनाने हेतु प्रमुख द्वि-क्यूबिट गेट) हैं।

क्वांटम एल्गोरिथ्म सामान्यतः एक क्वांटम परिपथ के रूप में परिभाषित होता है: प्रारंभिक अवस्था →गेट्स का अनुक्रम → मापन।

4. क्वांटम एल्गोरिथ्म : सैद्धांतिक शक्ति का प्रमाण

क्वांटम कंप्यूटिंग की वास्तविक शक्ति को समझने के लिए दो ऐतिहासिक एल्गोरिथ्म का उल्लेख अत्यंत आवश्यक है:

शोर का एल्गोरिथ्म (Shor's Algorithm, 1994) : गणितज्ञ पीटर शोर ने सिद्ध किया कि एक पर्याप्त रूप से बड़ा क्वांटम कंप्यूटर किसी भी बड़ी संख्या का अभाज्य गुणनखंडन (Prime Factorization) बहुपदीय समय (Polynomial Time) में कर सकता है। आज की अधिकांश इंटरनेट सुरक्षा और आरएसए एन्क्रिप्शन इसी धारणा पर आधारित है कि बड़ी संख्याओं का गुणनखंडन क्लासिकल कंप्यूटरों के लिए व्यावहारिक रूप से असंभव है। शोर के एल्गोरिथ्म ने इस धारणा को सैद्धांतिक रूप से चुनौती दे दी।

ग्रोवर का एल्गोरिथ्म (Grover's Algorithm, 1996) : लव ग्रोवर ने दिखाया कि एक अव्यवस्थित डेटाबेस में खोज करने के लिए जहाँ क्लासिकल कंप्यूटर को N चरण लगते हैं, वहीं क्वांटम कंप्यूटर मात्र $\sqrt{N}$ चरणों में उत्तर खोज सकता है। यह वर्गमूलीय गति-वृद्धि (Quadratic Speedup) है। सुनने में यह मामूली लग सकता है, परंतु जब N एक ट्रिलियन (10^{12}) हो, तो क्लासिकल कंप्यूटर को 10^{12} चरण लगेंगे, जबकि क्वांटम कंप्यूटर को मात्र 10^{6}, यह अंतर अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसे आसान भाषा में समझने के लिए कहा जा सकता है कि यदि एक चरण (step) को पूरा करने में एक सेकंड का समय लगे, तो एक क्लासिकल कंप्यूटर को उस गणना को पूरा करने में 31,700 वर्ष लगेंगे, जबकि एक क्वांटम कंप्यूटर इसे मात्र 11.5 दिनों में कर लेगा। यही कारण है कि यह अंतर 'अत्यंत महत्वपूर्ण' और क्रांतिकारी माना जाता है।

5. क्यूबिट कैसे बनाए जाते हैं?

क्यूबिट बनाने की अनेक प्रौद्योगिकियाँ विकसित हो रही हैं, जिनमें प्रमुख हैं -

प्रौद्योगिकी	विवरण
अतिचालक क्यूबिट (Superconducting)	अत्यंत निम्न तापमान (~15 मिलीकेल्विन) पर अतिचालक परिपथों का उपयोग
ट्रैप्ड आयन (Trapped Ion)	विद्युत चुंबकीय क्षेत्र में परमाणु आयनों को बंधित करके
फोटॉनिक (Photonic)	प्रकाश के फोटॉनों को क्यूबिट के रूप में उपयोग
टोपोलॉजिकल (Topological)	एनीऑन (Anyons) पर आधारित, अभी प्रायोगिक चरण में
न्यूट्रल एटम (Neutral Atom)	तटस्थ परमाणुओं को लेजर जाल में बंधित करके

प्रत्येक प्रौद्योगिकी के अपने गुण-दोष हैं और वर्तमान में कोई भी एक प्रौद्योगिकी सर्वश्रेष्ठ सिद्ध नहीं हुई है। यह स्थिति कुछ-कुछ क्लासिकल कंप्यूटिंग के आरंभिक दिनों जैसी है, जब वैक्यूम ट्यूब, रिले और ट्रांजिस्टर के बीच प्रतिस्पर्धा थी।

6. प्रमुख चुनौतियाँ

क्वांटम कंप्यूटिंग के मार्ग में कई गंभीर चुनौतियाँ विद्यमान हैं:

- **डीकोहेरेंस (Decoherence):** क्यूबिट अपने परिवेश से अत्यंत शीघ्र प्रभावित होते हैं। ऊष्मा, विद्युतचुंबकीय विकिरण या कंपन से उनकी क्वांटम अवस्था नष्ट हो जाती है। वर्तमान में अधिकांश क्यूबिट का सुसंगतता समय (Coherence Time) माइक्रोसेकंड से मिलीसेकंड के स्तर पर है।

- **त्रुटि दर (Error Rate):** आज के क्वांटम कंप्यूटरों में प्रत्येक गेट संक्रिया में लगभग 0.1% से 1% त्रुटि होती है। यह क्लासिकल कंप्यूटरों की तुलना में अत्यंत अधिक है (क्लासिकल कंप्यूटरों में त्रुटि दर 10^{-15} या उससे भी कम होती है)।

- **स्केलेबिलिटी (Scalability):** व्यावहारिक रूप से उपयोगी कार्यों के लिए लाखों भौतिक क्यूबिट की आवश्यकता होगी (त्रुटि सुधार के लिए)।

- **क्वांटम त्रुटि सुधार (Quantum Error Correction):** एक दोषरहित तार्किक क्यूबिट (Logical Qubit) बनाने के लिए सैकड़ों या हजारों भौतिक क्यूबिट (Physical Qubits) की आवश्यकता होती है। यह आज की सबसे सक्रिय शोध दिशाओं में से एक है।

7. भारत और क्वांटम कंप्यूटिंग

भारत सरकार ने इस क्षेत्र के सामरिक और वैज्ञानिक महत्व को पहचानते हुए अप्रैल 2023 में राष्ट्रीय क्वांटम मिशन (National Quantum Mission - NQM) को स्वीकृति प्रदान की, जिसके अंतर्गत ₹6,003 करोड़ का प्रावधान 2023-24 से 2030-31 की अवधि के लिए किया गया है। इस मिशन के प्रमुख लक्ष्यों में 50-1000 क्यूबिट वाले क्वांटम कंप्यूटरों का विकास, क्वांटम संचार नेटवर्क की स्थापना तथा क्वांटम सेंसर और क्वांटम सामग्री (Quantum Materials) में अनुसंधान सम्मिलित हैं।

सीडैक सहित अनेक भारतीय संस्थान इस मिशन के अंतर्गत क्वांटम हार्डवेयर, सॉफ्टवेयर, एल्गोरिथ्म, सिमुलेशन एवं अनुप्रयोग विकास के विभिन्न आयामों पर काम कर रहे हैं।

8. भविष्य की दिशा

विशेषज्ञों का मानना है कि क्वांटम कंप्यूटिंग क्लासिकल कंप्यूटिंग का प्रतिस्थापन नहीं, बल्कि पूरक होगी। भविष्य संभवतः हाइब्रिड कंप्यूटिंग (Hybrid Computing) का होगा, जहाँ कुछ कार्य क्लासिकल प्रोसेसरों पर और कुछ विशिष्ट जटिल गणनाएँ क्वांटम प्रोसेसरों पर सम्पन्न की जाएँगी।

जिस प्रकार 1947 में ट्रांजिस्टर के आविष्कार के समय कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था कि एक दिन अरबों ट्रांजिस्टर हमारी जेब में होंगे, उसी प्रकार क्वांटम कंप्यूटिंग की पूर्ण संभावनाएँ भी अभी हमारी कल्पना से परे हो सकती हैं।

क्वांटम कंप्यूटिंग मात्र एक तकनीकी उन्नयन नहीं है, बल्कि यह गणना के बारे में हमारी मूलभूत समझ में परिवर्तन है। यह हमें प्रकृति की उस भाषा में गणना करने का अवसर देती है, जिसमें प्रकृति स्वयं कार्य करती है। इसकी चुनौतियाँ विशाल हैं, परंतु संभावनाएँ उससे भी विशाल हैं। और अंत में, जैसा कि महान भौतिकशास्त्री नील्स बोर ने कहा था:

"यदि क्वांटम यांत्रिकी ने आपको अचंभित नहीं किया है, तो आपने इसे अभी तक समझा नहीं है।"

डिजिटल युग में वेबसाइट स्थानीयकरण (Localization) का महत्व



सविता सोलंके

“अपनी भाषा में व्यक्त विचार सीधे हृदय तक पहुँचते हैं।” **-रामधारी सिंह दिनकर**

“यदि आप किसी व्यक्ति से उस भाषा में बात करते हैं जिसे वह समझता है, तो वह उसके दिमाग तक पहुँचती है। यदि आप उससे उसकी अपनी भाषा में बात करते हैं, तो वह उसके दिल तक पहुँचती है।” **- नेल्सन मंडेला**

“If you talk to a man in a language he understands, that goes to his head. If you talk to him in his own language, that goes to his heart.” **- Nelson Mandela**

आज की तेजी से फैलती डिजिटल दुनिया में वेबसाइटें संगठनों और उपयोगकर्ताओं के बीच प्राथमिक संपर्क सूत्र (इंटरफेस) के रूप में कार्य करती हैं। हालांकि, अब "एक-भाषा-सबके-लिए" वाला दृष्टिकोण कारगर नहीं रह गया है, विशेष रूप से भारत जैसे भाषाई विविधता वाले देश में। वेबसाइट स्थानीयकरण (Localization) एक महत्वपूर्ण रणनीति के रूप में उभरा है, जो यह सुनिश्चित करता है कि डिजिटल प्लेटफॉर्म विभिन्न क्षेत्रों और संस्कृतियों के उपयोगकर्ताओं के लिए सुलभ, उपयोगी और सार्थक हो।

वेबसाइट स्थानीयकरण केवल अनुवाद मात्र नहीं है - इसमें लक्षित दर्शकों की भाषाई, सांस्कृतिक और तकनीकी अपेक्षाओं के अनुरूप सामग्री, डिजाइन, कार्यक्षमता और उपयोगकर्ता अनुभव (UX) को ढालना शामिल है।

व्यापक पहुँच और समावेशन

स्थानीयकरण वेबसाइटों को व्यापक दर्शकों तक पहुँचने में सक्षम बनाता है, विशेष रूप से उन उपयोगकर्ताओं तक जो अंग्रेजी नहीं बोलते। भारत में, जहाँ सैकड़ों भाषाएँ बोली जाती हैं, इंटरनेट उपयोगकर्ताओं का एक बड़ा वर्ग अपनी मातृभाषा में सामग्री देखना पसंद करता है।

बहुभाषी सहायता प्रदान करके संगठन निम्नलिखित लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं:

- ग्रामीण और अर्ध-शहरी आबादी तक पहुँच।
- पहली बार इंटरनेट का उपयोग करने वालों के लिए सुलभता में सुधार।
- समावेशी डिजिटल विकास का समर्थन।

उपयोगकर्ता सहभागिता और रूपांतरण (Conversion)

स्थानीयकरण का उपयोगकर्ता के व्यवहार पर सीधा प्रभाव पड़ता है। अध्ययन बताते हैं कि जब सामग्री उपयोगकर्ता की मातृभाषा में प्रस्तुत की जाती है, तो उनके द्वारा कार्रवाई करने (जैसे पंजीकरण, खरीदारी या सदस्यता लेना) की संभावना कहीं अधिक होती है।

मुख्य लाभों में शामिल हैं:

- उच्च उपयोगकर्ता सहभागिता (User Engagement)
- बढ़ी हुई रूपांतरण दर (Conversion Rates)
- बाउंस रेट (Bounce Rate) में कमी

एक स्थानीय इंटरफेस विश्वास पैदा करता है, जिससे उपयोगकर्ता डिजिटल प्लेटफॉर्म के साथ बातचीत करने में अधिक सहज महसूस करते हैं।

विश्वास और सांस्कृतिक जुड़ाव बनाना

डिजिटल संवाद में विश्वास एक महत्वपूर्ण कारक है। जब कोई वेबसाइट उपयोगकर्ता की अपनी भाषा में होती है, तो यह उनकी संस्कृति और पहचान के प्रति सम्मान प्रदर्शित करती है।

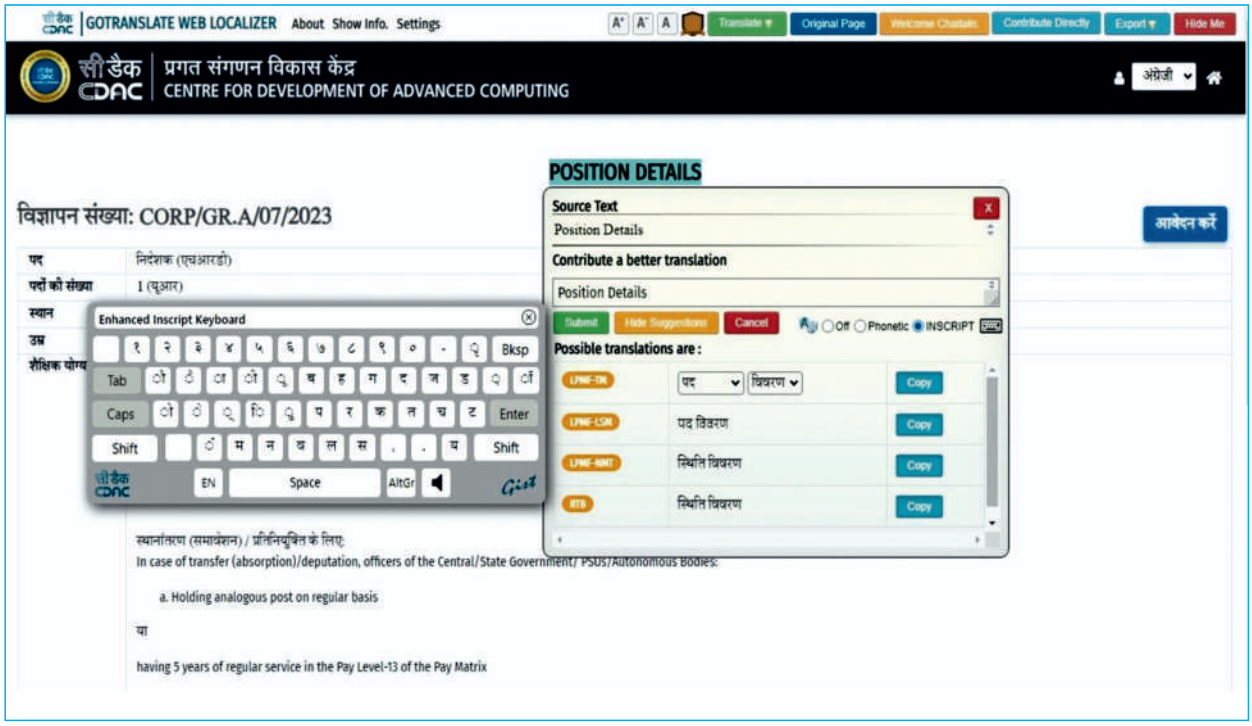
"लोग भूल जाएँगे कि आपने क्या कहा, लेकिन वे कभी नहीं भूलेंगे कि आपने उन्हें कैसा महसूस कराया।" - **माया एंजेलो**

स्थानीयकरण निम्नलिखित में मदद करता है:

- भावनात्मक जुड़ाव
- ब्रांड की विश्वसनीयता
- दीर्घकालिक उपयोगकर्ता निष्ठा (Loyalty)

गोट्रांसलेट फ्रेमवर्क (GoTranslate Framework)

निरपेक्ष वेबसाइट स्थानीयकरण फ्रेमवर्क है। इसे मूल वेबसाइट के सोर्स कोड में किसी भी प्रकार का बदलाव किए बिना, डिजिटल सामग्री को कई भारतीय भाषाओं में सुलभ बनाने के लिए डिजाइन किया गया है। यह ब्राउजर प्लगइन या स्निपिट के माध्यम से वेब पृष्ठों के डाइनैमिक और रीयल-टाइम अनुवाद की सुविधा देता है, जिससे संगठन मौजूदा वेबसाइटों का तेजी से स्थानीयकरण कर सकते हैं। वेबसाइट में एक कॉम्बोबॉक्स और लिंक आती है। जिसमें भाषा चुनने की सुविधा होती है। यूजर द्वारा भाषा का चुनाव होते ही वेबपेज उस भाषा में परिवर्तित हो जाता है। इसके अतिरिक्त, इस फ्रेमवर्क में हिंदी भाषा की वेबसाइट को डिफॉल्ट रूप से सेट करने का भी विकल्प उपलब्ध है। यह फ्रेमवर्क मशीनी अनुवाद, ट्रांसलेशन मेमोरी और एक केंद्रीय अनुवाद भंडार को एकीकृत करता है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि पहले से सत्यापित अनुवादों का उपयोग विभिन्न वेबसाइटों पर स्वचालित रूप से पुनः किया जा सके। यह अनुवाद के समय को काफी कम



गोट्रांसलेट एक ऑनलाइन अनुवाद फ्रेमवर्क है, जो वेबसाइट्स का डायनामिक "ऑन-द-फ्लाई" अनुवाद करने की सुविधा प्रदान करता है। इसका उपयोग विभिन्न सरकारी पोर्टलों (जैसे, cdac.in) द्वारा नागरिकों तक उनकी पसंदीदा स्थानीय भाषाओं में जानकारी पहुँचाने के लिए किया जाता है। गोट्रांसलेट फ्रेमवर्क एक भाषा-करता है, निरंतर सुधार करता है और स्थानीयकरण की कुल लागत को न्यूनतम करता है।

गोट्रांसलेट फ्रेमवर्क की एक प्रमुख विशेषता इसका सहयोगात्मक अनुवाद पारिस्थितिकी तंत्र है। यह अनुवादकों, विषय विशेषज्ञों और आम जनता को सभी प्रमुख भारतीय लिपियों के लिए उपलब्ध वर्चुअल कीबोर्ड,

फोनेटिक टाइपिंग समर्थन और उन्नत इनस्क्रिप्ट टाइपिंग सुविधाओं द्वारा समर्थित एक सहज इंटरफेस के माध्यम से अनुवाद में योगदान करने, उसे संपादित करने और सत्यापित करने की अनुमति देता है। साथ ही, यह पाठ प्रारूपण (Text Formatting) का भी पूर्ण समर्थन करता है, जिससे अनुवाद के दौरान सामग्री का लेआउट और उसकी स्टाइलिंग यथावत बनी रहती है। मशीनी अनुवाद शुरुआती सुझाव प्रदान करता है, जबकि मानवीय पोस्ट-एडिटिंग भाषाई सटीकता और संदर्भगत सही होना सुनिश्चित करती है। एक बार स्वीकृत होने के बाद, अनुवादों को एक केंद्रीय भंडार में संग्रहीत किया जाता है, जिससे वे भविष्य की स्थानीयकरण परियोजनाओं में पुनः उपयोग करने योग्य बन जाते हैं तथा प्राकृतिक भाषा संसाधन एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता अनुप्रयोगों के लिए मूल्यवान बहुभाषी संसाधन तैयार होते हैं।

यह फ्रेमवर्क बहुभाषी डिजिटल सेवाएँ प्रदान करने के लिए इच्छुक सरकारी विभागों, सार्वजनिक सेवा पोर्टलों, शैक्षणिक संस्थानों और उद्यमों के लिए महत्वपूर्ण लाभ प्रदान करता है। सोर्स कोड में बदलाव की आवश्यकता को समाप्त करके, ट्रांसलेशन मेमोरी के माध्यम से दोहराए जाने वाले अनुवाद प्रयासों को कम करता है और बहुभाषी सामग्री के केंद्रीकृत प्रबंधन को सक्षम बनाकर गोट्रांसलेट उच्च अनुवाद गुणवत्ता बनाए रखते हुए वेबसाइट स्थानीयकरण को गति प्रदान करता है। इसका स्केलेबल आर्किटेक्चर सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं के लिए उपयुक्त है तथा इसकी सहज एकीकरण (integration) की क्षमता इसे स्थानीयकरण और नागरिकों की अपनी पसंदीदा भाषाओं में ऑनलाइन सेवाओं तक पहुँच बढ़ाने के लिए एक असरदार समाधान बनाती है।



प्रोटोटाइप फास्ट ब्रीडर रिएक्टर - भारत की परमाणु छलांग!



अमित गुप्ता

तमिलनाडु के कलपक्कम में स्थित 500 मेगावाट का स्वदेशी प्रोटोटाइप फास्ट ब्रीडर रिएक्टर (पीएफबीआर) ने 06 अप्रैल 2026 को क्रिटिकैलिटी (स्व-संचालित श्रृंखला प्रतिक्रिया) हासिल कर ली है। यह सामान्य परमाणु रिएक्टर यूरेनियम को ईंधन की तरह उपयोग कर ऊर्जा पैदा करते हैं, लेकिन यह रिएक्टर ऊर्जा पैदा करने के साथ-साथ नया ईंधन भी पैदा करता है। यह जितना ईंधन (प्लूटोनियम-233) खर्च करता है, उससे कहीं ज्यादा नया ईंधन (प्लूटोनियम-239) पैदा करता है।

भारत का परमाणु कार्यक्रम तीन चरणों का है, जिसकी अभिकल्पना एटमी प्रोग्राम के जनक डॉ. होमी जहांगीर भाभा ने की थी। पहला चरण उन रिएक्टरों का है, जो अभी संचालित है। फास्ट ब्रीडर रिएक्टर कलपक्कम भारत के परमाणु कार्यक्रम के दूसरे चरण में एंट्री की मुहर है, जिसका उद्देश्य यूरेनियम के सीमित भंडार के कारण थोरियम का उपयोग करना है। यह मिश्रित ऑक्साइड ईंधन का उपयोग करता है।





इस रिएक्टर को अंततः थोरियम-232 का उपयोग करने के लिए अभिकल्पित किया गया है। रूपांतरण प्रक्रिया के माध्यम से, थोरियम-232 को यूरेनियम-233 में परिवर्तित किया जाएगा, जो भारत के परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम के तीसरे चरण के लिए ईंधन का काम करेगा। रिएक्टर को ठंडा करने के लिए तरल सोडियम का उपयोग किया जाता है। इससे भारत के पास भविष्य के लिए परमाणु ईंधन का अटूट भंडार तैयार हो जाएगा।

ये रिएक्टर स्वदेशी तकनीक से पूर्णतया भारत में भारतीय नाभिकीय विद्युत निगम लिमिटेड (भाविनि) द्वारा अभिकल्पित और निर्मित है। यह तमिलनाडु के कलपक्कम में स्थित भारत सरकार का एक उद्यम है। यह परमाणु ऊर्जा विभाग के प्रशासनिक नियंत्रण में है और फास्ट ब्रीडर रिएक्टरों (एफबीआर) का निर्माण, संचालन और रखरखाव करता है। इसका उद्देश्य भारत के तीसरे चरण के परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम के तहत फास्ट ब्रीडर रिएक्टरों के माध्यम से बिजली उत्पादन करना है। 500 मेगावाट क्षमता वाला यह रिएक्टर भारत के 'नेट जीरो 2070' लक्ष्य को पूरा करने में

मदद करेगा। इससे 24 घंटे बिजली मिलेगी, जो सौर ऊर्जा या पवन ऊर्जा से भी नहीं मिलती।

भारत के पास यूरेनियम की कमी है और हमें इसके लिए रूस, कजाकिस्तान या ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों पर निर्भर रहना पड़ता है। थोरियम रिएक्टर तीसरा चरण है, पीएफबीआर ही वह जरिया है, जो भारत के पास मौजूद दुनिया के सबसे बड़े थोरियम भंडार को भविष्य में बिजली में बदल पाएगा। यह उपलब्धि भारत को रूस के बाद व्यावसायिक स्तर पर फास्ट ब्रीडर रिएक्टर तकनीक (एफबीटीआर) वाला दूसरा देश बनाती है। कलपक्कम पीएफबीआर के चालू होने के बाद, भारत रूस के बाद दुनिया का दूसरा ऐसा देश बन गया है, जिसके पास कॉमर्शियल फास्ट ब्रीडर रिएक्टर है। अमेरिका, फ्रांस और जापान जैसे देश भी भारत से पीछे हैं।

अगर आज की बात करें, तो भारत अपनी कुल बिजली का लगभग 3 फीसदी हिस्सा परमाणु ऊर्जा से बनाता है। ये आंकड़ा करीब 8.8 गीगावाट है। भारत में परमाणु ऊर्जा विभाग के अनुसार, 2026 की शुरुआत तक भारत की स्थापित परमाणु ऊर्जा क्षमता 8,780 मेगावाट है, जो 24 चालू रिएक्टरों द्वारा उत्पन्न की जाती है, जिसमें 100 मेगावाट की आरएपीएस-1 इकाई शामिल नहीं है। वित्तीय वर्ष 2024-25 में हमारे परमाणु बिजलीघरों ने 56,681 मिलियन यूनिट बिजली बनाई। वर्ष 2020-21 (43,029 यूनिट) के मुकाबले इसमें करीब 31% की शानदार बढ़त देखी गई है।

वर्ष 2031-32 तक निर्माणाधीन परियोजनाओं के पूरे होने पर हमारी क्षमता बढ़कर 22,380 मेगावाट (लगभग 22 गीगावाट) हो जाएगी और साल 2047 तक, जब देश आजादी के 100 साल मना रहा होगा, तब सरकार का लक्ष्य 100 गीगावाट परमाणु बिजली पैदा करने का है। इस लक्ष्य को पाने के लिए सरकार ने 'शांति' एक्ट भी लागू किया है, ताकि परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में प्राइवेट सेक्टर की भागीदारी बढ़ सके और काम में तेजी आए।

भारत के पास दुनिया का लगभग 25% थोरियम भंडार है। पीएफबीआर इस थोरियम का उपयोग करने की कुंजी है। पीएफबीआर की सफलता के बिना यह लक्ष्य नामुमकिन था। पीएफबीआर की सफलता भारत की ऊर्जा सुरक्षा के लिए एक बड़ी उपलब्धि है और परमाणु ऊर्जा में आत्मनिर्भरता (आत्मनिर्भर भारत) की ओर एक बड़ा कदम है। यह वर्ष 2026 के अंत तक पूर्ण वाणिज्यिक संचालन शुरू कर सकता है।

कलपक्कम की यह कामयाबी सिर्फ एक वैज्ञानिक उपलब्धि ही नहीं है, बल्कि यह हर भारतीय के घर को बिना प्रदूषण वाली 'सस्ती और निर्बाध' बिजली देने का वादा है। परमाणु ऊर्जा आयोग के अध्यक्ष और परमाणु ऊर्जा विभाग के सचिव डॉ. अजीत कुमार मोहंती इस सफलता को ऐतिहासिक मील का पत्थर बताते हैं। ये उपलब्धि भविष्य में भारत के प्रचुर थोरियम भंडार के उपयोग का मार्ग प्रशस्त करेगी, जिससे हम ऊर्जा क्षेत्र में पूरी तरह आत्मनिर्भर बनेंगे।





भारत की परमाणु ऊर्जा क्रांति: 'अक्षय पात्र' से 100 GW के महा-लक्ष्य तक

स्वदेशी तकनीक, ईंधन का उत्पादन और नेट-जीरो भविष्य की ओर एक ऐतिहासिक छलांग

वर्तमान स्थिति

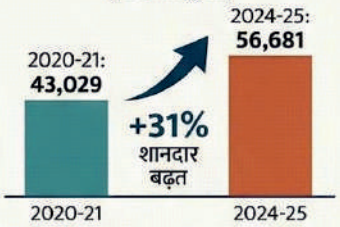
वर्तमान हिस्सेदारी

कुल बिजली ~3%

कुल बिजली का ~3%

स्थापित क्षमता: 8.78 GW (24 रिएक्टर)

बिजली उत्पादन वृद्धि (मिलियन यूनिट)



धीरे-धीरे रफ्तार बढ़ रही है।

भविष्य के लक्ष्य

2031-32: मध्यकालिक लक्ष्य

क्षमता: 22.38 GW

निर्माणाधीन प्रोजेक्ट्स पूरे होने पर

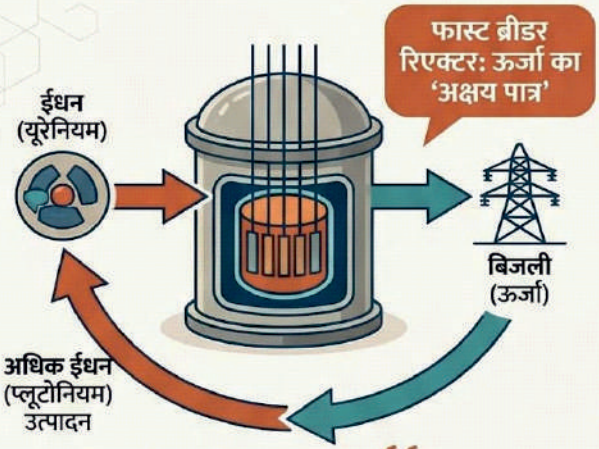
2047: महा-लक्ष्य (मिशन 100 GW)

क्षमता: 100 GW

आजादी के 100 साल पर लक्ष्य

मीलों हम आ चुके, मीलों जाना बाकी है।

कलपक्कम का 'अक्षय पात्र'



- खपत से ज्यादा ईंधन पैदा करता है
- स्वदेशी और दुर्लभ तकनीक (केवल रूस के पास)
- बिना बाहरी चिंगारी के 'क्रिटिकैलिटी' हासिल

"ऐतिहासिक मील का पत्थर, ऊर्जा में आत्मनिर्भरता का मार्ग प्रशस्त।"

– डॉ. अजीत कुमार मोहंती

रणनीतिक महत्व

नेट-जीरो और आत्मनिर्भरता



नेट-जीरो उत्सर्जन (2070) का निर्णायक कदम



थोरियम भंडार का उपयोग: ऊर्जा सुरक्षा



'शांति' (SHANTI) एक्ट: प्राइवेट सेक्टर की भागीदारी से तेजी

भारत का 'न्यूक्लियर युग' सही मायने में शुरू।

संवादात्मक रोबोटिक्स : एक संक्षिप्त परिचय



डॉ. अनामिका कुमारी

वर्तमान युग को विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का युग कहा गया है। इस युग में मानव जीवन को सरल, विकसित एवं अत्यधिक उत्पादक बनाने हेतु अनेक आधुनिक उपकरणों का विकास हुआ है। इन्हीं में से एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है—रोबोटिक्स। रोबोटिक्स, विज्ञान एवं अभियांत्रिकी की वह शाखा है जिसमें रोबोट का निर्माण, संचालन, प्रोग्रामिंग और उनका उपयोग समाहित है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में रोबोट मात्र उद्योगों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि ये शिक्षा, चिकित्सा, रक्षा, कृषि, अंतरिक्ष तथा घरेलू कार्यों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। भारत जैसे बहुभाषी देश में रोबोटिक्स के विकास के साथ-साथ भाषाई अनुकूलन भी आवश्यक है, जिसमें रोबोटिक्स एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता का विशेष महत्व है। प्रौद्योगिकी के विकसित होते इस स्वरूप ने मानव जीवन को अत्यंत सुगम, गतिशील और प्रभावशाली बनाया है।

भारत जैसे बहुसांस्कृतिक और बहुभाषिक देश में हिंदी भाषा को विशेष स्थान प्राप्त है। इस दृष्टिकोण से हिंदी भाषिक उपकरणों का विकास अत्यंत आवश्यक हो जाता



है, ताकि प्रौद्योगिकीय प्रगति का लाभ अधिक से अधिक लोगों को मिल सके। अतः जब रोबोटिक्स एवं हिंदी भाषिक उपकरणों के समन्वय और संकल्पना को आधार प्राप्त होता है, तब तकनीक के इस परिवर्तनीय दौर में भाषा-प्रौद्योगिकी संचार के स्वरूप को परिवर्तित करते हुए न केवल उपयोगी बल्कि सर्वसुलभ बन जाती है।

रोबोटिक्स: यह क्षेत्र यांत्रिक अभियांत्रिकी, विद्युत अभियांत्रिकी और संगणक विज्ञान के सम्मिलित उपयोग पर आधारित होता है। रोबोट ऐसे यांत्रिक उपकरण होते हैं, जो स्वचालित अथवा अर्ध-स्वचालित रूप से कार्य कर सकते हैं। रोबोटिक्स का विकास कई चरणों में हुआ है, जैसे - प्रारंभिक यांत्रिक उपकरण - घड़ियों एवं स्वचालित खिलौनों के रूप में

औद्योगिक रोबोट (20वीं सदी)– कारखानों में उपयोग

बुद्धिमान रोबोट (कृत्रिम बुद्धिमता पर आधारित) – निर्णय लेने में सक्षम

सेवा रोबोट – मानव जीवन को सरल बनाने हेतु

वर्तमान समय में रोबोट कृत्रिम बुद्धिमता, मशीन अधिगम और इंटरनेट ऑफ थिंग्स (आईओटी) जैसी तकनीकों से जुड़े हुए हैं।

रोबोट की विशेषताएँ

- स्वचालित कार्य करने की क्षमता
- प्रोग्राम के अनुसार निर्णय लेने की योग्यता
- दोहराए जाने वाले कार्यों को सटीकता से करना
- कठिन एवं जोखिमपूर्ण कार्यों को संभालना

रोबोटिक्स के प्रमुख घटक

संवेदक: रोबोट में संवेदक (सेंसर) एक महत्वपूर्ण घटक होते हैं, जो रोबोट को अपने आस-पास के वातावरण से जानकारी प्राप्त करने में उसकी सहायता करते हैं। संवेदक रोबोट को विभिन्न प्रकार के डेटा प्रदान करते हैं, जैसे कि तापमान, गति, दूरी, रोशनी, स्थिति इत्यादि। यह एकत्रित सूचना रोबोट के नियंत्रण व्यवस्था को भेजी जाती है, जो फिर उसके निर्णायक क्षमता के लिए प्रयोग की जाती है।

नियंत्रक प्रणाली: नियंत्रण प्रणाली का महत्वपूर्ण अंग है। नियंत्रक इनपुट डेटा को प्राप्त करता है, जो कि वह संवेदकों से लेता है और फिर उसे संसाधित करता है। यह उस डेटा के आधार पर रोबोट के कार्यों को नियंत्रित करता है। इसे 'कंट्रोल लॉजिक' कहा जाता है, जो यह तय करता है कि रोबोट को किस दिशा में और किस गति से चलना है। नियंत्रक के प्रकार में 'पोजीशन कंट्रोल', 'स्पीड कंट्रोल' तथा 'टार्गेट ट्रैकिंग' जैसी विधियाँ शामिल हैं। नियंत्रण प्रणाली में फीडबैक का उपयोग यह सुनिश्चित करने के लिए किया जाता है कि रोबोट अपने लक्ष्य पर सही तरीके से पहुँच रहा है या नहीं। फीडबैक दो प्रकार का हो सकता है:-

पॉजिटिव फीडबैक: सिस्टम को गति देने या बढ़ाने के लिए उपयोग किया जाता है।

नेगेटिव फीडबैक: सिस्टम की असमानताओं को ठीक करने के लिए उपयोग किया जाता है, जिससे रोबोट को अधिक सटीकता मिलती है। यह मुख्य रूप से स्थिरता बनाए रखने के लिए काम आता है।

एक्टुएटर (Actuator): एक्टुएटर रोबोट के भौतिक हिस्से (जैसे मोटर्स, हाइड्रोलिक सिस्टम) को नियंत्रित करते हैं। नियंत्रक से प्राप्त निर्देशों के आधार पर एक्टुएटर रोबोट के अंगों को गति देने का कार्य करते हैं।

सॉफ्टवेयर एवं एल्गोरिथ्म: रोबोटिक्स में सॉफ्टवेयर एवं एल्गोरिथ्म का कार्य बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि ये रोबोट को स्वतंत्र रूप से कार्य करने, निर्णय लेने, सेंसर डेटा को प्रोसेस करने तथा प्राकृतिक वातावरण में नेविगेट करने की क्षमता प्रदान करते हैं। इन एल्गोरिथ्म के द्वारा रोबोट न केवल सटीक रूप से कार्य करते हैं, बल्कि वे अपने कार्यों को समय के साथ और अधिक सटीक एवं प्रभावी बना सकते हैं।

कृत्रिम बुद्धिमता एवं मशीन अधिगम: आधुनिक रोबोटिक्स में कृत्रिम बुद्धिमत्ता एवं मशीन अधिगम का उपयोग करके रोबोट को अधिक कुशल बनाया जा सकता है। यह नियंत्रक प्रणाली को और भी उन्नत बनाता है।

रोबोट के प्रमुख प्रकार -

औद्योगिक रोबोट: औद्योगिक रोबोट का उपयोग मुख्य रूप से उत्पादन एवं विनिर्माण प्रक्रियाओं में किया जाता है। ये रोबोट मुख्य रूप से कारखानों, उत्पादन लाइनों और निर्माण कार्यों में कार्य करते हैं। उनके कार्य निम्नलिखित हो सकते हैं :-

- **संगठित कार्य:** ये रोबोट भारी मशीनों एवं निर्माण प्रक्रियाओं को स्वचालित करते हैं। जैसे- उत्पादों को बनाने, जोड़ने, पैक करने और गुणवत्ता जाँचने का कार्य।

- **जोखिमपूर्ण कार्य:** वे उन कार्यों को भी करने में सक्षम होते हैं, जो मानव के लिए खतरनाक हो सकते हैं। जैसे- उच्च तापमान, रसायन आधारित या वेल्डिंग कार्य। उदाहरणार्थ कार निर्माण में बॉडी असेंबली, रंग करना एवं रोबोट द्वारा सामान उठाना या उठवाने का कार्य आदि।

सेवा रोबोट: सेवा रोबोट मुख्य रूप से मानवों के साथ सहकार्य करते हैं एवं विभिन्न प्रकार की सेवा प्रदान करते हैं। ये रोबोट आमतौर पर घरेलू या सार्वजनिक स्थानों पर उपयोग किए जाते हैं। उनके कार्य निम्नलिखित हो सकते हैं:-

- **घर का कार्य:** सफाई, धुलाई, खाना पकाना आदि में सहायता प्रदान करना। उदाहरण हेतु वैक्यूम क्लीनर तथा मॉप्स।

- **सार्वजनिक सेवाएँ:** हवाई अड्डे, होटल या शॉपिंग मॉल में सूचना देने, सुरक्षा निगरानी या मार्गदर्शन करने हेतु उपयोग किए जाते हैं। उदाहरणार्थ रोबोटिक वैक्यूम क्लीनर, होटल में सामान लेकर जाना, रेस्टोरेंट में ऑर्डर लेना।

चिकित्सा रोबोट: चिकित्सा रोबोट चिकित्सा क्षेत्र में मदद करने के लिए डिजाइन किए गए होते हैं एवं उनका उद्देश्य शल्य चिकित्सा, निदान, उपचार तथा मरीजों की देखभाल में सुधार करना होता है। उनके कार्य निम्नलिखित हैं:-

- **सर्जरी:** ये रोबोट सर्जरी के दौरान उच्च सटीकता तथा कम मानवीय त्रुटियों के साथ काम करते हैं। जैसे - 'द विंन्सी सर्जिकल सिस्टम' जो दूर से सर्जरी करने में सक्षम होता है।

- **दवाइयाँ एवं चिकित्सा उपकरण:** चिकित्सा रोबोट दवाओं को वितरित करने, चिकित्सा परीक्षण करने एवं मरीजों की स्थिति की निगरानी करने का कार्य करते हैं।

- **रिमोट सर्जरी:** रिमोट लोकेशन पर स्थित सर्जन द्वारा ऑपरेशन करना, जहाँ रोबोट का उपयोग सर्जिकल उपकरणों को नियंत्रित करने के लिए किया जाता है। उदाहरण: रोबोटिक सर्जरी सिस्टम, न्यूरोमॉर्फिक रोबोट, जो मस्तिष्क और तंत्रिका तंत्र से जुड़ी सर्जरी में सहायता करते हैं।

सामाजिक रोबोट: सामाजिक रोबोट ऐसे रोबोट होते हैं, जो इंसानों के साथ संवाद करते हैं एवं सामाजिक व्यवहार प्रदर्शित करते हैं। ये रोबोट मानवीय भावनाओं को समझने की कोशिश करते हैं तथा समाजिक गतिविधियों में शामिल होते हैं। उनके कार्य निम्नलिखित हो सकते हैं :-

- **मनोरंजन एवं शिक्षा:** ये रोबोट बच्चों या वृद्ध लोगों के साथ संवाद करते हैं, उन्हें शिक्षा प्रदान करते हैं, उनका मनोरंजन करते हैं तथा उनके सहायक या मार्गदर्शक के रूप में कार्य करते हैं। उदाहरण : सोफिया रोबोट, जो इंसान की तरह संवाद कर सकता है, रूमबा जो मानवीय भावनाओं को पहचान कर उन्हें समर्थन देता है।

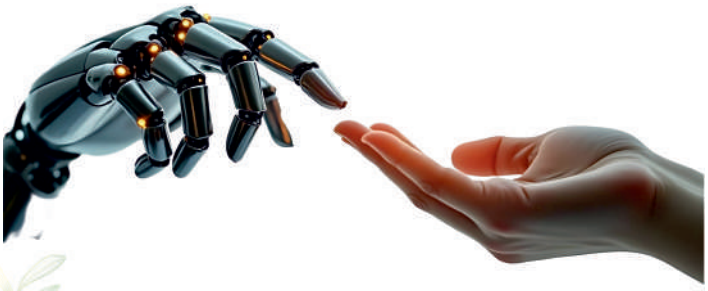
- **सामाजिक समर्थन:** वृद्धावस्था में या मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं वाले लोगों को सहारा देने के लिए इनका उपयोग किया जाता है। ये रोबोट संवाद करते हैं, खेलते हैं और भावनात्मक सहायता प्रदान करते हैं।

रोबोटिक्स एवं हिंदी भाषिक उपकरण: रोबोटिक्स एवं हिंदी भाषिक उपकरणों का समन्वय तकनीक को अधिक सरल, सुलभ तथा मानव-केंद्रित बनाने में महत्वपूर्ण

भूमिका निभाता है। जैसे- वाक् पहचान, वाक् संश्लेषण, मशीन अनुवाद, वर्तनी एवं व्याकरण जाँचक तथा चैटबॉट जैसी तकनीकों की सहायता से रोबोट हिंदी में संवाद कर सकते हैं और विभिन्न कार्यों को प्रभावी ढंग से कर सकते हैं। इसका उपयोग शिक्षा, स्वास्थ्य, ग्राहक सेवा, पर्यटन तथा उद्योगों में किया जा सकता है। हालाँकि, हिंदी की विविध बोलियाँ, उच्च गुणवत्ता वाले डेटा की कमी, तकनीकी संसाधनों की सीमाएँ तथा सुरक्षा एवं गोपनीयता जैसी चुनौतियाँ हैं। इनके समाधान के लिए पर्याप्त डेटा संग्रह, ओपन-सोर्स परियोजनाओं, सरकारी सहयोग तथा तकनीकी प्रशिक्षण को बढ़ावा देना आवश्यक है। साथ ही, रोबोटिक्स से रोजगार में कमी, तकनीक पर अत्यधिक निर्भरता तथा आर्थिक असमानता जैसी संभावित समस्याएँ भी उत्पन्न हो सकती हैं। अतः उचित अनुसंधान, सावधानी एवं संतुलित तकनीकी विकास के माध्यम से रोबोटिक्स एवं हिंदी भाषिक उपकरण भारत के सामाजिक और तकनीकी विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया जा सकता है।

संभावनाएँ: संभावित विकास क्षेत्र के दृष्टिकोण की बात की जाए तो वर्तमान में रोबोटिक्स के विकास को देखते हुए कहा जा सकता है कि भविष्य में हिंदी में पूर्ण संवाद करने वाले रोबोट, मानवीय भावनाओं एवं संवेदनाओं को समझने वाले कृत्रिम बुद्धिमता पर आधारित और अधिक उन्नत एवं स्वयं को प्रशिक्षित करने वाले रोबोट विकसित होंगे। स्मार्ट होम में हिंदी आधारित नियंत्रण तथा शिक्षा, चिकित्सा और औद्योगिकी के क्षेत्र में हिंदी आधारित नियंत्रण प्रणाली के व्यापक उपयोग की संभावनाएँ दृष्टिगत होती हैं।

निष्कर्षत: रोबोटिक्स भविष्य में मानव समाज के लिए अवसर भी है एवं एक अदृश्य चुनौती या जोखिम भी। इन्हें समझना तथा इनमें संतुलन बनाना भी आवश्यक है। जहाँ इसका एक पक्ष सकारात्मक है, जिसमें इस माध्यम से उत्पादन तथा कार्यक्षमता में वृद्धि को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। जैसे-रोबोट तेजी एवं सटीकता से कार्य को पूर्ण करते हैं, जिससे उद्योगों में उत्पादकता बढ़ती है। खदान, युद्ध या अंतरिक्ष जैसे जोखिमपूर्ण क्षेत्रों में रोबोट मानव के स्थान पर कार्य कर सकते हैं। स्वास्थ्य क्षेत्र में सुधार की दृष्टि से सर्जरी, दवा वितरण एवं बुजुर्गों की देख-रेख में रोबोट सहायक हैं। रोबोटिक्स के क्षेत्र में भविष्य में नित नए अवसरों का सृजन हो रहा है। रोबोटिक्स में कृत्रिम बुद्धिमता एवं तकनीक से जुड़े नए आयामों का विस्तार हो रहा है। वहीं इसका दूसरा पक्ष भविष्य के लिए नई चुनौतियों तथा जोखिमों को दर्शाता है। इसका प्रभाव रोजगार के क्षेत्र में पड़ेगा। अतः कहा जा सकता है कि अगर उचित नियम, शिक्षा एवं नियंत्रण के साथ इसे अपनाया जाए, तो यह मानव जीवन को प्रगतिशील एवं उन्नत बना सकता है।



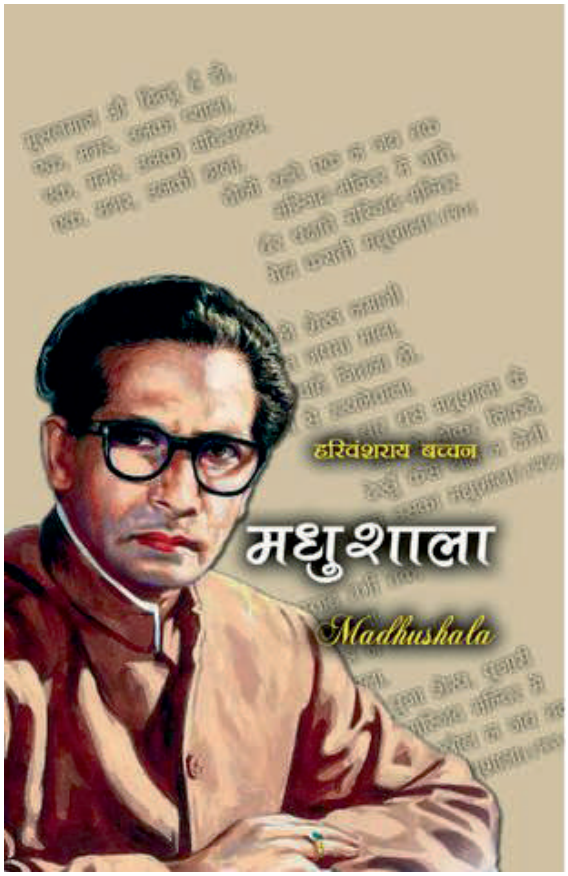
साहित्य यात्रा

‘मधुशाला’ काव्य रचना की समीक्षा



जयश्री पोकळे

मधुशाला, श्री हरिवंशराय बच्चन की अमर काव्य रचना है। मैंने बचपन से इसके बारे में सुना था और उसकी कुछ रुबाइयाँ पाठ्यक्रम में पढ़ी भी थीं, परंतु पूर्ण पुस्तक पढ़ने का अवसर जीवन के तीन दशकों बाद, कुछ सालों पहले मिला।



यह कविता 135 रुबाइयों में लिखी गई है। बच्चन जी ने मधुशाला की रचना उमर खैय्याम की रुबाइयों से प्रभावित होकर की है। इसकी हर रुबाई का अंत मधुशाला शब्द से होता है। मधुशाला हर मनुष्य का जीवन संगीत है जो एक आध्यात्मिक ऊँचाई से गूँजता है।

रचना के 80 सालों बाद भी यह सभी के जीवन की सच्चाई है। इस कविता के प्याले से आप जितनी ही बार रसपान करें, लेकिन यह कभी खाली नहीं होता। इसकी हर एक रुबाई हमें जीवन के सत्य से परिचित कराती है। यह हमें जीवन का सत्य समझाती है, हमें प्यार करना सिखाती है और उसी तरह राह से भटके को सही राह पर चलना सिखाती है।

कवि हमें समझाता है कि हम कठिन लक्ष्य पर नजर जरूर रखें और उसे पाने के लिए हर संभव कोशिश करें और अपना साहस न छोड़ें। हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि हम कभी भी और किसी भी मुश्किल में लक्ष्य से विचलित न हों।

इस कविता द्वारा कवि जीवन का सत्य समझाता है कि यह सुंदर जीवन हर जाति धर्म से ऊपर है। हर व्यक्ति को यह समझना चाहिए कि दूसरों के पास जो है, जरूरी नहीं कि वह सब हमारे पास भी हो। इस बात का हमें तनिक भी मलाल नहीं होना चाहिए। मगर यह जरूरी है कि हम भी ऊँचे स्थान पर पहुँचने और सुखी एवं सधन बनने का स्वप्न देखें और लक्ष्य को पाने की हर संभव कोशिश करें।

सभी को यह ध्यान रखना चाहिए कि मान अपमान में कुछ धरा नहीं है। हम सभी को एक दिन मिट्टी में मिल जाना है, परंतु यह नहीं भूलना चाहिए कि जो हमारा इस समय स्थान है, वह भी हमने बहुत कष्टों से पाया है।

इसी तरह हर रुबाई हमें जीवन के किसी न किसी सच से परिचित करवाती है और यह सुंदर जीवन खुशी-खुशी व्यतीत करना सिखाती है।

मधुशाला का रसपान अब तक लाखों लोग कर चुके होंगे और मुझे यकीन है कि भविष्य में भी करते रहेंगे। परंतु इस कविता का प्याला कभी भी खाली होने वाला नहीं है। जैसा कि कवि स्वयं ही कहता है –

भावुकता अंगूर लता से
खींच कल्पना की हाला,
कवि साकी बनकर आया है
भरकर कविता का प्याला,
कभी न कण भर खाली होगा,
लाख पिएँ, दो लाख पिएँ!
पाठक गण हैं पीनेवाले,
पुस्तक मेरी मधुशाला।



कठिन समय में भी दृढ़ता सिखाती है - रमेश घोलप की किताब "इथे थांबणे नाही..."



डॉ. धनंजय झालटे



रमेश घोलप द्वारा लिखित 'इथे थांबणे नाही' किताब जब मैंने हाथ में ली, तो मैंने उसे एक ही बैठक में पढ़ लिया। पृष्ठ संख्या की दृष्टि से यह किताब बहुत छोटी है, लेकिन इस किताब का हर पन्ना हमारे जीवन को प्रेरित करता है। इस किताब को पढ़ने के बाद ऐसा महसूस हुआ कि संघर्ष तो हर किसी के जीवन में होता है, लेकिन उस संघर्ष से भरी स्थिति से आत्मविश्वास, मेहनत, लगन और दृढ़ता के बल पर जो व्यक्ति सफलता प्राप्त करता है, वह हर किसी के लिए प्रेरणा बन जाता है। यह किताब भी प्रत्येक व्यक्ति को प्रेरित करती है, क्योंकि इस किताब का नायक हमारे सामने एक आदर्श स्थापित करता है। इस पुस्तक को जो भी पढ़ेगा, वह अवश्य इससे प्रेरित होगा, चाहे वह अपनी आर्थिक स्थिति के कारण निराशा से ग्रस्त हो, चाहे उसे कड़ी मेहनत के बावजूद हार का सामना करना पड़ा हो या फिर उसे किसी दौड़ में अंतिम क्षणों में हार मिली हो। वह अपनी निराशा को एक पल में त्याग देगा और कहेगा "इथे थांबणे नाही" अर्थात, कितने भी संकट क्यों न हों, बस आगे बढ़ते रहना है और अपनी स्थिति को बदलने के लिए इतनी मेहनत करनी है कि अपना जीवन भी दूसरों के लिए प्रेरणा बन सके।

'इथे थांबणे नाही' एक आत्मकथात्मक पुस्तक है, जो अत्यधिक बाधाओं के बावजूद सफलता की एक प्रेरक कहानी है। इसमें 1000-1200 की आबादी वाले गाँव के एक लड़के के कठिन संघर्ष की कहानी है, जो घर पर गरीबी में जीवन गुजार रहा है। जो अपनी परिस्थिति को बिना कोसते हुए दृढ़ संकल्प, अदम्य इच्छाशक्ति और कड़ी मेहनत के बल पर विपरीत परिस्थितियों में निर्णायक रूप से विजय प्राप्त करके अपने संकल्प को पूरा करता है। वह आर्थिक कठिनाइयों और शारीरिक दिव्यांगता के बावजूद आईएएस अधिकारी बनने का अपना सपना साकार करता है।

किताब के 20 प्रकरणों में लेखक अपने जीवन के सुख-दुख से भरे विभिन्न पड़ावों का संस्मरणात्मक शैली में वर्णन करता है। उनके जीवन के ये अनुभव और संघर्ष अंततः सभी के लिए प्रेरणास्रोत बन जाते हैं। विशेषकर ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाले युवाओं के लिए, जो युवा किसी मार्गदर्शन के अभाव में अपने लक्ष्य से भटक जाते हैं और कभी सफल नहीं बन पाते हैं। यह किताब रमेश घोलप (आईएएस) द्वारा लिखी गई है और उनके जीवन के संघर्ष, दृढ़ संकल्प और कड़ी मेहनत के अनुभव का वर्णन करती है। यह सच्ची कहानी ऐसे लड़के की है, जिसके एक पैर में बचपन में ही पोलियो हो जाता है। उनके पिता साइकिल मरम्मत करने की दुकान चलाते थे, लेकिन पिता की तबीयत लगातार खराब रहने के कारण उन्हें अपनी साइकिल की दुकान बंद करनी पड़ती थी। घर चलाने के लिए उनकी माँ चूड़ियाँ बेचने का काम करती थी और रमेश भी अपनी माँ को चूड़ियाँ बेचने में मदद करते थे। एक समय ऐसा आ जाता है, जब बारहवीं की परीक्षा के कुछ दिन पहले उनके पिता की मृत्यु हो जाती है। पिता के अंतिम संस्कार में जाने के लिए उसके पास टिकट के लिए पैसे भी नहीं होते हैं। इन सभी विपरीत स्थितियों के बावजूद भी रमेश अपनी मेहनत के बल पर 2012 में अखिल भारतीय रैंक 287 से यूपीएससी परीक्षा को पास करने के साथ-साथ एमपीएससी में भी रिकॉर्ड-ब्रेक अंकों के साथ अव्वल स्थान हासिल करते हैं।

बारहवीं की परीक्षा के कुछ दिन पहले ही पिता का निधन होने की स्थिति में भी 88.50% अंक प्राप्त करते हैं और आगे वे डी.एड. पूरा करके शिक्षक बनते हैं। आर्थिक कठिनाइयों से जूझते हुए सरकारी नौकरी मिलने के बाद भी प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए नौकरी से इस्तीफा देना, यह उनके स्वयं पर होने वाले दृढ़ विश्वास को दर्शाता है। उनके इस निर्णय में उनकी माँ और भाई का भी साथ मिलता है। इस्तीफा देने का निर्णय लेते समय माँ कहती है कि "मुझे विश्वास है कि तुम एक दिन जरूर अधिकारी बनोगे।" यह बात उनकी माँ तथा भाई का उनकी मेहनत पर होने वाले विश्वास को दर्शाती है।

7-8 महीने तक लगातार पढ़ाई करने के बाद भी प्रतियोगी परीक्षा की पहली परीक्षा में उनको असफलता मिलती है। उसी दौरान गाँव के पंचायत चुनाव में माँ को भी हार का सामना करना पड़ता है। इन स्थितियों में उनका जीवन निराशा से घिर जाता है। उस समय रमेश के मन को इतनी ठेस पहुँचती है कि वे फूट-फूटकर रोने लगते हैं। उसी समय वे अपनी माँ, भाई और दोस्तों से वादा करते हैं कि "अब मैं अपने विजय जुलूस के साथ ही गाँव लौटूँगा।" यह कहते हुए वे गाँव छोड़कर परीक्षा की तैयारी के लिए शहर चले जाते हैं।

लगातार 18 महीने तक वे 'मिशन दिल्ली' और 'मिशन महाराष्ट्र' इन दो लक्ष्यों को ध्यान में रखकर पढ़ाई करते हैं। पढ़ाई के दौरान उनको कई ऐसे मित्र मिलते हैं, जो उनको विपरीत परिस्थिति में हार न मानते हुए आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं। कई ऐसे मित्र भी थे, जो असफलता मिलने के बाद भी परीक्षा में सफलता प्राप्त करने वाले अपने मित्रों की खुशियों में शामिल होते थे।

यूपीएससी और एमपीएससी की परीक्षा देने के बाद "इस बार जरूर सफलता मिलेगी" ऐसा आत्मविश्वास के साथ कहने वाले रमेश युवाओं को किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत करने तथा अपनी मेहनत पर विश्वास करना सीखाते हैं। उनका यह विश्वास यूपीएससी में अखिल भारतीय रैंक 287 और एमपीएससी में भी रिकॉर्ड-ब्रेक अंकों के साथ अव्वल स्थान प्राप्त करके सिद्ध होता है।

12 मई 2012 का वह दिन, जब पूरा गाँव रमेश की सफलता में आनंदित था। गाँव के लोग केवल यह जानते थे कि अपना रमु कलेक्टर हुआ है। मई की दोपहर में पूरा गाँव रमेश की सफलता की जुलूस में शामिल हुआ था। रमेश के आसपास पूरे गाँव के लोग इकट्ठा हुए थे। ऐसा लग रहा था मानो रमेश से ज्यादा खुशी गाँव के प्रत्येक व्यक्ति को हुई हो। यह सब देखकर रमेश की आँखे भर आती हैं। उस समय रमेश अपने पिता को याद करते हैं, जो चाहते थे कि रमेश बहुत बड़ा व्यक्ति बने। आज उनका सपना तो पूरा हुआ था, लेकिन वे इस समय नहीं थे। मई महीने में भी दोपहर के समय बारिश हो रही थी, मानो उनके पिता अपने बेटे की सफलता पर खुशी के आँसू बहा रहे हों और इस बारिश के रूप में रमेश को आशीर्वाद दे रहे हों।

इस किताब में रमेश ने अपनी माँ 'आक्का' के संघर्ष का भी वर्णन किया है। वे अपनी माँ को अपनी प्रेरणा मानते हैं, जिसने हमेशा उनको इस सफलता तक पहुँचने के लिए प्रोत्साहित किया। वे कहते हैं कि "मेरे जीवन को सफल बनाने में सबसे बड़ी भूमिका 'आक्का' इन ढाई अक्षरों की है।" इस मुकाम तक पहुँचाने में हर समय साथ देने वाले बड़े भाई को भी वे अपनी सफलता का श्रेय देते हैं।

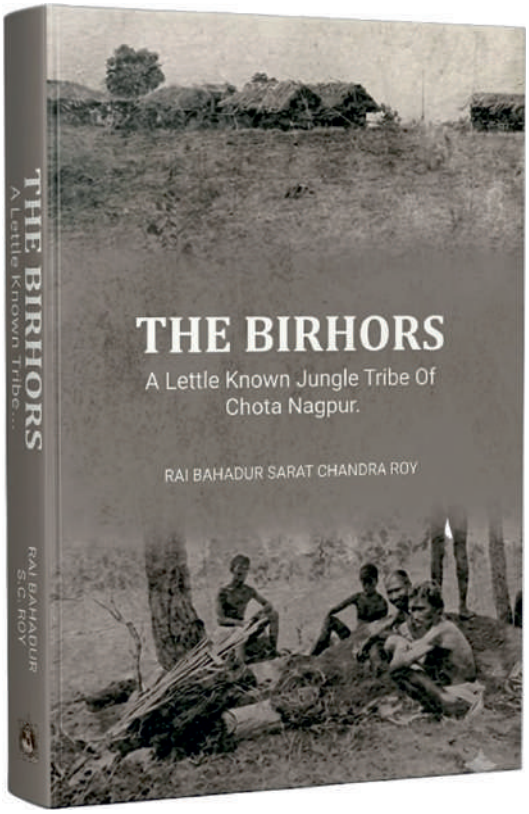
इस किताब में लेखक किसी काल्पनिक कहानी को नहीं लिखता है, बल्कि वह अपने संघर्षपूर्ण जीवन की सफलता तक की यात्रा का वर्णन करता है। यह कोई काल्पनिक कहानी नहीं है, जो भावनाओं में लिखी गई हो। वह एक ऐसी वास्तविक जीवन की यात्रा है, जिसको पढ़ने के बाद हर कोई प्रेरित होता है। इस किताब को पढ़ने के बाद हर व्यक्ति, जो अपनी परिस्थितियों से हार मानकर 'जैसे थे' रहना चाहता है, वह अपनी स्थिति को बदलने के लिए प्रेरित होगा और स्वतः ही उसके मुख से खुद के लिए शब्द निकलेंगे कि 'इथे थांबणे नाही..!' अर्थात यहाँ रुकना नहीं, तू आगे बढ़ता चल!'

यह किताब हमें परिस्थितियाँ चाहे कितनी भी कठिन क्यों न हों, अगर इरादा मजबूत हो, तो सफलता मिल सकती है तथा आर्थिक परिस्थितियाँ सफलता के मार्ग में कभी बाधा नहीं बनतीं और असफलता अंतिम नहीं होती, बल्कि वह सीखने का एक अवसर होती है, जैसी सीख देती है। एक साक्षात्कार में वे हिंदी की कुछ पंक्तियों का जिक्र करते हैं, जो आज के युवाओं को कठिन परिस्थितियों में भी मेहनत करने के लिए प्रेरित करती हैं — "विपरीत हालात में कुछ लोग टूट जाते हैं, लेकिन जो नहीं टूटते, वे रिकॉर्ड तोड़ देते हैं।"

The Birhors : A Little known Jungle Tribe of Chota Nagpur - **पुस्तक की समीक्षा**



डॉ. शिल्पा



आदिम जनजाति की भाषा पूर्व से ही समृद्ध थी। उनके जीवन यापन के तरीके प्राकृतिक थे । अब भी वे प्रकृति से जुड़े हुए हैं और पहले के तकनीक का प्रयोग करके अपना जीवन यापन कर रहे हैं। ऐसी अनगिनत जनजातियों में से एक जनजाति बिरहोर है, जिसकी भाषा ऑस्ट्रो-एशियाई भाषा परिवार के अंतर्गत आती है। बिरहोर के शाब्दिक अर्थ में बिर का तात्पर्य जंगल और होर का तात्पर्य आदमी है। अत: बिरहोर का अर्थ जंगल के लोग के रूप में समझा जाता है। बिरहोर जनजाति झारखंड, बिहार, छत्तीसगढ़, उड़ीसा राज्यों में पायी जाती है। बिरहोर जनजाति एक आदिम जनजाति है, जो अब लुप्त हो रही है। इससे संबंधित "The Birhors : A little known jungle tribe of Chota Nagpur" नामक पुस्तक राय बहादुर सरत चंद्र रॉय द्वारा लिखी गई है। जिसकी समीक्षा निम्नलिखित है:

बिरहोर हजारीबाग, राँची पलामू और सिंहभूम जिलों में पायी जाती है। इसकी भाषा बिरहोर है। झारखंड में पाए जाने वाले बिरहोर दो उप-जनजातियों में विभाजित हैं- जाघी और उथलु बिरहोर । जाघी लोग एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते हैं। ये शिकार, लकड़ी काटने और रस्सी बुनने का कार्य करते हैं। उथलु लोग एक स्थान पर रहकर खेती का कार्य करते हैं।

बिरहोर जंगल में पहाड़ियों के किनारे झोपड़ियों में रहते हैं। ये झोपड़ियाँ पेड़ों की डालियों और पत्तियों से बनी होती हैं। ये बकरी, सूअर की बलि देते हैं और इसे खाते भी हैं। ये जंगल में पाए जाने वाली सब्जियाँ खाते हैं। महिलाएँ बंदर के चमड़ी से कोल ड्रम बनाती है। बिरहोर जनवरी महीने में माघ पर्व, फरवरी में फागुन शिकार से संबंधित पर्व, मार्च में सरहुल, सितंबर में करम और जीतिया तथा अक्टूबर में दसाई और सोहराई पर्व मनाते हैं। मित्रता करने के लिए पुरुष करम नामक पेड़ की डाल के पत्ते को एक दूसरे के सिर पर रखते हैं और नए कपड़े भी देते हैं। महिलाएँ एक दूसरे को कपड़े देती है लेकिन करम के पत्ते नहीं देती हैं।

बिरहोर में 37 गोत्र हैं, जिनके नाम किसी पशु, फल, फूल या अन्य भौतिक वस्तुओं पर रखे जाते हैं। जैसे – बोंगा सौरी (एक प्रकार के जंगली घास का नाम है)। बिरहोर के दस विवाह के प्रकार हैं - नाम-नपम बापला, उद्रा-उदरी बापला, बोलो बापला, सीपुनदुर बापला, संघा और हीरुम बापला, किरिंग जवाओ बापला, गोलहट बापला, बेंग करही बापला, सदर बापला।

बिरहोर में बच्चे के जन्म होने के बाद झोपड़ी की पिछली दीवार को काटकर दरवाजा बनाया जाता है, जिससे माँ अंदर आना-जाना कर सके। छह दिन होने पर बाल कटवाया जाता है और बच्चे के शरीर में तेल से मालिश की

जाती है। बच्चे के बाल को ओझा काटता है जिसके लिए उसे एक पाइला चावल दिया जाता है।

बिरहोर जीवन जीने का आधार संस्कृति और धर्म को मानते हैं। इनके जीवन में अलौकिक शक्तियों के कारण समस्या होती है। यह शक्तियाँ जैसे पर्वत, पहाड़, हवा, जंगल, झरने इत्यादि पर भटकने वाली आत्माएँ होती हैं।

बिरहोर जादू करके हो रही बारिश को रोक सकते हैं। इसमें परिवार का जवान व्यक्ति महुआ के फूल को एक मटके में डालकर, उसमें पानी भरते हैं। फिर उसे खोदे गए गड्ढे में गाड़ देते हैं । ऐसा मानते हैं कि ऐसा करने से बारिश बंद हो जाएगी। बिजली के गरजने को रोकने के लिए बिरहोर महिला अपनी झोपड़ी के आगे धान के मुशल को फेंक देती है, जिससे बिजली का गरजना बंद हो जाता है। आँधी आने पर भी धान के मुशल को झोपड़ी के आगे फेंक देती है, जिससे आँधी रुक जाती है।

जानवरों को जादू करके कैसे बुलाया जाता है? - जब कोई कुत्ता भटक जाता है तो अपनी थाली से बचा हुआ उबला चावल का हिस्सा एक दोने में डालकर रखते हैं। रविवार को उस दोने को घर के ऊपर रखकर कुत्ते का नाम तीन बार बोलते हैं। ऐसा मानते हैं कि कुत्ता कहीं भी होगा तो वह वापस घर आ जाएगा। इस पुस्तक में उन्होंने मच्छर, कीड़े भगाने आदि के बारे में विस्तार से बताया है।

उन्होंने इस पुस्तक के सभी अध्यायों के माध्यम से बिरहोर जाति के दैनिक जीवन, रहन-सहन, वनस्पति और जीव, मौसम, खान-पान, नातेदारी संबंध या विवाह से संबंधित गोत्र, विवाह से संबंधित सभी रीति रिवाज, जन्म-मृत्यु सभी को सम्मिलित करने का प्रयास किया है। यह पुस्तक आज के बिरहोर या अन्य पाठकों के लिए उपयोगी है जो बिरहोर से संबंधित ज्ञान, उनकी संस्कृति, रहन-सहन तथा उनकी भाषा आदि को जानना चाहते हैं।



भाषा विमर्श

मशीनी अनुवाद में पुनरुक्ति शब्दों की समस्या (गूगल और बिंग ट्रांसलेटर के संदर्भ में)



डॉ. शिल्पा

भाषा के माध्यम से मनुष्य अपने विचारों का आदान प्रदान करता है। किसी भी भाषा के पाठ को समझने के लिए अनुवाद की आवश्यकता होती है। मानव तो अनुवाद और भावानुवाद कर लेता है लेकिन मशीन भावानुवाद करने में सक्षम नहीं होती है। इस आलेख में दो मशीनी अनुवाद प्रणालियों - गूगल और बिंग ट्रांसलेटर के संदर्भ में पुनरुक्ति की समस्या का विश्लेषण किया गया है तथा इसके समाधान हेतु उपयुक्त नियमों के निर्माण की आवश्यकता को बताया गया है।

अनुवाद का व्युत्पत्तिमूलक अर्थ है पुन:कथन अर्थात एक बार कही हुई बात को दोबारा कहना। इसमें अर्थ की पुनरावृति होती है, शब्द की नहीं। 'ट्रांसलेशन' शब्द का व्युत्पत्तिमूलक अर्थ है 'पारवहन' एक स्थान-बिंदु से दूसरे स्थान-बिंदु पर ले जाना। इसमें भी ले जाई जाने वाली चीज अर्थ होती है, शब्द नहीं। निम्नलिखित विद्वानों ने अनुवाद को इस प्रकार से परिभाषित किया है -

"एक भाषा की पाठ्य सामग्री को दूसरे भाषा की समानार्थक पाठ्य सामग्री द्वारा प्रतिस्थापित करना अनुवाद कहलाता है।" - कैटफोर्ड

"अनुवाद एक शिल्प है जिसमें एक भाषा में लिखित संदेश के स्थान पर दूसरी भाषा के उसी संदेश को प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया जाता है।" - न्यूमार्क

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि अनुवाद का तात्पर्य स्रोत भाषा में कहे गए कथ्य को लक्ष्य भाषा के निकटतम रूप में रखना होता है।

मशीनी अनुवाद एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें संगणक के व्यवस्थित प्रोग्रामिंग के माध्यम से एक भाषा का पाठ दूसरी भाषा में अनूदित हो जाता है। इस प्रक्रिया में अनुवाद की सामग्री को इनपुट के रूप में संगणक में दिया जाता है, जिसके बाद संगणक के अंदर संसाधन की प्रक्रिया होती है, जिसमें संगणक तमाम प्रक्रिया के बाद एक भाषा की सामग्री का दूसरी भाषा में अनुवाद करके अनूदित सामग्री आउटपुट के रूप में प्रदर्शित करता है।

पुनरुक्ति: पुनरुक्ति वह है जिसमें एक शब्द को दोहराया जाता है जो पृथक, यादृच्छिक, पुनरावृति रूपांतर के संबंध को बतलाता है। जब किसी शब्द को ज्यों-का-त्यों या उसमें थोड़ा बहुत परिवर्तन करके दोहराया जाता है तो वह प्रक्रिया पुनरुक्ति कहलाती है।

पुनरुक्ति दो तरह की होती है-

1. पूर्ण पुनरुक्ति (Complete Reduplication)

पूर्ण पुनरुक्ति उसे कहते हैं जब किसी एक ही शब्द को दो बार बोलते हैं। जैसे-

संज्ञा - गाँव-गाँव, भाई-भाई, आदमी-आदमी आदि।

प्रतिध्वन्यात्मक शब्द (Onomatopoeia word)- गड़गड़ाहट, सन-सन, सर-सर, भों-भों।

2. आंशिक पुनरुक्ति (Partial Reduplication)

आंशिक पुनरुक्ति उसे कहते हैं जब कोई शब्द जिसमें एक का अर्थ होता है और दूसरे का अर्थ नहीं होता है। किसी-किसी शब्द में दोनों का भी अर्थ होता है। जैसे -

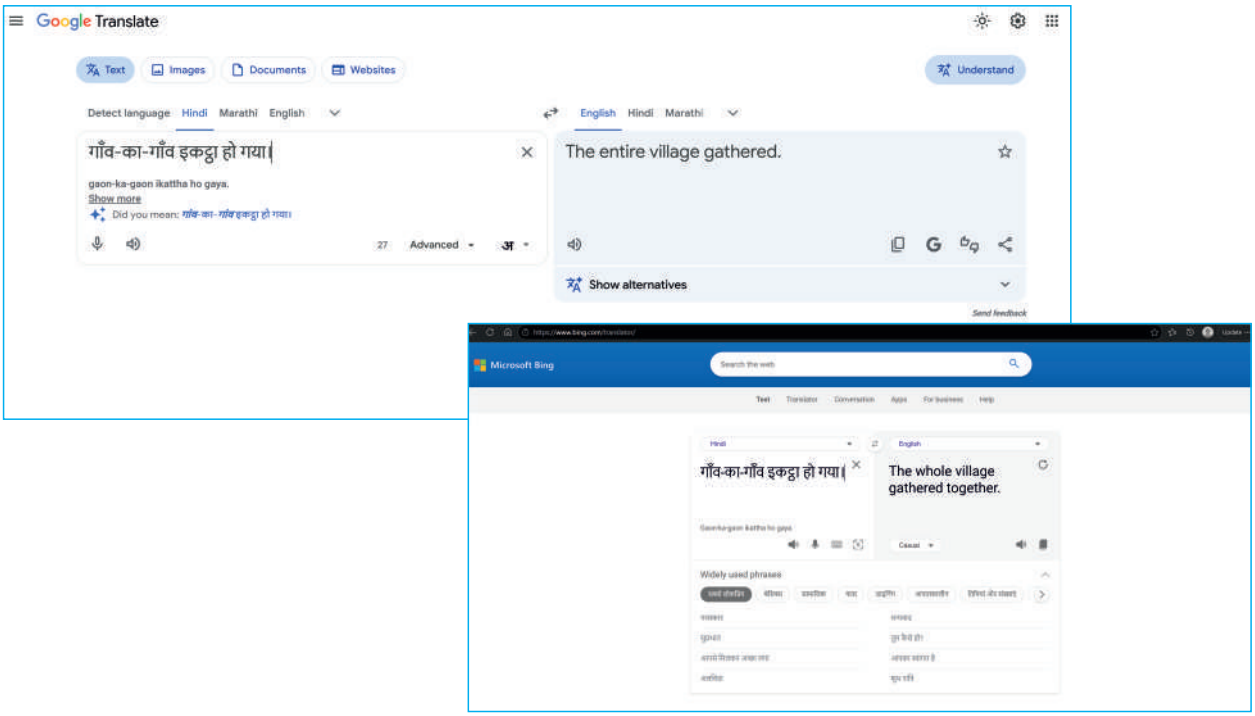
प्रतिध्वनि शब्द (Echo word) – चाय-वाय, लाल-वाल, पैर-वैर।

मध्य प्रत्यय वाले शब्द (Middle Reduplication) - रातों-रात, आप-ही-आप।

हिंदी वाक्यों का अनुवाद ऑनलाइन उपलब्ध गूगल और बिंग ट्रांसलेटर मशीनी अनुवाद प्रणालियों के द्वारा किया गया जिसका अंग्रेजी अनुवाद निम्नलिखित हैं (दिनांक – 13-8-2026, समय-15:20) -

क्र. सं.	स्त्रोत वाक्य	गूगल	बिंग ट्रांसलेटर	मानव अनुवाद
1.	धार्मिक संदेश को कोने-कोने में पहुँचना चाहिए।	The religious message should reach every nook and corner.	Religious messages should reach every corner.	The religious message should reach every corner.
2.	बात-बात पर लोग झगड़ने को तैयार रहते हैं।	People are ready to pick a fight over the slightest thing.	People are ready to fight over every little thing.	People are always ready to quarrel over the smallest thing.
3.	गाँव-का-गाँव इकट्ठा हो गया।	The entire village gathered.	The whole village gathered together.	The entire village gathered.
4.	घर-का-घर बर्बाद हो गया।	The entire household was ruined.	The whole house got destroyed.	Every house was ruined.
5.	साल-का-साल ऐसे ही निकल गया।	Year after year passed just like that.	Year after year just passed like this.	The whole year just passed by like this.
6.	जंगल-के-जंगल साफ कर दिए गए।	Entire forests were cleared away.	The jungles were cleared out completely.	Every forest were cut down.
7.	भीड़-की-भीड़ इकट्ठी हो गई।	Crowd after crowd gathered.	A huge crowd had gathered.	A huge crowd gathered.
8.	महीने-के-महीने यों बीतते गए।	And so, month after month went by.	Month after month passed like this.	Every month just passed away.
9.	बर्तन टुकड़े-टुकड़े हो गए।	The vessel shattered into pieces.	The dishes broke into pieces.	Every pots is broken into pieces.
10.	सोहन चलते-चलते थक गया।	Sohan got tired from walking.	Sohan got tired while walking.	While walking Sohan got tired.
11.	मीठे-मीठे आम।	Sweet mangoes.	Sweet, sweet mangoes.	Sweet mango.
12.	अच्छे-अच्छे कपड़े।	Nice clothes.	Really nice clothes.	Good clothes.
13.	देखो-देखो कौन आया?	Look, look–who has arrived?	Look, look who's here?	Look, who has come?
14.	आइए-आइए इधर बैठिए।	Come, come, sit here.	Come on, come on, sit here.	Come and sit here.

गूगल और बिंग ट्रांसलेटर द्वारा किए गए हिंदी पुनरुक्ति शब्दों के अंग्रेजी अनुवाद के स्क्रीनशॉट निम्नलिखित हैं-



तालिका के उदाहरण संख्या 1 का गूगल अनुवाद से प्राप्त अनुवाद स्क्रीनशॉट 1 में, बिंग ट्रांसलेटर से प्राप्त अनुवाद स्क्रीनशॉट 2 में दिया गया है।

उपर्युक्त उदाहरण :11 से समझ सकते हैं-

- स्रोत भाषा -'मीठे-मीठे आम'
- गूगल अनुवाद - Sweet mangoes.
- बिंग ट्रांसलेटर - Sweet, sweet mangoes.
- मानव अनुवाद – sweet mango होगा।

उपर्युक्त उदाहरण :14 से समझ सकते हैं-

- स्रोत भाषा - आईए-आईए इधर बैठिए।
- गूगल अनुवाद - Come, come, sit here.
- बिंग ट्रांसलेटर - Come on, come on, sit here.
- मानव अनुवाद – Come- sit here होगा।

उपर्युक्त उदाहरणों से हम समझ सकते हैं कि गूगल और बिंग ट्रांसलेटर में पुनरुक्ति शब्द का अनुवाद अलग-अलग दे रहा है, जबकि इसका सही अनुवाद sweet mango होगा। उपर्युक्त उदाहरण में गूगल और बिंग ट्रांसलेटर द्वारा दिए गए पुनरुक्ति शब्दों का सही अनुवाद नहीं है। इसके लिए गूगल और बिंग ट्रांसलेटर को संगणकीय नियम जैसे –गाँव–गाँव पुनरुक्ति शब्द के बीच में '-' हो और इस शब्द के आगे-पीछे शब्द समान हो तो यह पुनरुक्ति शब्द है। इस प्रकार के संगणकीय नियम बनाने होंगे, जिससे वह पुनरुक्ति शब्दों का सही अनुवाद कर सके।

मानव जब अनुवाद करता है तो मानव समझ सकता है कि कोई भी शब्द के दो अर्थ होते हैं, क्योंकि जन्म से मनुष्य संस्कार और अनुभव ग्रहण करता है जिसका उपयोग कर वह अनुवाद कर लेता है। कोई भी मशीन पूरी तरह से मानव बुद्धि की जगह नहीं ले पायी है, इसलिए मशीनी अनुवाद की प्रक्रिया में मानव के हस्तक्षेप की आवश्यकता पड़ती है। इसके दो कारण हैं – प्राकृतिक भाषा की द्वि-अर्थक्ता और सांसारिक ज्ञान। मशीन को समझने में कठिनाई होती है। वह यह नहीं समझ पाता है कि शब्द के दो अर्थ होते हैं इसी प्रकार हम देखते हैं कि गूगल और बिंग ट्रांसलेटर पुनरुक्ति शब्द 'आइए-आइए' के स्थान पर Come, come on, 'देखो-देखो' के स्थान पर Look, look अनुवाद कर दिया है। मशीनी अनुवाद में पुनरुक्ति शब्दों का सही अनुवाद नहीं दिया है, इसको दूर करने के लिए मशीन हेतु संगणकीय नियम निर्धारित करना होगा, जिससे मशीन भी मानव की तरह कार्य कर सके। मशीनी अनुवाद में नियम बनाए जा रहे हैं, लेकिन अभी भी मानव हस्तक्षेप की आवश्यकता है।

यात्रा संस्मरण

केरल यात्रा



देवेन्द्र कुमार

पिछले साल दिसंबर महीने में मुझे "ईश्वर का अपना देश" कहे जाने वाले केरल की यात्रा करने का अवसर मिला। केरल अपनी प्राकृतिक सुंदरता, समुद्री तटों, बैकवॉटर, हरे-भरे पर्वतों और चाय बागानों के लिए विश्व प्रसिद्ध है। इस यात्रा में हमने मुन्नार, थेक्कड़ी, अल्लेप्पी और कोच्चि की सैर की, जो जीवनभर यादगार रहेगी।



मुन्नार की वादियाँ

मेरी यात्रा की शुरुआत मुंबई से एर्नाकुलम रेलगाड़ी से हुई। वहाँ से कार द्वारा लगभग चार घंटे की यात्रा कर हम मुन्नार पहुँचे। रास्ते में ऊँचे-ऊँचे पहाड़, झरने और चाय के बागान दिखाई देते रहे। मुन्नार पहुँचकर ऐसा लगा मानो हम किसी हरे कालीन से ढकी धरती पर आ गए हों। यहाँ की ताजी हवा और ठंडा मौसम मन को बहुत भाया। हमने वहाँ चाय संग्रहालय देखा, जहाँ हमें चाय की खेती और उसके उत्पादन की जानकारी मिली। इसके अलावा मैट्टुपेट्टी डैम, एराविकुलम नेशनल पार्क और खूबसूरत झरनों ने हमारी यात्रा को और आनंददायक बना दिया।



मैट्टुपेट्टी डैम



चाय का बागान

थेक्कड़ी का वन्य जीवन

तीसरे दिन हम थेक्कड़ी पहुँचे। यह जगह अपने पेरियार वन्यजीव अभयारण्य के लिए प्रसिद्ध है। हमने नाव से पेरियार झील की सैर की। जहाँ पर हाथियों का झुंड पानी में खेलता हुआ दिखाई दिया। यहाँ के घने जंगलों और जीव-जंतुओं ने हमें प्रकृति के करीब ला दिया। रोमांच प्रेमियों के लिए यह स्थान विशेष आकर्षण का केंद्र है। इसके अलावा हमने मसालों के बागान भी देखे, जहाँ इलायची, काली मिर्च, दालचीनी आदि की खुशबू से पूरा वातावरण महक रहा था।



पेरियार वन्यजीव अभयारण्य

अल्लेप्पी के बैकवॉटर

इसके बाद हमारी यात्रा का सबसे सुंदर अनुभव अल्लेप्पी का था। यह जगह अपने बैकवॉटर और हाउसबोट की सैर के लिए प्रसिद्ध है। हमने एक पारंपरिक हाउसबोट किराए पर ली और बैकवॉटर की शांत नहरों में दिन बिताया। चारों ओर नारियल के पेड़, धान के खेत और छोटी-छोटी झोपड़ियाँ दिखाई देती थीं। हाउसबोट पर बना ताजा और स्वादिष्ट भोजन इस अनुभव को और भी खास बना गया। पानी की लहरों पर तैरती नाव में समय बिताना वास्तव में जीवनभर का अविस्मरणीय अनुभव रहा।



हाउसबोट

कोच्चि का ऐतिहासिक आकर्षण

यात्रा का अंतिम पड़ाव था कोच्चि। यह शहर इतिहास और संस्कृति का संगम है। हमने वहाँ फोर्ट कोच्चि, चीनी मछली पकड़ने के जाल, कोची वाटर मेट्रो, सेंट फ्रांसिस चर्च और डच पैलेस देखा। कोच्चि का माहौल पारंपरिक और आधुनिक संस्कृति का मिश्रण प्रतीत होता है। शाम को समुद्र तट पर बैठकर ढलते सूरज का दृश्य देखकर हमारी थकान बिल्कुल मिट गई।

केरल की यह यात्रा प्राकृतिक सुंदरता, रोमांच, इतिहास और संस्कृति से भरपूर रही। मुन्नार की वादियों ने हमें शांति दी, थेक्कड़ी ने रोमांचक अनुभव कराया, अल्लेप्पी ने सुकून भरे पल दिए और कोच्चि ने हमें इतिहास से जोड़ा। वास्तव में, यह यात्रा जीवन की सबसे सुंदर यादों में से एक रही। सचमुच केरल को "ईश्वर का अपना देश" कहा जाना उचित है।



कोच्चि वाटर मेट्रो **कोच्चि में चीनी मछली पकड़ने के जाल**

ब्रज धाम की पावन यात्रा



मनीष कुमार गुप्ता

ब्रज की भूमि का कण-कण भगवान श्री कृष्ण की लीलाओं का साक्षी है। हाल ही में हमने सपरिवार (पत्नी एवं बच्चों सहित) इस पावन नगरी की तीन दिवसीय यात्रा की। मेरा बेटा पहली बार मथुरा आया और मेरी बेटी दूसरी बार आई। चूँकि हमारी यात्रा का पहला दिन एकादशी और रविवार था, इसलिए हमने भीड़ को देखते हुए पहले बाहरी ब्रज (नंदगाँव, बरसाना, गोवर्धन) के दर्शन का निर्णय लिया।

“ऊधो, मोहि ब्रज बिसरत नाहीं। हंस सुता की सुंदर कगरी, अरु कुंजन की छाहीं॥ वे सुरभी, वे बच्छ दोहिनी, खरिक दुहावन जाही। ग्वाल बाल मिलि करत कुलाहल, नाचत गहि गहि बाहीं॥” - सूरदास

भावार्थ : कृष्ण उद्धव से कहते हैं कि मैं ब्रज को भूल नहीं पाता हूँ। यमुना का वह सुंदर किनारा, कुंजों की छाँव और वे गायें-बछड़े मुझे बहुत याद आते हैं।

हमारी यात्रा सुबह मथुरा से शुरू हुई।

1. नंदगाँव के पावन स्थल:

- **दर्शन का क्रम :** सबसे पहले हमने मुख्य नंद भवन के समीप स्थित 'पुराने मंदिर' में दर्शन किए। यहाँ भीड़ कम थी, जिससे श्री कृष्ण, बलराम, नंद बाबा और यशोदा माँ के अत्यंत शांतिपूर्ण दर्शन हुए। मंदिर की परिक्रमा के दौरान हमारी मुलाकात लगभग 10 वर्ष के एक नन्हे 'बृजवासी' बालक से हुई, जिसने हमें नंदगाँव और कृष्ण की अनेक पौराणिक कथाएँ सुनाईं। हम सब पहली बार नंदगाँव आए।
- **मुख्य मंदिर (नंद भवन) :** यहाँ सुबह 10:05 बजे पट खुले। बीच में 30 मिनट दर्शन बंद होने के कारण भीड़ काफी बढ़ गई थी।
- **अन्य स्थल :** पावन सरोवर और चरण पहाड़ी के भी दर्शन किए जा सकते थे, परंतु समय की कमी के कारण हमने वहाँ के दर्शन नहीं किए।



2. बरसाना और श्री जी के दर्शन :

- नंदगाँव से हम बरसाना के लिए निकले। मुख्य पार्किंग से 2 किलोमीटर पहले ही भारी जाम के कारण हमने अपनी गाड़ी सड़क किनारे खड़ी की और ई-रिक्शा से श्री जी मंदिर के आधार तक पहुँचे। भीड़ को देखकर एक बार हमने वापस जाने का विचार किया, लेकिन तभी लगभग 66 वर्ष के एक अनुभवी साधु ने हमारा उत्साह बढ़ाया और मंदिर तक पहुँचाने में मदद की। बरसाना में "राधे-राधे" और "हरे कृष्ण" के निरंतर कीर्तन के बीच श्री जी (राधा रानी) के दर्शन करना एक दिव्य अनुभूति थी।

- बरसाना की महिमा में यह पद बहुत प्रसिद्ध है :

"भलो बन्यो बरसाने को गाँव। जहाँ प्रकटीं श्री कीरति-कुमारी, राधिका जाको नाँव॥" - श्री भट्ट

भावार्थ : वह बरसाना गाँव धन्य है, जहाँ कीर्ति कुमारी श्री राधा रानी का प्राकट्य हुआ।



3. गोवर्धन :

- बरसाना के बाद हम पावन गोवर्धन धाम पहुँचे। गोवर्धन से मेरा नाता बहुत पुराना और गहरा है; मैंने अब तक लगभग 18-19 बार गिरिराज जी की सप्तकोसी (लगभग 21 किमी) परिक्रमा नंगे पैर पूरी की है। लेकिन इस बार का अनुभव थोड़ा अलग था। चूँकि हमारे साथ हमारा 6 साल का छोटा बेटा था, जो इतनी लंबी दूरी नंगे पैर तय नहीं कर सकता था, इसलिए हमने 21 किमी की परिक्रमा ई-ऑटो के माध्यम से पूरी की। इसे 9 किमी (छोटी) और 12 किमी (बड़ी) की परिक्रमा में बाँटा गया है, जो मुख्य रूप से जतीपुरा और राधाकुंड से होकर गुजरती है।

- भले ही इस बार मैं पैदल नहीं था, लेकिन श्रद्धा में कोई कमी नहीं थी। मार्ग में हमने राधा कुंड और श्याम कुंड की पवित्रता को नमन किया। हरिदेव मंदिर में श्री कृष्ण के दर्शन किए और पूँछरी का लौठा पर हनुमान जी का आशीर्वाद लिया। कुसुम सरोवर की सुंदरता और मानसी गंगा के पावन तट पर रुककर जो शांति मिली, वह अद्भुत थी। वराह पुराण के अनुसार, यह परिक्रमा जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्ति दिलाती है।

- परिक्रमा के दौरान मन पूरी तरह से 'गिरिराज धरण' के ध्यान में मग्न था। अंत में, हमने दानघाटी मंदिर में गिरिराज जी के मुखारविंद के दर्शन किए। अपने पूरे परिवार के साथ साक्षात् भगवान के इस स्वरूप के दर्शन करना और उनका आशीर्वाद पाना मेरे लिए एक अत्यंत भावुक क्षण था। परिक्रमा पूर्ण होने के बाद मन में एक असीम संतोष और शांति थी कि प्रभु की कृपा से सपरिवार यह दिव्य कार्य संपन्न हुआ। गिरिराज जी की कृपा का ही फल है कि हम सकुशल अपनी यादें संजोकर मथुरा वापस लौटे।

  बोलिए गिरिराज महाराज की जय! गोवर्धन गिरिराज धरण की जय!

वृंदावन का भक्ति रस (सप्तदेवालय दर्शन)

"मानुष हौं तो वही 'रसखानि' बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन। जौ पसु हौं तो कहा बसु मेरौ चरौं नित नंद की धेनु मंझारन॥ पाहन हौं तो वही गिरि को जो धर्यो कर छत्र पुरंदर धारन। जौ खग हौं तो बसेरो करौं मिलि कालिंदी-कूल-कदम्ब की डारन॥" - रसखान

भावार्थ : यदि मनुष्य बनूँ तो गोकुल के ग्वालों के बीच रहूँ, और यदि पत्थर बनूँ तो उसी गोवर्धन पर्वत का बनूँ जिसे कृष्ण ने अपनी उंगली पर उठाया था।

1. श्री बाँके बिहारी मंदिर:

एकादशी के अगले दिन होने के कारण बिहारी जी का विग्रह गर्भगृह से थोड़ा बाहर था, जिससे हमें उनके अत्यंत निकट से दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उनका श्रृंगार इतना



अद्भुत था कि उन्हें देखते ही मन हल्का हो गया।

मार्गशीर्ष शुक्ल पंचमी को संगीत के मुख्य आचार्य स्वामी हरिदासजी महाराज के हरिभक्ति, आराधना को साकार रूप देने के लिए भगवान बाँके बिहारी जी निधिवन में प्रकट हो गए। स्वामीजी ने इस श्रीविग्रह को वहीं प्रतिष्ठित कर दिया। मुगलों के आक्रमण के समय भक्त इन्हें भरतपुर ले गए। वृंदावन के भरतपुर वाला बगीचा नाम के स्थान पर वि.सं. 1921 में मंदिर निर्माण होने पर बाँके बिहारी एक बार फिर वृंदावन में प्रतिष्ठित हुए, तब से यहीं भक्तों को दर्शन दे रहे हैं।

भगवान बिहारी जी की प्रमुख विशेषता यह है कि यहाँ साल में एक दिन ही ठाकुर के चरण दर्शन होते हैं, साल में एक बार ही ठाकुर बंशी धारण करते हैं। यहाँ साल में केवल एक दिन (जन्माष्टमी के बाद भोर में) मंगला आरती होती है, जबकि वैष्णव मंदिरों में नित्य सुबह मंगला आरती होने की परंपरा है।

- **बंशी धारण करना :** बाँके बिहारी जी साल में केवल एक बार शरद पूर्णिमा पर बंशी धारण करते हैं।
- **चरण दर्शन :** भगवान के चरण दर्शन भी साल में केवल एक बार अक्षय तृतीया के दिन होते हैं।
- **मंगला आरती :** अन्य वैष्णव मंदिरों के विपरीत, बाँके बिहारी जी की मंगला आरती साल में केवल एक दिन, जन्माष्टमी के बाद भोर में ही होती है।

यमुना का किनारा हो और तेरी मुरली की तान, बस यही माँगूँ तुझसे कान्हा कि तुझमें ही बस जाए मेरे प्राण।

2. अन्य प्रमुख मंदिर :

- इसके बाद हमने राधा वल्लभ लाल जी मंदिर के दर्शन किए। परम भगवान श्रीकृष्ण का यह श्रीविग्रह हित हरिवंशजी को दहेज में मिला था। उनका विवाह देवबंद से वृंदावन आते समय चटथावल गाँव में आत्मदेव ब्राह्मण की बेटी से हुआ था। पहले वृंदावन के सेवाकुंज में (संवत् 1591) और बाद में सुंदरलाल भटनागर (कुछ लोग रहीम को यह श्रेय देते हैं) द्वारा बनवाए गए लाल पत्थर वाले पुराने मंदिर में राधाबल्लभजी प्रतिष्ठित हुए। मुगलिया हमले के समय भक्त इन्हें कामा (राजस्थान) ले गए थे। वि.सं. 1842 में एक बार फिर भक्त इस श्रीविग्रह को वृंदावन ले आए और यहाँ नवनिर्मित मंदिर में प्रतिष्ठित किया, तब से भगवान



राधाबल्लभजी यहीं विराजमान हैं।

- फिर हमने राधा दामोदर मंदिर के दर्शन किए।

- दोपहर 11:50 बजे हम राधा रमण मंदिर पहुँचे। भोग के कारण पट बंद थे, लेकिन 12:15 बजे खुलते ही राधा रमण जी की स्वयं-प्रकट छवि के दर्शन हुए।

- श्री राधा रमण मंदिर : (ग्रीष्मकालीन) मंगला आरती सुबह 4:00 बजे और दर्शन सुबह 8:00 - दोपहर 12:30 एवं शाम 6:00 - रात 8:00 बजे तक। (शीतकालीन) मंगला आरती सुबह 5:30 बजे।

- श्री गोपाल भट्ट गोस्वामी को गंडक नदी में एक शालिग्राम शिला मिली। वे उसे वृंदावन ले आए और केशीघाट के पास मंदिर में प्रतिष्ठित कर दिया। भक्त के द्वारा दिए वस्त्रों को धारण न करा पाना और एक दिन किसी दर्शनार्थी ने कटाक्ष कर दिया कि चंदन लगाए शालिग्रामजी तो ऐसे लगते हैं मानो कढ़ी में बैगन पड़े हों। यह सुनकर गोस्वामीजी बहुत दुखी हुए पर सुबह होते ही शालिग्राम से भगवान राधारमण का दिव्य श्रीविग्रह प्रकट हो गया। यह दिन वि.सं. 1599 (सन् 1542) की वैशाख पूर्णिमा का था। वर्तमान मंदिर में इनकी प्रतिष्ठापना सं. 1884 में की गई।

- श्री वृन्दावन धाम में मुगलिया हमलों के बावजूद यही एक मात्र श्रीविग्रह है, जो वृंदावन से कहीं बाहर नहीं गए इन्हें भक्तों ने वृंदावन में ही छुपाकर रखा। सबसे विशेष बात यह है कि जन्माष्टमी को जहाँ दुनिया के सभी कृष्ण मंदिरों में रात्रि बारह बजे उत्सव पूजा-अर्चना, आरती होती है, वहीं राधारमणजी का जन्म अभिषेक दोपहर बारह बजे होता है। मान्यता है कि ठाकुरजी अत्यंत सुकोमल होते हैं उन्हें रात्रि में जगाना ठीक नहीं है।

- वृंदावन में श्रद्धालुओं की भारी भीड़ को देखते हुए हमने निधिवन के दर्शन छोड़ दिए। चूँकि वहाँ कतारें बहुत लंबी थीं। हमने अपना समय अन्य मंदिरों के शांत दर्शनों में लगाना उचित समझा।

- शाम को श्री रंग जी मंदिर में दर्शन किए और टिकट लेकर सुनहरी मूर्ति कक्ष (स्वर्ण विग्रह), झाँकी और शीशे का महल भी देखा।

- फिर लाला बाबू मंदिर और गोपेश्वर महादेव के दर्शन किए, जहाँ महादेव गोपी रूप में विराजमान हैं।

- गोपेश्वर महादेव के दर्शन के बाद, हमने कात्यायनी माँ



शक्तिपीठ (सुबह 7:00 - 11:00, शाम 5:30 - रात 8:00) के पावन दरबार में हाजिरी लगाई। वृंदावन का कात्यायनी शक्तिपीठ (राधाबाग के पास) देश के 51 शक्तिपीठों में से एक अत्यंत पवित्र और सिद्ध पीठ है, जहाँ मान्यतानुसार माता सती के केश (बाल) गिरे थे। यह मंदिर देवी पार्वती के कात्यायनी रूप (नवदुर्गा में छठा रूप) को समर्पित है, जहाँ भगवान कृष्ण को पति रूप में पाने के लिए गोपियों और राधा रानी ने पूजा की थी। सौभाग्य से मंदिर में अधिक भीड़ नहीं थी, जिससे हमें अत्यंत शांतिपूर्ण और भावपूर्ण दर्शन प्राप्त हुए। माँ के चरणों में हमने माला, नारियल और दीप अर्पित किए। वहाँ बैठकर मैंने श्रद्धापूर्वक गायत्री मंत्र और दुर्गा सप्तशती (या देवी सर्वभूतेषु शक्ति रूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥...) के सिद्ध मंत्रों का जाप किया। मंत्रों के उच्चारण से पूरा वातावरण सकारात्मक ऊर्जा से भर गया था। इसके बाद हमने माँ की आरती 'अम्बे तू है जगदम्बे काली' पूरे भक्ति भाव से गाई। माँ कात्यायनी के दर्शन का अनुभव शब्दों में बयाँ करना कठिन है। माँ के वे दिव्य और शक्तिशाली नेत्र ऐसे थे, जिन्हें मैं कभी नहीं भूल सकता; ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो माँ अपनी करुणा भरी दृष्टि से सीधे भक्त के हृदय को देख रही हों। एक भक्त के रूप में, उस समय मन पूरी तरह शांत और निर्भय हो गया था। उनके तेज और ममतामयी स्वरूप के दर्शन कर ऐसा लगा मानो जीवन की सारी बाधाएँ दूर हो गई हों। शक्तिपीठ की वह आध्यात्मिक ऊर्जा और माँ का वह अनुपम स्वरूप आज भी मेरी आँखों के सामने जीवंत है। कात्यायनी माँ के वे दिव्य नेत्र अत्यंत मनमोहक थे।



हमने पूरे परिवार के साथ मंदिर की परिक्रमा भी की और माँ के चरणों में साष्टांग दंडवत प्रणाम कर अपना शीश झुकाया। यह सब माँ की असीम कृपा का ही फल है कि हमें फिर से उनके द्वार आने का अवसर मिला। विशेष रूप से मेरे बेटे के लिए यह क्षण बहुत भाग्यशाली रहा, क्योंकि वह पहली बार मथुरा आया है और उसे पहली ही यात्रा में माँ के पावन दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

जय माता दी!

चन्द्रहासोज्ज्वलकरा शार्दूलवरवाहन। कात्यायनी शुभं दद्याद्देवी दानवघातिनी ॥

- इसके बाद हम वृंदावन के अन्य मंदिर जैसे प्रेम मंदिर (भव्य लाइटिंग और फव्वारा शो, सुबह 8:30 - दोपहर 12:00 बजे एवं शाम 4:30 - रात 8:30 बजे।) और श्री श्री कृष्ण बलराम मंदिर (इस्कॉन) भी जा सकते थे, लेकिन थकान के कारण हमने उन्हें छोड़ दिया; साथ ही यह पहली बार नहीं था कि हम मथुरा आए थे।

मथुरा के हृदय में जन्मभूमि और द्वारकाधीश

हमारी यात्रा का अंतिम दिन मथुरा नगरी को समर्पित था, क्योंकि रात 9:20 बजे हमारी वापसी की ट्रेन थी।

1. श्री कृष्ण जन्मभूमि :

- सुबह 8:45 बजे हमने जन्मभूमि परिसर में प्रवेश किया। केशवदेव मंदिर में चल रहे भजनों के बीच हमने गर्भगृह और भागवत भवन के दर्शन किए। यहाँ की सुरक्षा व्यवस्था काफी सख्त है, इसलिए सामान कम रखें।

"राधे तेरा नाम अनमोल, जो बोले सो पाए। कान्हा तेरी बंशी की धुन, सोए भाग जगाए।"

2. विश्राम घाट और यमुना पूजन :

सुबह 9:35 बजे विश्राम घाट पहुँचकर यमुना जी का पूजन किया। यहाँ का वातावरण अत्यंत शांत और पवित्र है।

3. द्वारकाधीश मंदिर:

"कोई कहे घनश्याम तुझे, कोई कहे नटवर नागर। पर मेरे लिए तो तू ही है, मेरी भक्ति का अथाह सागर।"



- सुबह 10:00 बजे मंदिर के पट खुलते ही हमने राजाधिराज द्वारकाधीश के दर्शन किए। पुरुषों और महिलाओं की अलग कतारें होने से व्यवस्था सुचारू थी। दर्शन के बाद हमने मंदिर की परिक्रमा की और प्रसाद लिया।

यात्रियों के लिए विशेष सुझाव :

1. **जल्दी शुरुआत करें :** यदि आप गोकुल, नंदगाँव और बरसाना एक ही दिन में करना चाहते हैं, तो सुबह 6:00 बजे निकलें ताकि 1:00 बजे मंदिर बंद होने से पहले दर्शन हो सकें।

2. **परिवहन :** वृंदावन की संकरी गलियों के लिए ई-रिक्शा सबसे उत्तम है। गोवर्धन परिक्रमा के लिए बच्चों या बुजुर्गों के साथ ऑटो/ई-रिक्शा बुक करना बेहतर रहता है।

3. **बंदरों से सावधान :** वृंदावन (विशेषकर बाँके बिहारी और राधारमण मार्ग) में बंदर चश्मा और मोबाइल छीन लेते हैं। इन्हें जेब या बैग में सुरक्षित रखें।

4. **भोजन :** मथुरा के प्रसिद्ध पेड़े और कचौड़ी-सब्जी का आनंद अवश्य लें।

"नंदगाँव का वात्सल्य मिला, बरसाने का मिला दुलार।
गोवर्धन ने थामी उंगली, और वृंदावन ने दिया अपार प्यार।"

✦ समय के अभाव में हम गोकुल और दाऊजी नहीं जा पाए, लेकिन जो अनुभव हमें मिला, वह जीवन भर के लिए हमारी स्मृतियों में संचित हो गया। जय श्री कृष्णा! राधे-राधे!

"राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है।"

महात्मा गांधी

भीमाशंकर एक अविस्मरणीय यात्रा



तेजश्री मेहर



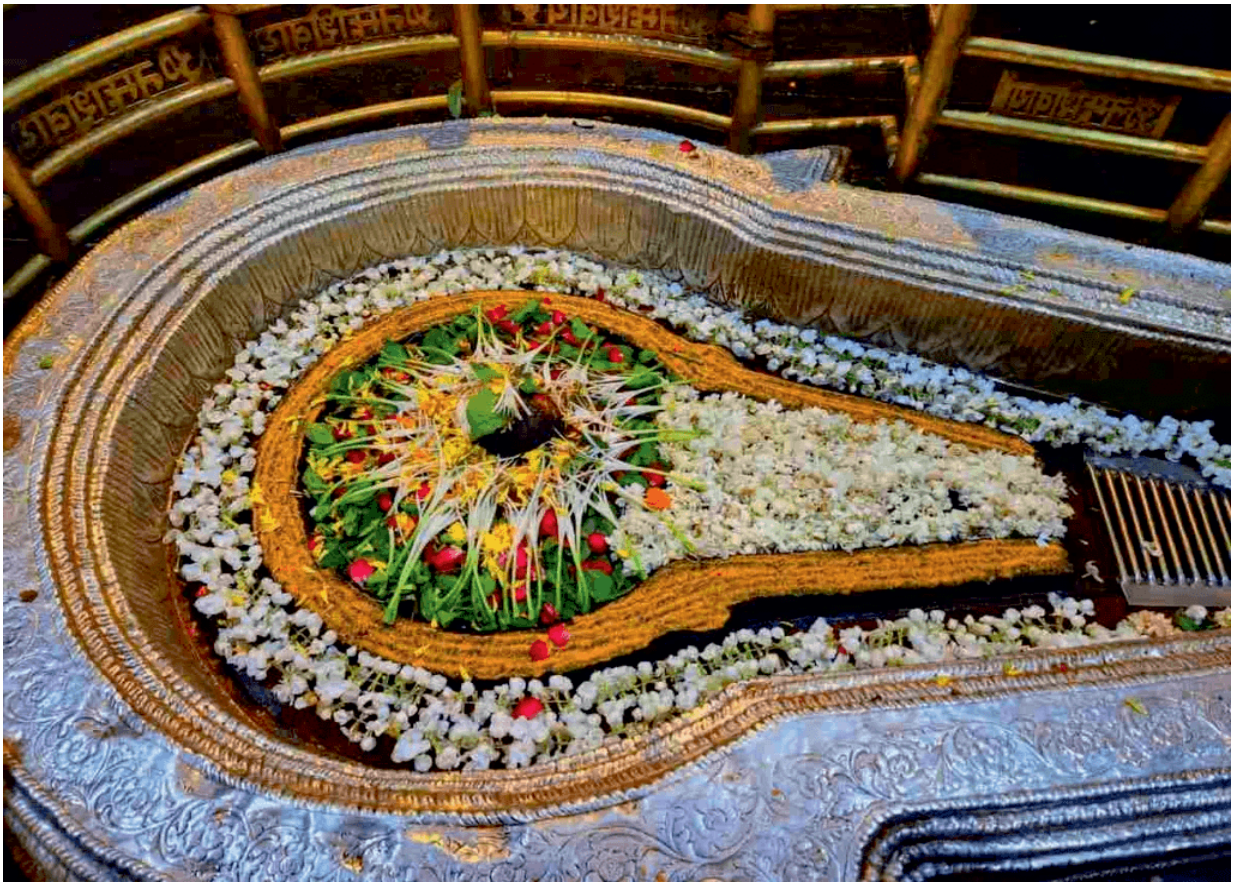
जब हम पहली बार किसी सपने को साकार करते हैं, तो वह अनुभव अविश्वसनीय होता है। मेरे जीवन में भी एक ऐसा सपना था, जिसे पूरा होने में पूरे 20 साल लग गए। भीमाशंकर अभयारण्य के बारे में मैंने बहुत छोटी उम्र में अपनी किताब में पढ़ा था। तभी से यह जगह मेरे मन में बस गई थी। मैं हमेशा उस दिन का बेसब्री से इंतजार करती थी कि कब मैं वहाँ जाऊँगी और आखिरकार 5 नवंबर 2025 का दिन मेरे लिए एक अविस्मरणीय दिन बन गया।

भीमाशंकर किसी के लिए सिर्फ एक जगह या तीर्थस्थल हो सकता है, लेकिन मेरे लिए यह एक सपना पूरा होने का क्षण था। हम चार सहेलियों ने निकलने का फैसला किया और सुबह निकल पड़े। मैंने पहले से ही पूरी योजना बना ली थी कि कहाँ जाना है, कैसे जाना है और क्या-क्या देखना है।

हमने भीमाशंकर में इन चार प्रमुख स्थानों का दर्शन किया:

- **भीमाशंकर ज्योतिर्लिंग**
- **भीमा नदी का उद्गम**
- **गुप्त भीमाशंकर**
- **मुंबई व्यू पॉइंट**

हालाँकि यहाँ देखने के लिए और भी कई स्थान हैं, लेकिन समय कम होने के कारण हम इन चार जगहों पर ही घूम सके, क्योंकि हमें उसी दिन रात को जल्दी वापस भी आना था। फिर भी वहाँ जाकर और भीमाशंकर के दर्शन करके मन को एक अद्भुत शांति मिली।



1) भीमाशंकर ज्योतिर्लिंग

यह भगवान शिव के 12 ज्योतिर्लिंगों में से छठा ज्योतिर्लिंग माना जाता है। यह मंदिर महाराष्ट्र के पुणे जिले के खेड तालुका में सह्याद्री पर्वतमाला में बोरगिरी गाँव में स्थित है। यह मंदिर 13वीं शताब्दी का है और महाराष्ट्र के तीन ज्योतिर्लिंगों में से एक है (अन्य दो: त्र्यंबकेश्वर और घृष्णेश्वर)। यहाँ का शिवलिंग स्वयंभू माना जाता है। यह मंदिर भीमाशंकर अभयारण्य के मध्य में स्थित है, जो जैव विविधता से समृद्ध है। शेकरू (भारतीय विशाल गिलहरी): महाराष्ट्र का राज्य पशु शेकरू मुख्य रूप से इसी जंगल में पाया जाता है।

2) भीमा नदी का उद्गम

इस स्थान का धार्मिक और ऐतिहासिक महत्व भी है। पौराणिक कथा के अनुसार, भगवान शंकर ने त्रिपुरासुर नामक राक्षस का वध करने के बाद इस सह्याद्री पर्वत पर विश्राम किया। उनके पसीने से ही भीमा नदी का उद्गम हुआ। यह नदी आगे जाकर पंढरपुर में अर्धचंद्राकार रूप में बहती है, इसलिए वहाँ इसे चंद्रभागा कहा जाता है। इसी नदी के किनारे विठ्ठल मंदिर स्थित है, जो महाराष्ट्र के वारकरी संप्रदाय और सभी हिंदुओं के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण तीर्थस्थल है। आषाढ़ी एकादशी के अवसर पर यहाँ बहुत बड़ी यात्रा (जत्रा) लगती है।

3) गुप्त भीमाशंकर

गुप्त भीमाशंकर तक पहुँचने के लिए हमें भीमाशंकर अभयारण्य के भीतर बहुत पैदल चलना पड़ा। प्रकृति का यह अनुभव हमें बहुत आनंद दे रहा था। और इसी कारण भीमाशंकर हमारे लिए और भी अविस्मरणीय बनता चला गया। यह रास्ता पत्थर, ऊँचे पेड़, झरने और अलग-अलग आवाजों से भरा हुआ था। रास्ते में कुछ कठिनाइयों के बावजूद, जब हम सब एक-दूसरे का हाथ पकड़कर आगे बढ़ते हुए गुप्त भीमाशंकर पहुँचे, तो वहाँ का नजारा बहुत सुंदर था। उस समय मेरे पास कहने के लिए शब्द ही नहीं थे। उस अभयारण्य में आने वाली सारी परेशानियाँ और अलग-अलग कठिनाइयाँ (मैं फिसल गई थी और मेरे पैर में भी चोट लगी थी) हम सब भूल गए। उस रहस्यमयी भीमाशंकर पर्वत की तलहटी से लगातार पानी गिर रहा था

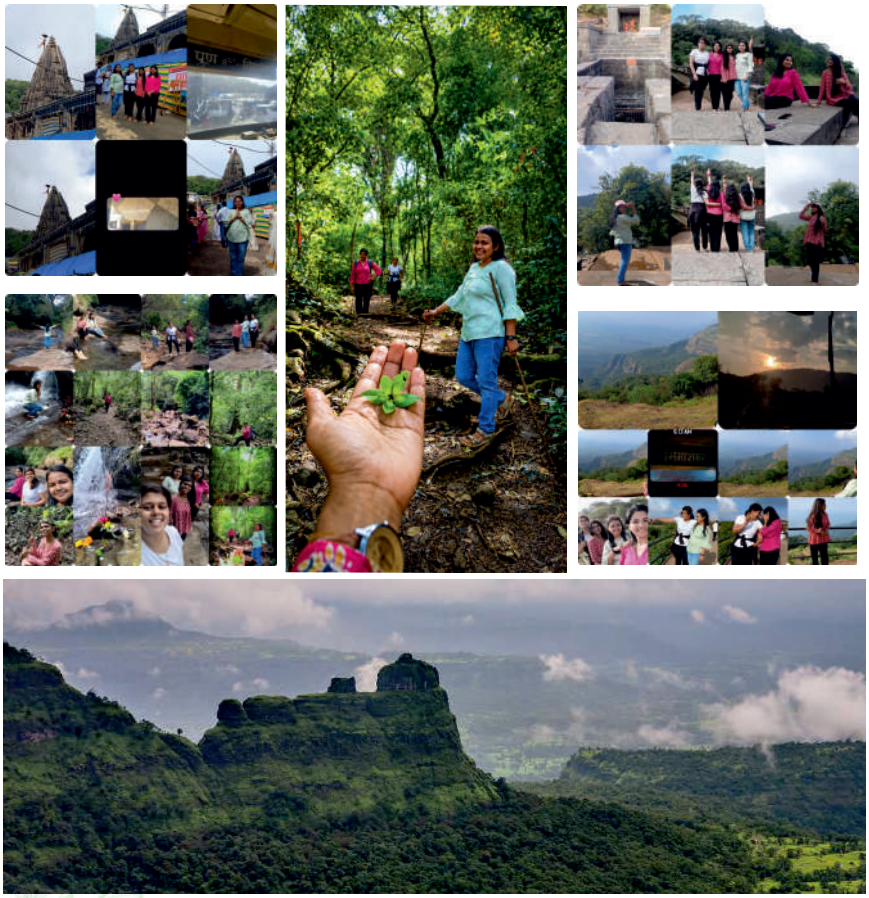
और वहाँ गुप्त भीमाशंकर का दर्शन अत्यंत गहन और मन को तृप्त करने वाला था। आज भी वह दृश्य मेरी आँखों में बसा हुआ है, जो मन को छू गया था। गुप्त भीमाशंकर के दर्शन करते समय बहुत ध्यान रखना पड़ता है, क्योंकि नीचे गहरी खाई है।

लेकिन वहाँ तक पहुँचना एक ऐसी खुशी थी, जिसकी किसी भी चीज से तुलना नहीं की जा सकती। यह एक अनुपम संतोष था और वहाँ स्वयं में समाहित शिवलिंग आज भी मेरी आँखों में दिखाई देता है और मन को शांति देता है। उस समय हमें ऐसा महसूस हुआ कि स्वर्ग कहीं दूर नहीं, बल्कि यहीं था... बेहद अद्भुत!

4) मुंबई व्यू पॉइंट

इसे बॉम्बे पॉइंट भी कहा जाता है। यहाँ से कोंकण घाटी और सह्याद्री पर्वतों के ऊँचे शिखरों का अद्भुत दृश्य दिखाई देता है। यहाँ से स्वच्छ हवा में मुंबई और कोंकण के आसपास के क्षेत्रों का सुंदर नजारा देखा जा सकता है। यहाँ से घाटियों का मनोरम दृश्य और सूर्यास्त का आनंद लिया जा सकता है। यहाँ हर जगह इस अद्भुत दृश्य का मार्गदर्शन किया गया है, जैसे कि कोंकण कड़ा 1100 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है - यह जानकारी भी लिखी गई है। हमने वहाँ सूर्यास्त का आनंद लिया। यह दृश्य मन मोह लेने वाला था, मुंबई पॉइंट बस स्टेशन के पीछे ही स्थित है।

उस दिन मेरा बचपन का सपना सच हो गया। यहाँ की अद्भुत प्रकृति को देखकर मन मोहित हो गया। जब मैं छोटी थी तब जो दृश्य मेरे मन में था, वही दृश्य मेरे सामने था। सिर्फ एक अफसोस था कि हमें वहाँ शेकरू नामक पशु नहीं दिखा, जबकि उसे वहाँ बहुत महत्व प्राप्त है। शेकरू को भीमा का बेटा भी माना जाता है। हमने यह यात्रा एक ही दिन में पूरी की और इस यात्रा के दौरान हमने बहुत आनंद लिया और इस तरह मेरे लिए भीमाशंकर की यह यात्रा सच में एक अविस्मरणीय यात्रा बन गई।



मुंबई यात्रा



नितीन कराळे

11 अप्रैल की सुबह थी। सूरज अभी पूरी तरह निकला भी नहीं था, लेकिन हमारे मन में उत्साह पहले ही चमक रहा था। बैग पैक हो चुके थे और दिल में एक ही ख्याल था — "आज हम मुंबई जा रहे हैं!"

जैसे ही सफर शुरू हुआ, रास्ते की हर छोटी-बड़ी बात खास लगने लगी। दोस्तों और परिवार के साथ हँसी-मजाक करते हुए कब समय बीत गया, पता ही नहीं चला। लेकिन जैसे ही मुंबई शहर की पहली झलक दिखाई दी, ऐसा लगा जैसे हम किसी फिल्म के सीन में आ गए हों — ऊँची-ऊँची इमारतें, भागती-दौड़ती जिंदगी और हर तरफ एक अलग-सी ऊर्जा।

मुंबई की असली पहचान उसका समुद्र है। शाम को जब हम मरीन ड्राइव पहुँचे, तो सामने फैला विशाल समुद्र और ठंडी हवा ने पूरे दिन की थकान पल भर में दूर कर दी।

सूरज धीरे-धीरे ढल रहा था और आसमान सुनहरे रंग में रंग चुका था। लहरों की आवाज, हल्की हवा और आसपास बैठे लोगों की मुस्कान — उस पल में एक अजीब-सी शांति थी। हम सब चुपचाप उस दृश्य को महसूस कर रहे थे, मानो समय थोड़ी देर के लिए रुक गया हो।

यह करीब 3.6 किलोमीटर लंबा समुद्र किनारे पर बना हुआ रास्ता है, जो नरिमन पॉईंट से लेकर चौपाटी तक फैला हुआ है। मरीन ड्राइव को "रानी का हार" कहा जाता है, क्योंकि रात में यहाँ की स्ट्रीट लाइट्स एक हार की तरह चमकती हैं। यहाँ बैठने के लिए खास काले पत्थर लगाए गए हैं, जिन पर बैठकर लोग समुद्र को निहारते हैं। ऐसा लगता है मानो किसी रानी ने समुद्र किनारे पर चमकता हुआ हार पहन रखा हो। समुद्र की लहरों से सुरक्षा के लिए यहाँ बड़े-बड़े कंक्रीट के पत्थर लगाए गए हैं, जो लहरों की ताकत को तोड़ते हैं। यह जगह मुंबई के सबसे लोकप्रिय पर्यटन स्थलों में से एक है। बॉलीवुड फिल्मों में भी मरीन ड्राइव को बार-बार दिखाया गया है, जिससे इसकी पहचान और भी खास बन गई है। पास में वानखडे स्टेडियम है, जहाँ कई ऐतिहासिक क्रिकेट मैच खेले गए हैं। नजदीक ही गेट वे ऑफ इंडिया और ताज महल पैलेस होटल जैसे ऐतिहासिक स्थल भी हैं।







मरीन ड्राइव की शाम

गेटवे ऑफ इंडिया — मुंबई का ऐतिहासिक प्रवेशद्वार। यह सिर्फ एक स्मारक नहीं, बल्कि मुंबई की पहचान भी है। यह एक ऐसा स्थान है, जहाँ इतिहास, वास्तुकला और समुद्र एक साथ मिलते हैं। गेटवे ऑफ इंडिया मुंबई के अपोलो बंदर क्षेत्र में समुद्र किनारे स्थित एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्मारक है।



इसके सामने अरेबियन समुद्र फैला हुआ है और पास में ताज महल पैलेस होटल स्थित है। इसका निर्माण 1911 में किंग जॉर्ज पंचम और रानी मैरी के भारत आगमन की याद में शुरू हुआ और 1924 में पूरा हुआ। यह ब्रिटिश काल में भारत का मुख्य प्रवेश द्वार था। 1948 में अंतिम ब्रिटिश सेना यहीं से भारत छोड़कर गई, इसलिए यह स्वतंत्रता का प्रतीक भी माना जाता है। यह लगभग 26 मीटर ऊँचा है और इंडो-सरसेनिक शैली में बना है, जिसमें हिंदू, मुस्लिम और यूरोपीय वास्तुकला का मिश्रण है। इसे पीले बेसाल्ट पत्थरों से बनाया गया है और इसकी भव्य मेहराब एवं नक्काशी इसे आकर्षक बनाती है।

आज यह मुंबई का प्रमुख पर्यटन स्थल है। यहाँ से एलीफेंटा गुफाओं के लिए नाव मिलती है और यह स्थान पर्यटकों, फोटोग्राफरों और स्थानीय लोगों का पसंदीदा केंद्र है।

गेटवे ऑफ इंडिया केवल एक स्मारक नहीं, बल्कि इतिहास, वास्तुकला और मुंबई की पहचान का प्रतीक है।

संग्रहालय का भ्रमण

गेट वे ऑफ इंडिया की भव्यता देखने के बाद हमारा अगला पड़ाव था संग्रहालय का भ्रमण। जहाँ मुंबई का इतिहास, कला और संस्कृति एक साथ देखने को मिलते हैं।

छत्रपति शिवाजी महाराज वास्तु संग्रहालय: जिसे पहले प्रिंस ऑफ वेल्स म्यूजियम ऑफ वेस्टर्न इंडिया के नाम से जाना जाता था। एक शानदार इमारत, जो बाहर से ही किसी महल जैसी लगती है। अंदर प्रवेश करते ही जैसे हम समय में पीछे चले गए हों... यहाँ प्राचीन मूर्तियाँ, ऐतिहासिक वस्तुएँ, हथियार और अलग-अलग सभ्यताओं की झलक देखने को मिली। संग्रहालय के संग्रह में लगभग 50,000 कलाकृतियाँ शामिल हैं। संग्रहालय के संग्रह को मुख्य रूप से तीन वर्गों में वर्गीकृत किया गया है- कला, पुरातत्व और प्राकृतिक इतिहास। संग्रहालय में एक वानिकी अनुभाग भी है। इतिहास प्रदर्शनी कक्ष में भारत के पुराने समय की कहानियाँ, कला प्रदर्शनी कक्ष में सुंदर पेंटिंग्स और मूर्तियाँ, प्राकृतिक इतिहास सेक्शन में दुर्लभ जीव-जंतु। हर एक वस्तु अपने आप में एक कहानी कह रही थी। प्राकृतिक इतिहास विभाग ने बच्चों को सबसे ज्यादा आकर्षित किया। यहाँ अलग-अलग जानवरों, पक्षियों और उनके मॉडल देखकर बच्चे बहुत उत्साहित हो गए। जब बच्चे मुद्रा प्रदर्शनी में पहुँचे, तो उन्हें पुराने समय के देशों की मुद्राओं के अलग-अलग सिक्के देखने को मिले।

फैशन स्ट्रीट मुंबई

शाम हो गई थी और हमें मुंबई में खरीदारी करनी थी। हम फैशन स्ट्रीट क्षेत्र में पहुँच गए। फैशन स्ट्रीट मुंबई का प्रसिद्ध कपड़ा बाजार है। वहाँ बहुत भीड़ थी और हर तरफ रंग-बिरंगी दुकानें लगी थीं। कपड़े, जूते, बैग और चश्मे — सब कुछ सस्ता और अच्छा मिल रहा था। हमने खूब खरीदारी की और बच्चों ने भी अपने लिए कई चीजें खरीदीं, जिससे वे बहुत खुश हुए। दुकानदार ग्राहकों को अपनी

ओर आकर्षित करने के लिए अलग-अलग आवाजें लगा रहे थे। वहाँ का माहौल बहुत उत्साहपूर्ण और आनंददायक था। घूमते-घूमते हमने सड़क किनारे मिलने वाले स्वादिष्ट व्यंजनों का भी आनंद लिया। यह अनुभव हमारी मुंबई यात्रा की सबसे यादगार बातों में से एक बन गया।


छत्रपति शिवाजी महाराज वास्तु संग्रहालय

नेहरू विज्ञान केंद्र

नेहरू विज्ञान केंद्र जाने का अनुभव हमारे लिए बहुत ही खास रहा। खासकर बच्चों के लिए यह जगह किसी जादुई दुनिया से कम नहीं थी। ये मुंबई में स्थित एक बड़ा विज्ञान संग्रहालय है। यह भारत के सबसे बड़े इंटरएक्टिव विज्ञान केंद्र में से एक है। यहाँ अलग-अलग गैलरी और 3डी शो भी हैं, जहाँ विज्ञान को अधिक आसान और रोचक तरीके से समझाया जाता है।



नेहरू विज्ञान केंद्र

नेहरू तारामंडल

हम अंतरिक्ष और ज्ञान की दुनिया में जा रहे थे। नेहरू तारामंडल वर्ली, मुंबई परिसर में स्थित है। हम नेहरू तारामंडल पहुँचे। अंदर एक बड़ा गोल हॉल था, जैसे कोई थिएटर, लेकिन थोड़ा अलग। जैसे ही हम बैठे, लाइट्स बंद हुईं और अचानक पूरी छत आसमान में बदल गई। सितारे चमकने लगे, ग्रह घूमने लगे। ऐसा लग रहा था, मानो हम सच में अंतरिक्ष में पहुँच गए हों। बच्चे तो पूरी तरह उस


नेहरू तारामंडल

दुनिया में खो गए थे। उस कुछ मिनटों के शो ने हमें ब्रह्मांड की विशालता का एहसास करा दिया।

नेहरू केंद्र

इसके बाद हम नेहरू केंद्र पहुँचे। नेहरू तारामंडल के बगल में नेहरू केंद्र स्थित है। यहाँ का माहौल थोड़ा शांत और ज्ञान से भरा हुआ था। अंदर 'डिस्कवरी ऑफ इंडिया' की प्रदर्शनी में भारत के इतिहास, संस्कृति और सभ्यता को बहुत सुंदर तरीके से दिखाया गया था। प्राचीन घटनाएँ, महान व्यक्तित्व और देश की यात्रा - सब कुछ देखकर ऐसा लग रहा था, जैसे हम समय के साथ आगे बढ़ रहे हों।

बच्चे भी बड़ी उत्सुकता और ध्यान से हर चीज देख रहे थे। कभी सवाल पूछते, तो कभी आपस में चर्चा करते। तीसरे दिन हमने आसमान की ऊँचाइयों को भी देखा और अपने देश की गहराई को भी समझा।

इतिहास और हरियाली

चौथे दिन की शुरुआत हरियाली और इतिहास के संग हुई। आज का दिन थोड़ा शांत, लेकिन उतना ही यादगार था।

रानी बाग (वीरमाता जीजाबाई भोसले उद्यान तथा प्राणी संग्रहालय)

सबसे पहले हम वीरमाता जीजाबाई भोसले उद्यान तथा प्राणी संग्रहालय पहुँचे, जिसे आमतौर पर रानी बाग कहा जाता है। यहाँ चारों तरफ हरियाली, पेड़-पौधे और विभिन्न पशु-पक्षियों को देखकर बच्चों का उत्साह बढ़ गया। शेर, हिरण, पक्षी और अन्य जीव-जंतु — हर कोई अपनी दुनिया



भाऊ दाजी लाड संग्रहालय

में था और बच्चे उन्हें देखकर बहुत खुश हो रहे थे। यह जगह शहर की भागदौड़ के बीच शांति और प्रकृति का एहसास कराती है।

भाऊ दाजी लाड संग्रहालय

इसके बाद हम डॉ. भाऊ दाजी लाड संग्रहालय गए। यह मुंबई का सबसे पुराना संग्रहालय है, जहाँ शहर का इतिहास, पुरानी कलाकृतियाँ और मॉडल बहुत सुंदर तरीके से रखे गए हैं। अंदर का इंटीरियर बहुत ही आकर्षक था। पुरानी लकड़ी की डिजाइन और सजावट देखकर ऐसा लगा जैसे हम किसी पुराने समय में पहुँच गए हों।

श्री सिद्धिविनायक मंदिर — आस्था का पावन स्थल

इसके बाद हम श्री सिद्धिविनायक मंदिर पहुँचे। यह मंदिर भगवान गणपति को समर्पित मुंबई के सबसे प्रसिद्ध मंदिरों में से एक है। मंदिर में प्रवेश करते ही मन में अद्भुत शांति और श्रद्धा का भाव उत्पन्न हो गया। यह मंदिर प्रभादेवी, मुंबई में शिवाजी पार्क मैदान के पास स्थित है। यहाँ की गणपति मूर्ति "नवसाला पावणारा" अर्थात मनोकामनाएँ पूर्ण करने वाली मानी जाती है। मूर्ति की सूंड दाईं ओर मुड़ी हुई है — जिसे अत्यंत शुभ माना जाता है। देशभर के बड़े-बड़े लोग और फिल्मी सितारे भी यहाँ दर्शन के लिए आते हैं। मंदिर में प्रवेश करते ही भक्तों की भीड़, घंटियों की आवाज़ और "गणपति बप्पा मोरया" के जयघोष से पूरा वातावरण भक्तिमय हो गया। हमने श्रद्धापूर्वक दर्शन किए और मन में शांति, सुख तथा सकारात्मक ऊर्जा का अनुभव किया।

शिवाजी पार्क

फिर हम शिवाजी पार्क पहुँचे। यह मुंबई का एक बहुत प्रसिद्ध मैदान है। शिवाजी पार्क मैदान का नाम सिर्फ सुना था, पर उसे देखने की हमारी बहुत इच्छा थी। यहाँ बच्चे



छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस

खेल रहे थे, लोग टहल रहे थे और चारों तरफ एक अलग ही ऊर्जा थी। यह सिर्फ एक मैदान नहीं, बल्कि मुंबई की संस्कृति और इतिहास का हिस्सा है।

इसके बाद हम घर की ओर निकल पड़े — पुणे की तरफ। दिल में हल्की सी उदासी थी। लेकिन उससे कहीं अधिक सुंदर यादें थीं। चार दिनों का यह मुंबई प्रवास हमारे लिए अत्यंत यादगार रहा। हमने कई स्थल देखे, समुद्र किनारे पर समय बिताया, नाव की सवारी का आनंद लिया, बगीचों में घूमे और मशहूर रेस्टोरेंट में स्वादिष्ट खाना भी खाया। रास्ते में हमने मंत्रालय मुंबई और शिवसेना भवन, छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनल स्टेशन, बांद्रा-वर्ली सी लिंक जैसे महत्वपूर्ण स्थान भी देखे। मुंबई — जो महाराष्ट्र की राजधानी, देश की आर्थिक राजधानी और फिल्मी दुनिया का शहर है — उसने हमें हर पल कुछ नया सिखाया। इस सफर में हमने केवल जगहें नहीं देखीं, बल्कि हर पल को जिया, हर अनुभव को महसूस किया। हँसी, मस्ती, घूमना-फिरना और नए अनुभव — इन चार दिनों ने दिल में एक खास जगह बना ली।

जब हम लौट रहे थे, तो बस एक ही ख्याल था —

"मुंबई फिर बुलाएगी..."


म्हातारीचा बूट गार्डन
संग्रहालय का ऐतिहासिक अनुभव
शिवसेना भवन
मंत्रालय, मुंबई
श्री सिद्धिविनायक मंदिर

कविता

कल किसने देखा....



नीलिमा साहू

क्षणभंगुर है यह जीवन, हर दिन सौ दिन सा जी ले तू

जो वक्त मिला है किस्मत से,
हर क्षण को खुलकर जी ले तू।
इक आज ही है जो है अपना
जो कल सोचा तो है सपना
पूरे करने जो सपने हो
तो आज ही कदम बढ़ा ले तू।

क्षणभंगुर है यह जीवन, हर दिन सौ दिन-सा जी ले तू

कुछ दिल में है जो बताना है
कुछ सुनना है कुछ सुनाना है
सब शिकवे गिले खतम करके,
रूठो को मनाना है प्यार है बहुत हमें तुमसे,
उनको ये जतलाना है मत छोड़ो तुम ये कल के लिए,
ना कल के लिए एक पल के लिए
कहाँ पता किसको है पता,
ये सुंदर दिन फिर आएगा ????

क्षणभंगुर है यह जीवन, हर दिन सौ दिन-सा जी ले तू

कितना कुछ है जो भाता है
कल कर लूँगा मन में आता है
गाना मैं एक दिन सीखूँगा,
लिख लूँगा एक दिन सोचूँगा
ये कर लूँगा वो कर लूँगा, सब कुछ कल मैं कर लूँगा
कल है भी क्या किसने देखा ????

क्षणभंगुर है यह जीवन, हर दिन सौ दिन-सा जी ले तू

ये कल कल कल के जीवन में,
तुम भी कल बन जाओगे
सब रह जाएगा ही मन में,
न चैन से तुम मर पाओगे
बस इक सच है जो आज ही है
उस आज में खुलकर हँस ले तू ..

क्षणभंगुर है यह जीवन, हर दिन सौ दिन-सा जी ले तू

ख्वाहिशों की इक फेहरिस्त बना
फेहरिस्त पे अपना निशान तू लगा
कितना हुआ पूरा और शेष है क्या?
कर अब से शुरू, बारी-बारी
इस फेहरिस्त को पूरा कर ले तू

क्षणभंगुर है यह जीवन, हर दिन सौ दिन-सा जी ले तू

तुम्हारी है, तुम ही संभालो ये दुनिया



सायली गोडबोले

इक पल में, पधारे नए जीव हजारों
उसी पल में, गायब जिंदगी यारों
नहीं पता है, मनाऊँ गम या खुशियाँ
तुम्हारी है, तुम ही संभालो ये दुनिया।

मिले कामयाबी, कुछ ना करके
कभी घिसने पर भी, ना किस्मत चमके
करूँ प्रयास मैं, या बैठूँ थाम कर हथेलियाँ
तुम्हारी है, तुम ही संभालो ये दुनिया।

किसी को समझाऊँ, तो कोई और गुस्सा
कहीं मलहम लगाऊँ, तो बिगड़े कोई और किस्सा
कितना ही भरके हैं, अतृप्त यहाँ झोलियाँ
तुम्हारी है, तुम ही संभालो ये दुनिया।

कोई फेंके खाना, ना किसी को दो बूँद पानी
कोई मनाए बुढ़ापा, किसी को शापित जवानी
कहीं सोने के बिस्तर हैं, कहीं ना नसीब कुटिया
तुम्हारी है, तुम ही संभालो ये दुनिया।

अगर मिले जो चाहे, फिर भी क्या है मेरा?
कुछ पलों की रोशनी, फिर सदा का अंधेरा
हूँ मुसाफिर मैं, कुछ देर घूम लूँ ये गलियाँ
तुम्हारी है, तुम ही संभालो ये दुनिया।

हर अंधियारे के बाद, आएगा सवेरा
मुस्कुराकर फिर, चमकेगा जीवन सुनहरा
उम्मीद की किरणों से, महकेंगी ये दुनिया
तुम्हारी है, तुम ही संभालो ये दुनिया।

कोशिशों से ही रास्ते, नए बन जाते हैं
गिरकर संभलने वाले ही, आगे बढ़ पाते हैं
हौसलों से सजती हैं, जीवन की खुशियाँ
तुम्हारी है, तुम ही संभालो ये दुनिया।

दौड़ती जिंदगी, ठहरते रिश्ते



तेजस विलास मुर्डीव

दोस्ती अब चैट में सिमट गई,
चाय की महफिल गायब हुई।
लाइक और इमोजी के खेल में,
गहरी बातें कहीं खो गईं।।

ऑफिस में सब साथ तो हैं,
पर नजरों में दूरी रहती है।
मेल, मीटिंग, टार्गेट की भागदौड़,
दिल की बातें अधूरी रहती हैं।।

घर में परिवार तो रहता है,
पर वक्त देने का वक्त नहीं।
स्क्रीन की दुनिया में उलझे हैं,
आँखों में अपनापन कम सही।।

संगिनी पास फिर भी दूर लगे,
बातें अब छोटी रह गईं।
सपनों की चाहत में भागते रहे,
रिश्तों की गरमी ठंडी रह गई।।

बच्चे बड़े हो रहे हैं चुपचाप,
कहानियाँ अब कोई कहता नहीं।
कभी थे जो माँ-बाप के साये,
अब साये भी साथ रहते नहीं।।

काम की दौड़ में इतना खोए,
खुद से भी रिश्ता टूट गया।
पाने की कोशिश में सब कुछ,
जो पास था, वो छूट गया।।

चलो, रुकें, संभलें जरा,
रिश्तों में फिर से जान भरें।
चंद लम्हे दें अपनों को,
प्यार से रिश्तों को सँवारें।।

कुछ पल माँ के संग बैठें,
पिता की बातें सुनते जाएँ।
दोस्तों को फिर गले लगाकर,
पुराने किस्से दोहराएँ।।

जिंदगी की असली दौलत,
ना शोहरत है, ना नाम बड़ा।
जो दिलों में प्यार बचा ले,
वही इंसान है सबसे बड़ा।।

पिता क्या होता है?



राजेश दगडू आबणावे

पिता क्या होता है?

पिता जीने का एक मापदंड होता है,
वो पीठ पर रखा हुआ हौसला देने वाला हाथ होता है।

कभी डाँटता भी है,
लेकिन उसका प्यार असीम होता है,
वही तो पिता होता है।

पिता वो सीढ़ी है जो हमें हमारे लक्ष्य तक पहुँचाती है,
वो नाव है जो हमें हर संकट से पार लगाती है।

कभी उसका व्यवहार कठोर लगता है,
लेकिन उसमें पूरी जिंदगी की मिठास छुपी होती है।

पिता अनुशासन का एक साया है,
जिससे जीवन अपने आप सही राह पर चलता है।

पूरी जिंदगी के समंदर में,
वो एक दीपस्तंभ की तरह हमें राह दिखाता है—

वही तो पिता होता है।



भारत एक लोकतंत्र



शशांक कुमार

भारत की धरती पावन है,
यह लोकतंत्र की शान है,
जनता की आवाज से चलती,
यह भारत की पहचान है।

कभी वादों की वर्षा होती,
कभी भाषणों की बौछार,
कभी विकास की बातें होतीं,
कभी होता आरोपों का वार।

नेता आते मंच सजाकर,
सपनों का संसार दिखाते,
जनता की उम्मीदों को लेकर,
नई सुबह के गीत सुनाते।

कुछ सच में सेवा करते हैं,
देश को आगे बढ़ाते हैं,
कुछ सत्ता की चाहत में,
बस अपने ही स्वार्थ निभाते हैं।

फिर भी जनता जाग रही है,
समय की चाल पहचान रही है,
सही गलत का निर्णय करके,
लोकतंत्र की लाज बचा रही है।

भारत की राजनीति में,
उम्मीदों की लौ जलती है,
जब जनता जागरूक हो जाए,
तभी असली जीत मिलती है।

कथा कहानी

गाँव का चूल्हा



देवेन्द्र कुमार

हमारे गाँव में एक पुराना-सा घर है, मिट्टी की दीवारों वाला। उसी घर के आँगन में जलता है एक चूल्हा। देखने में साधारण, मगर उस चूल्हे की आग में पूरे घर की जिंदगी बसती है। उसी घर में रहता है कल्लू और उसकी माँ धनिया बाई।

कल्लू का बाप बहुत पहले चल बसा। तब से धनिया बाई ही घर की माई-बाप है। सुबह अँधेरा रहते उठती है, चूल्हा सुलगाती है और फिर गाँव के खेतों में काम करने निकल पड़ती है। चूल्हा जलता है तो घर में जान आती है, नहीं तो पूरा घर सूना लगने लगता है।

धनिया बाई कहा करती—

“बिटवा, चूल्हा बुझ गया तो समझ ले घर बुझ गओ।”

कल्लू पढ़ने में होशियार है। गाँव के मास्टर जी कहते हैं—

“इ लड़का आगे चल के नाम रोशन करिहै।”

मगर पढ़ाई के साथ पेट भरना भी जरूरी है। कई दिन ऐसे आते जब घर में अनाज कम पड़ जाता।

एक दिन धनिया बाई बीमार पड़ गई। बुखार में तप रही थी। चूल्हा ठंडा पड़ा रहा। कल्लू ने देखा तो उसकी आँखें भर आईं। उसने माँ से कहा—

“माई, तू आराम कर, आज चूल्हा मैं जलाऊँगा।”

कल्लू ने लकड़ियाँ जोड़ीं, फूँक मारी, आँखें जल गईं, धुआँ उठा, मगर आग सुलग गई। उस दिन बनी रोटी में स्वाद कम था, मगर ममता ज्यादा थी।

माँ ने कमजोर आवाज में कहा—

“बिटवा, आज समझ आयो कि चूल्हा जलाना मतलब जिम्मेदारी निभाना।”

उस दिन के बाद कल्लू की सोच बदल गई। अब वह सिर्फ अपने लिए नहीं, माँ और घर के लिए भी सपने देखने लगा। सुबह पढ़ाई, दोपहर काम, शाम को माँ की मदद और रात को चूल्हे के पास बैठकर किताब।

गाँव वाले हँसते—



“अरे कल्लू, किताब लेके का होइहै? शहर जाके का करेगा?”

कल्लू मुस्करा के कहता—

“काका, इ चूल्हा सिखायो है—रुकना नाहीं।”

साल बीतते गए। कल्लू ने मेहनत नहीं छोड़ी। मास्टर जी की मदद से उसे शहर में पढ़ने का मौका मिला। गाँव से जाते वक्त उसने माँ के चरण छुए। धनिया बाई ने चूल्हे की राख उसके माथे पर लगाई और बोली—

“जा बिटवा, जहाँ भी रहे, अपने चूल्हा की गरमी मत भूलना।”

शहर में कल्लू को बहुत कठिनाई आई। अकेलापन, गरीबी, ताने—सब झेलने पड़े। जब मन टूटने लगता, तो उसे माँ का चूल्हा याद आता—धीरे-धीरे सुलगता, मगर बुझता नहीं।

कई साल बाद कल्लू अफसर बनकर गाँव लौटा। वही घर, वही आँगन, वही चूल्हा। उसने गाँव में बच्चों के लिए एक पाठशाला खुलवाई। गरीब बच्चों को पढ़ने का मौका मिला।

धनिया बाई अब बूढ़ी हो चली थी। एक दिन उसने चूल्हे के पास बैठकर कहा—

“देख बिटवा, इ चूल्हा अब अकेले हमारे घर का नाहीं, पूरे गाँव का उजास बन गओ।”

कल्लू ने चूल्हे की आग देखी। उसे लगा जैसे वह आग कह रही हो—

“जो जिम्मेदारी उठाए, वही आगे बढ़े।”



परवरिश



डॉ. अनामिका कुमारी

स्कूल से घर आने के बाद मिसेज दास अपने घर के कामों में व्यस्त थीं। अपनी चुलबुली लाड़ली परी 'प्रीशा' की प्यारी बातों को याद करते हुए, उसके छोटे-छोटे बाल सुलभ प्रश्न उसकी अनुपस्थिति में भी उनके मन में हर्ष और गुदगुदी भर रहे थे। वह छ: वर्ष की ही थी पर उसकी बातें उसके हम उम्र बच्चों से कहीं अधिक समझदारी भरी होती थीं। यही कारण था कि उसके दोस्तों में से कुछ ने उसे 'गूगल दीदी' के नाम से बुलाना शुरू कर दिया था। उस छोटी-सी बच्ची के लिए यह बहुत ही गुस्सा दिलाने का काम करता था।

वह खिझती हुई घर आकर अपनी माँ से बहुत ही मासूमियत के साथ उन दोस्तों की शिकायत करती - "ये सभी मुझे 'गूगल दीदी' क्यों कहते हैं माँ?"

और मिसेज दास बस एक छोटी-सी मुस्कान के साथ उसकी सभी समस्याओं का समाधान उसे अपनी बाहों में भरकर प्यार से चूमते हुए कर देती थीं। उसकी नाराजगी बहुत क्षणिक होती थी।

आज भी शाम की वही जिद "मैं बाहर जा रही हूँ माँ! दोस्तों के साथ खेलने।" और मिसेज दास के कानों तक दरवाजे के खुलने और बंद होने की आवाज आई थी।

मिसेज दास बड़े शहर के भाग-दौड़ वाले जीवन से दूर एक छोटे कस्बे में अपनी बेटी के साथ रहती थीं। वह इस कस्बे के एक छोटे से स्कूल में नैतिक शिक्षा विषय की शिक्षिका थीं। प्रीशा उनके जीवन की एक मात्र लक्ष्य थी, जिसे वह अपनी तरफ से एक नेक, साहसी और वर्तमान समय के चकाचौंध से दूर रख कर महापुरुषों के जीवन के ऊँचे आदर्श से भरी कहानियों और बातों से प्रेरित करती रहती थीं। दूसरी ओर वह उसे तात्कालिक विज्ञान एवं तकनीकी विकास से जुड़े रहने के लिए भी साधन मुहैया करवाती थी। शायद यही कारण था कि प्रीशा अन्य बच्चों के बीच बड़ी-बड़ी बातें करती थी। जिसके कारण सभी दोस्तों ने उसे 'गूगल दीदी' कहना शुरू कर दिया था।

अभी मिसेज दास घर के कामों से फुरसत निकाल कर स्कूल से मिले कुछ कार्य को लेकर बैठी ही थीं कि अचानक दरवाजे पर दस्तक सुनाई दी। उन्होंने सोचा शायद प्रीशा किसी से नाराज होकर जल्दी घर लौट आई हो। इन्हीं उलझनों में खोई हुई उन्होंने दरवाजा खोला तो बाहर का दृश्य देखकर वह अचंभित रह गईं। प्रीशा खुद से थोड़ी बड़ी लड़की का हाथ थामे दरवाजे पर ऐसे खड़ी थी मानो वह गली से किसी बिल्ली के बच्चे को स्नेहवश गोद में उठा लाई हो, जो उसे कभी नहीं छोड़ने वाली पकड़ प्रतीत हो रही थी।

शुरुआत में तो मिसेज दास को कुछ समझ में नहीं आया।

उन्होंने प्रीशा से थोड़ी कठोरता से पूछा, "अब ये क्या है प्रीशा?.... कौन है ये?.. क्यों पकड़ी हो इसे.. ?"



इतने सारे प्रश्न एक बार में! और वो भी माँ के कठोर लहजे में.. प्रीशा का मन सहमकर भारी हो गया।

वह रुआँसी हो कर बोली, "माँ आपने ही तो जरूरतमंदों की मदद करने की बात कही है न, इसलिए मैं इस रोती हुई दीदी को आपके पास लेकर आई हूँ। हमें अंदर तो आने दो न प्लीज।"

उसके इस प्यारे आग्रह को मिसेज दास टाल नहीं पायी और उन्होंने दोनों को अंदर बुला लिया। अंदर आते ही प्रीशा उस लड़की को पानी का गिलास देती हुई बोली

"कुछ खाना है?"

"भूखी हो न? इसीलिए तो तुम रो रही थी न दीदी?"

उस लड़की ने न तो पानी लिया और न ही कुछ बोली। बस मिसेज दास को भयभीत नजरों से ताकती रही। मिसेज दास दुविधा भरी नजरों से कभी अपनी बेटी प्रीशा तो कभी उस अजनबी लड़की को देखे जा रही थीं। अब मिसेज दास को नन्हीं प्रीशा की मासूमियत से भरे प्रयास ने भावविभोर कर दिया।

उन्होंने प्रीशा से कहा "तुम अब जाकर अपने काम पूरे करो। मुझे इससे कुछ बातें करने दो। मैं उससे उसके बारे में जानना चाहती हूँ। यह कौन है? कहाँ रहने वाली है? और यह तुम्हारे साथ क्या कर रही है? चलो पहले तुम बताओ कि यह तुम्हें कहाँ मिली और कैसे मिली?"

प्रीशा ने कहा "माँ यह दीदी गली के मोड़ पर एक कोने में बैठकर रो रही थी। लोग इसे देखते हुए वहाँ से गुजर रहे थे पर



किसी ने भी इसकी कोई मदद नहीं की। मैं खुद को रोक नहीं पाई माँ। मैं इसे आपके पास लेकर आ गई, ताकि आप इसकी कोई मदद कर दें।"

मिसेज दास प्रीशा के इस साहसी कदम को मन ही मन सराहते हुए सोच रही थी कि क्या इस छोटी-सी बच्ची में इतनी हिम्मत, इतना साहस और इतनी समझ है कि वह बिना कुछ परवाह किए हुए इस छोटी-सी जान के लिए कोई भी जोखिम ले सकती है। उन्होंने मन ही मन उसके इस साहसी कदम के लिए ईश्वर को धन्यवाद कहा। लेकिन उनके मन को एक अनजाना-सा भय भी सता रहा था। इसका अनुमान छोटी प्रीशा को नहीं था। क्योंकि अभी उसे दुनियादारी का कोई ज्ञान नहीं था। यही कारण था कि बिना कुछ सोचे-समझे उसने यह कदम उठा लिया।

मिसेज दास ने प्रीशा को होमवर्क पूरा करने के लिए कहा। प्रीशा चुपचाप गिलास रखकर अपने कमरे में चली गई। मिसेज दास अब उस लड़की के पास जाकर बैठीं। वह उसे गहरी नजरों से उसे अंदर तक टटोलने की कोशिश करती हैं। पहली नजर में ही दिख रहा था कि वह लड़की कई दिनों से अच्छे से खाना तक नहीं खाई है। उसके कपड़े बहुत ही गंदे और कहीं-कहीं से तो फटे हुए भी थे। उसके बाल बिखरे थे। सूखे पपड़ियाये चेहरे पर उसकी बड़ी-बड़ी गहरी आँखें थीं, जो बहुत थकी और निश्छल दिख रही थीं। ये किसी को भी अपनी ओर सहज ही आकर्षित कर रही थीं। उसका रंग साँवले से भी थोड़ा और गहरा था। उन गहरी आँखों में एक गजब की चमक थी, जो उसके जीवन जीने की लालसा और उसके साहस भरी आँखों से बाहर झाँकने के लिए मजबूर करती थी। मिसेज दास ने उसका नाम पूछा। उसकी सकपकाहट देखकर उनके हृदय में भी प्रीशा की भांति ही उसके लिए दया और करुणा के भाव भर आए थे। लड़की ने सहमी हुई नजरों से उनकी तरफ देखा और धीरे से होंठों में बुदबुदाते हुए अपना नाम बताया - "जी अचला।"

"तुम्हारे साथ क्या हुआ जो तुम रो रही थी? और तुम यहाँ कैसे आ गई? क्या तुम अपने घर का रास्ता भूल गई हो?"

अचला ने उनकी ओर देखा और धीरे से पूछा - "क्या मैं पानी पी सकती हूँ?"

मिसेज दास ने कहा - "हाँ-हाँ, पी लो। क्या तुम्हें भूख भी लगी है? तुम कुछ खाओगी?"

अचला ने कुछ कहा नहीं। बस सहमी हुई-सी उनकी तरफ देखकर नजरें झुका ली। मिसेज दास ने उसके संकोच को समझा और उसके लिए कुछ खाने को लाकर दिया।

इतनी देर में दोनों के बीच एक अनकहे संवाद का पुल बन चुका था। सहानुभूति का भाव पाकर अब वह लड़की भी कुछ-कुछ आश्वस्त हो चुकी थी।

मिसेज दास ने उससे पूछा "तुम कौन हो? और यहाँ तक कैसे आई हो?"

अचला ने धीमे स्वर में कहा - "मुझे नहीं पता मेरा घर कहाँ है, मुझे एक रिश्तेदार ने, जो माँ-बापू से बहुत मिलने आते थे, वे एक दिन मुझे घूमने के नाम पर ट्रेन में बिठाकर दूर शहर में ले गए। वहाँ जाकर उन्होंने मुझे एक अनजान आदमी के पास कुछ पैसे लेकर छोड़ दिया। उस आदमी ने कुछ दिन मुझे अपने पास रखा। वह मुझे बराबर मारा-पीटा करता था। उसने मुझे

घर के सारे काम करना सिखाया। बदले में खाने को सूखी रोटी और भाजी दे देता था, वह भी बस दो बार। कुछ दिन के बाद उसने मुझे एक बड़े साहब और मैडम के साथ कर दिया। वे मुझे वहाँ से अपने साथ और बड़े शहर में ले गए। उनके घर में उनके दो बच्चे थे। मुझे लगा चलो अब मुझे परिवार मिल गया, अब मैं इन लोगों के साथ अच्छे से रह पाऊँगी। लेकिन कुछ दिन में ही सबकुछ बदल गया। वहाँ भी वे लोग मुझसे सिर्फ घर का काम करवाते थे। मेरा मन भी उनके बच्चों को देख पढ़ाई करने और स्कूल जाने का होता था। लेकिन मुझे गलती से भी किताबों को हाथ लगाने की मनाही थी। मैडम मुझे जमीन पर सोने को कहती थी। अगर मैं थक जाती थी, किसी काम को अच्छे से नहीं कर पाती थी तो मुझे उस दिन का खाना भी नहीं मिलता था। उल्टे मुझे मार पड़ती थी। बाद में मुझे घर के स्टोर रूम में बंद किया जाता था।"

मिसेज दास बस चुपचाप उसकी ओर टकटकी लगा कर देख रही थी। कितना कुछ सहा है इस छोटी-सी बच्ची ने! वे दुनिया से इंसानियत को मरता हुआ महसूस कर रही थीं। फिर उन्होंने उससे पूछा "तुम यहाँ तक कैसे आ पहुँची?"

बच्ची को अब मिसेज दास पर भरोसा बढ़ गया था।

उसने कहा, "दो-तीन दिन उन्होंने मुझे स्टोर रूम से बाहर नहीं निकाला। मुझे बहुत जोर की भूख लगी हुई थी। कुछ समझ में नहीं आ रहा था मैं क्या करूँ? फिर जमीन पर लेटे-लेटे मुझे स्टोर रूम का वेंटिलेटर दिखा। मैं किसी तरह उसका काँच निकाल कर वहाँ से भाग निकली। फिर मैं भटकते हुए एक मंदिर के पास पहुँची। वहीं लोगों से माँगकर खाना खाया। एक दिन मंदिर के पास के स्टेशन से रेलगाड़ी में बैठकर अपने घर के लिए निकल पड़ी, लेकिन मैं यहाँ पहुँच गई। मुझे बहुत डर लग रहा था कि कहीं मुझे यहाँ से भी कोई पकड़ कर अपने घर न ले जाए। इसलिए किसी के पूछने पर भी मैंने उन्हें कुछ नहीं बताया। मैं इतना थक गई थी कि अब मुझसे चला नहीं जा रहा था। अब भूख के मारे मेरा बुरा हाल हो रहा था। इसी बीच आपकी बच्ची ने मुझे रोते हुए देखा और वह मुझे पकड़कर अपने साथ यहाँ ले आई।"

मिसेज दास ने उसे बाथरूम दिखलाया और स्नान करके आराम करने के लिए कहा। उसे उन्होंने प्रीशा के कुछ कपड़े बदलने के लिए दिए। उसे महसूस हुआ कि यह उसके लिए माँ-बापू के घर से अधिक सुरक्षित जगह है। वह बैठे-बैठे लंबे सोफे पर लेट गई।

वे गुमसुम-सी अचला को निहारे जा रही थीं। उनके मन में अचला के लिए वात्सल्य के भाव उमड़ रहे थे। वह सोच रही थी पता नहीं लोगों को क्या होता जा रहा है, उनके खुद के बच्चे होने के बाद भी वे दूसरों के बच्चों के साथ इतने बुरे बर्ताव कैसे करते हैं? मानवता इतनी कैसे गिर सकती है? इन्हीं सवालों के बीच उनका ध्यान अचला के सिहरते हुए शरीर पर गया। उन्होंने अचला का हाथ अपने हाथ में लेकर देखा। वह बुखार से तप रही थी। उन्होंने अचला को एक बिस्तर पर सुलाकर कंबल ओढ़ा दिया। फिर उसे दवा दी। थकी-माँदी अचला पुनः सो गई।

मिसेज दास के लिए यह अब बड़ी समस्या थी कि इस बच्ची का मैं क्या करूँ? इसे कहाँ लेकर जाऊँ? यही सोचते-सोचते वह रसोई में गई और खाना तैयार किया। उन्होंने अचला और प्रीशा को जगाया। अचला घबराकर उठ बैठी। उसे लगा कि अब उसकी पिटाई तो तय है। क्योंकि वह बिना अनुमति के सो कैसे गई थी?

वह अभी भी पुराने सदमे से उबर नहीं पाई थी। लेकिन मिसेज दास ने उसे अपनी बाहों में भरकर उसे शांत किया और कहा "कोई बात नहीं, मैंने तुम्हें दवाई देकर सुलाया था। अब हम खाना खाने चलें।"



जब प्रीशा ने अचला को देखा तो उसकी आँखों में एक खुशी की लहर थी, क्योंकि अचला उसके कपड़े में थी और अब वह पहले से कहीं अधिक अच्छी लग रही थी। उसकी आँखों में डर के भाव नहीं थे। प्रीशा ने इसके लिए अपनी माँ को धन्यवाद दिया। मिसेज दास अचला को धीमी और मधुर आवाज में कहती हैं, "अचला तुम खाना लो।"

अचला खाना खाकर सो गई। वह थोड़ी निश्चिंत-सी दिख रही थी कि अब शायद उसके जीवन में ऐसी कोई भी बुरी घटना नहीं घटेगी।

उसे लेकर मिसेज दास के मन में प्रश्नों के बवंडर उठ रहे थे कि अब इस बच्ची का मैं क्या करूँ? और कैसे करूँ? अगर इस

बच्ची के माँ-बाप इसे मिल जाएँ या ढूंढते हुए यहाँ आ जाएँ तो मैं क्या जवाब दूँगी? इसी उधेड़बुन में उन्होंने अपना फोन उठाकर नजदीकी पुलिस थाने में बच्ची के लिए रिपोर्ट दर्ज करवाने की बात सोची, लेकिन छोड़ दिया। मिसेज दास दूसरे दिन स्कूल से अवकाश लेकर अचला को नजदीकी पुलिस थाने में ले जाकर उसके गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज करवाई।

रिपोर्ट दर्ज करते समय थाने की महिला अधिकारी ने अचला से प्यार से पूछा, "बेटा तुम्हारे माता-पिता का नाम क्या है?"



अचला ने धीरे से कहा, "मेरी माँ का नाम सितवा और बापू का नाम रामचंदर है।"

पुलिस अधिकारी ने अचला से पूछा, "तुम कहाँ से हो? तुम्हारा गाँव कहाँ है?"

अचला क्या तुम हमें यह बता सकती हो? ताकि हम तुम्हारे माँ-बापू से तुम्हें मिलवा सकें? अचला ने कहा, "हाँ, मुझे याद है। मेरा गाँव, एक बड़ी नदी के किनारे है। वहाँ बहुत सारे बड़े पेड़ हैं। जंगल भी है, जहाँ मैं माँ-बापू के साथ अपने छोटे से घर में रहती थी। शाम को बापू जंगल से लाए सामान बाजार में बेचकर कुछ पैसे ले आया करते थे। मेरे लिए कुछ खाने का भी। और हम तीनों खुशी-खुशी उस गाँव में रहा करते थे।"

पुलिस अधिकारी ने अचला की ओर देखा और पुन: प्यार से पूछा, "अचला बेटा, अपने गाँव का नाम बताओ।"

वह बोली, "मुझे बस इतना याद है कि मेरा गाँव नदी के किनारे जंगल के बीच में है। गाँव का नाम मुझे याद नहीं है।"

पुलिस अधिकारी ने आगे उस सवाल को दोहराना उचित नहीं समझा। क्योंकि उन्हें यह बात तो समझ में आ चुकी थी कि अचला को अपने गाँव का नाम अब याद नहीं है।

यह पुलिस अधिकारी के लिए चिंता का विषय था, विशेष रूप से मिसेज दास के लिए। क्योंकि जब से अचला उनके घर आई थी प्रीशा कुछ ज्यादा ही खुश थी। उसे अचला के रूप में एक साथी और बहन मिल गई थी। वे दोनों एक दूसरे की पूरक बन चुकी थीं। अब उन्हें अन्य दोस्तों की जरूरत नहीं थी।

महिला पुलिस अधिकारी ने मिसेज दास से पूछा, "मैम, इस बच्ची को चाइल्ड वेलफेयर समिति को सौंपना पड़ेगा।"

मिसेज दास ने पूछा, "और उसके बाद फिर क्या होगा? आगे क्या प्रक्रिया होगी? इस बच्ची के साथ फिर क्या करेंगे?"

महिला पुलिस अधिकारी ने कहा, "वहाँ से इसे शेल्टर होम में भेज दिया जाएगा, जहाँ गुमशुदा बच्चियों को रखा जाता है।"

मिसेज दास ने कहा, "मैम, क्या इन प्रक्रियाओं को पूरा करना जरूरी है?"

महिला पुलिस अधिकारी ने कहा, "मैम आप जब रिपोर्ट दर्ज करवा रही हैं, तब यह प्रक्रिया तो पूरी करनी पड़ेगी।"

कई दिनों के संग-साथ और उसके साथ-साथ प्रीशा की विकसित होती केमिस्ट्री ने मिसेज दास के मन में भी अचला को लेकर अब एक लगाव पैदा हो आया था। वह अचला को छोड़ना नहीं चाहती थीं। उन्होंने इसका भी एक रास्ता निकाला। महिला पुलिस अधिकारी की सहायता तथा इलाके में अपनी अच्छी छवि के प्रभाव के कारण वे 'चाइल्ड वेलफेयर समिति' और 'शेल्टर होम' की प्रक्रिया को पूर्ण करती हुई अचला को एडॉप्ट कर सकती थीं। इस सिलसिले में उन्होंने पुलिस अधिकारी से सलाह ली और अधिकारी को आश्वस्त किया कि अचला को चाइल्ड वेलफेयर समिति और सेल्टर होम भेजने की अपेक्षा उसके हित में एडॉप्शन सही विकल्प होगा। एडॉप्शन के समय अचला को उन्होंने अपनी बेटी माना और उसे अपने घर ले आयीं। मिसेज दास ने प्रीशा और अचला के लिए एक समान शिक्षा की व्यवस्था की। उन्होंने अचला का दाखिला भी उसी स्कूल में करा दिया, जहाँ प्रीशा पढ़ती थी। दोनों



साथ-साथ स्कूल जातीं और साथ ही लौटतीं। अचला, प्रीशा से उम्र में बड़ी थी और पढ़ने में भी समझदार और होशियार थी। अभावमय जीवन ने उसे समय से पहले ही समझदार बना दिया था।

छुट्टियों में जब मिसेज दास प्रीशा और अचला को एक साथ मिलकर पढ़ते-खेलते देखतीं! तो उनके मन में यह विचार आता कि न जाने कितनी अचलाओं को एक छोटी-साहसी प्रीशा की मासूमियत भरी साहस की जरूरत है, जो छोटी-सी उम्र में अपने माँ-बाप से दूर इस क्रूरता की शिकार बन चुकी हैं, जिनसे उनका बचपन छिन चुका है। इसका जिम्मेदार वह किसे मानें? वह इन्हीं विचारों में खोई हुई दोनों को देख रही थीं। उन्होंने जिस तरह से प्रीशा के परवरिश की कामना की थी, उसके अनुरूप उसे पाल-पोष रही थीं। वे सोच रही थीं, काश! लोग अपनी आने वाली पीढ़ियों को मानवता एवं इंसानियत की समझ दे पाते, जो निजी स्वार्थ से ऊपर उठकर एक बेहतर मानवीय समाज का निर्माण करने में सहायक हो पाते।



"हिंदी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।"

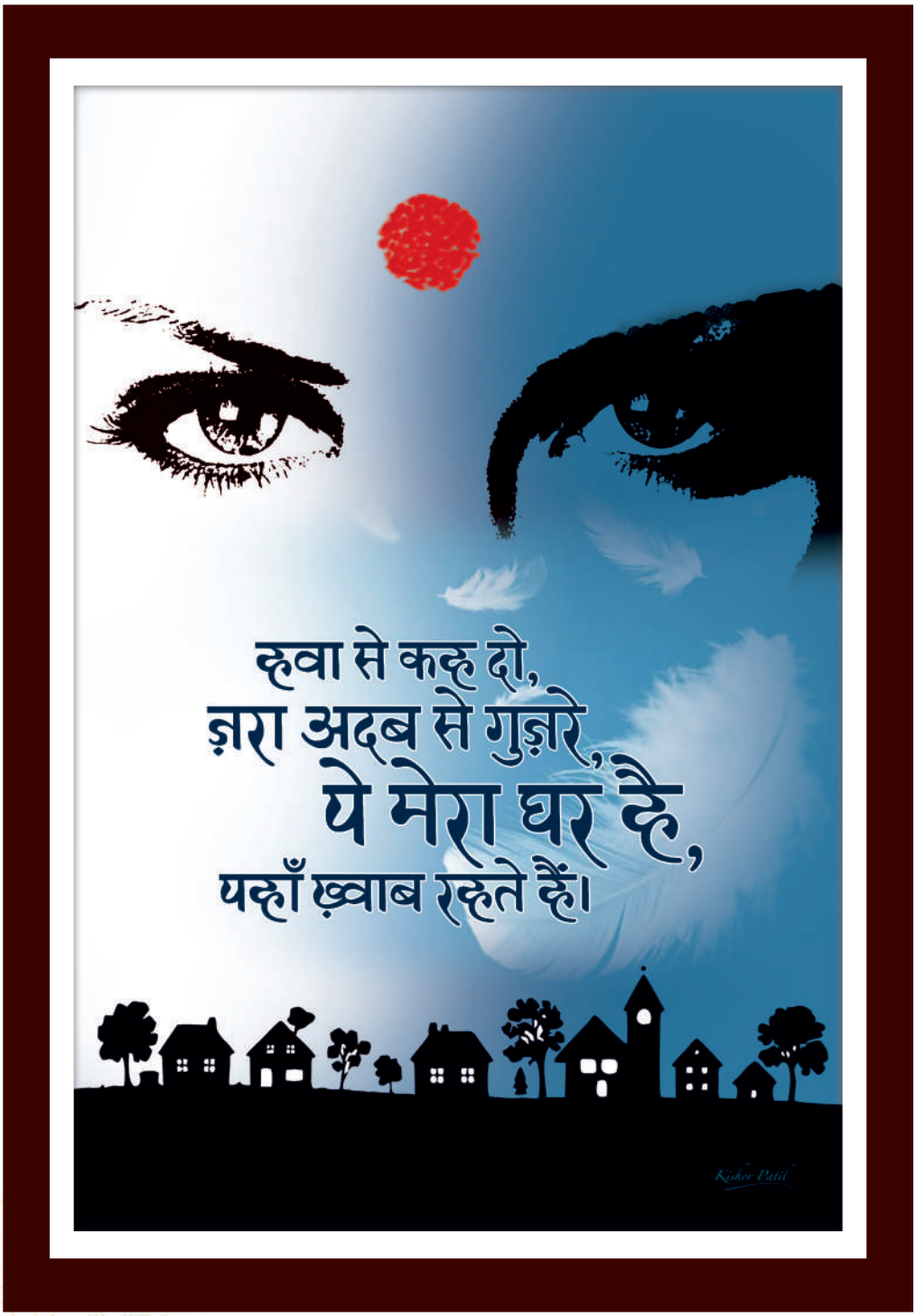
स्वामी दयानंद सरस्वती

चित्रकला

ख्वाब



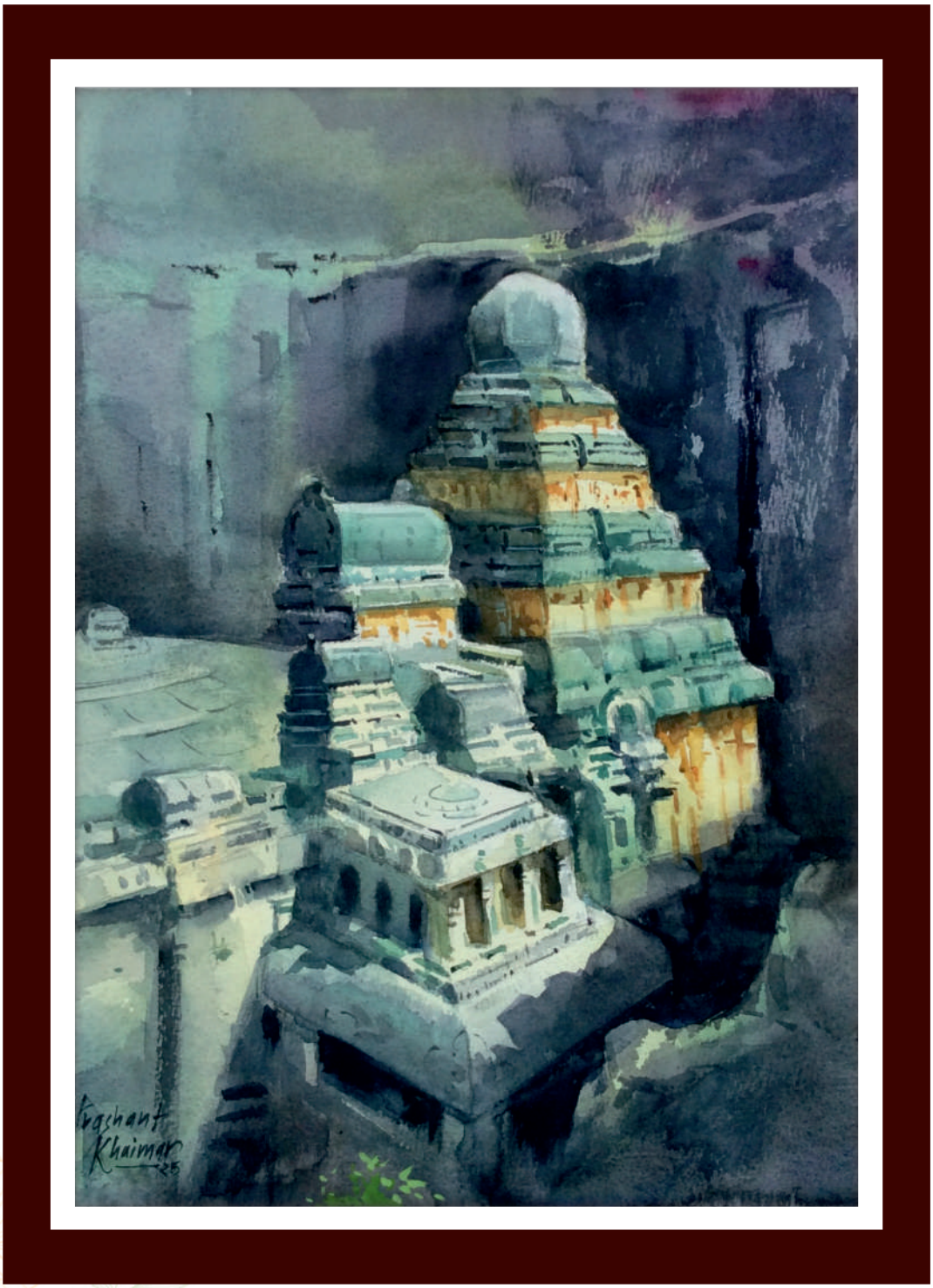
किशोर पाटिल



एलोरा गुफा



प्रशांत खैरनार



गैर तकनीकी लेख संकलन

'उम्मीद की रन 4.0' में 5 किलोमीटर का सफर



लाइश्रम ऋषिकांत मैतै

उम्मीद की रन 2026 (4.0) सुबह 4:30 बजे की शांत और खुशनुमा खामोशी के साथ शुरू हुई। हम चार दोस्तों (जनार्दन, सूरज, ऋषिकांत और राधाकांत) की टीम जेएसआरआर (जस्ट स्टे रेडी टू रन) पुणे के वानवड़ी की सड़कों पर दौड़ने के लिए पूरी तरह से तैयार थी। आने-जाने की व्यवस्था काफी व्यवस्थित थी। सूरज ने अपनी कार से सबसे पहले हमारे दोस्त जनार्दन को लिया और फिर मुझे पिक-अप किया, जबकि राधाकृष्ण सीधे कार्यक्रम स्थल पर हमसे मिले। सुबह 6:00 बजे तक हम सब कार्यक्रम स्थल पर एकत्रित हो गए थे, जहाँ का माहौल पहले से ही उत्साह से भरा हुआ था।

वॉर्म-अप: लय और ऊर्जा

हवा में उत्साह और वॉर्म-अप गानों के बेस की गूँज थी। हमने वहाँ प्रवेश किया तो देखा कि 100 से अधिक प्रतिभागी एक साथ जुम्बा सेशन में झूम रहे थे। भले ही हम 5 किलोमीटर की दौड़ के लिए वहाँ गए थे, लेकिन हम खुद को इसमें शामिल होने से नहीं रोक पाए। संगीत और सामूहिक ऊर्जा ने सुबह की ठंड को दूर करने का बेहतरीन काम किया।

जब हम तैयारी कर रहे थे, तब 10 किमी के धावकों का जोश देखने लायक था। ठीक 6:30 बजे, पंजाबी ढोल की गूँज के बीच वानवड़ी में उनकी उल्टी गिनती शुरू हुई: "फाइव... फोर... थ्री... टू... वन!" और भारी भीड़ किसी बांध के टूटने की तरह आगे बढ़ी।



सुबह 06:50 - 5 किमी की शुरुआत

जल्द ही हमारी बारी थी। जुम्बा के आखिरी जोश के बाद, हम प्रवेश द्वार पर कतार में लग गए। सुबह 6:50 बजे, उल्टी गिनती फिर से शुरू हुई। जैसे ही हमने शुरुआती रेखा पार की। पहले दस मिनट के लिए, दुनिया बस एक ही लक्ष्य में सिमट गई थी: बस दौड़ना। मैं अपने मन में एक ही मंत्र जप रहा था। "स्थिर रहो! पहले मील में ही हिम्मत मत हारना!"

फिनिश लाइन की ओर बढ़ते कदम

2.5 किलोमीटर के आधे पड़ाव तक पहुँचते-पहुँचते शरीर पर थकान दिखने लगी थी। मैंने एक स्वयंसेवक से पानी की बोतल ली, एक छोटा-सा घूँट भरा और फिर आगे बढ़ गया। सुबह की ठंडी हवा से मेरे फेफड़े जल रहे थे और सड़क पर पड़ता मेरा हर कदम पिछले वाले से भारी महसूस हो रहा था।

जैसे ही 4 किलोमीटर का निशान पार हुआ, फिनिश लाइन का गेट आखिरकार दूर से दिखाई देने लगा। भीड़ का शोर कान फाड़ देने वाला था, जिसने मुझमें नई जान फूँक दी। मैंने अपनी रफ्तार बढ़ाई। उस समय मेरी आँखें केवल टिक-टिक करती घड़ी पर टिकी थीं: 07:11:50... 07:11:55...

पूरी ताकत लगाते हुए, मैंने ठीक सुबह 7:12 बजे टाइमिंग मैट को पार किया।

जीत और घर वापसी

मैंने 5 किलोमीटर की इस दौड़ को शानदार 22 मिनट में पूरा किया। हमारे दोस्त लोगों ने भी अपना-अपना 'फिनिशर मेडल' लिया और ग्रुप के साथ नाश्ते का आनंद लेने के बाद मैं घर की ओर निकल पड़ा।

सुबह 9:00 बजे तक मैं अपने फ्लैट पर पहुँच गया— शरीर से पूरी तरह थका हुआ लेकिन मन से विजयी। हालाँकि, दिन का सबसे अच्छा पल वह टाइमिंग या दौड़ नहीं थी, बल्कि अपनी दोनों बेटियों के चेहरों पर वह सच्ची खुशी देखना था, जब उन्होंने मेरा नया मेडल अपने हाथों में पकड़ा और मेरी छोटी बेटी मुस्कुराकर बोली, "पापा, मुझे भी अगले मैराथन में भाग लेना है।" मैंने कहा, "हाँ बेटा, जरूर!"







कट्टनभावी – शिवाजी कागनीकर की बायोगैस विरासत



चंद्रकांत सोनटक्के

जैसे-जैसे पश्चिम एशिया में तनाव की वजह से दुनियाभर में एनर्जी सप्लाई चेन में रुकावट आ रही है, भारत एक बार फिर एलपीजी की उपलब्धता और कीमतों में उतार-चढ़ाव के प्रति संवेदनशील स्थिति में आ गया है। बेलगावी के कुछ हिस्सों समेत कई इलाकों से सिलेंडरों की कमी और रिफिल में देरी की खबरें आ रही हैं। अधिकांश घरों के लिए, रसोई ही वह पहली जगह बन गई है जहाँ भू-राजनीतिक अस्थिरता का असर सबसे पहले महसूस होता है। लेकिन बेलगावी से महज 20 किलोमीटर दूर, कट्टनभावी गाँव एक बिल्कुल अलग तस्वीर पेश करता है। एक ऐसी तस्वीर जिसे शायद नीति-निर्माताओं ने दशकों से नजरअंदाज किया है। यहाँ, लगभग 80% घर एलपीजी पर बिल्कुल भी निर्भर नहीं हैं।

कर्नाटक का यह एक छोटा सा गाँव एलपीजी पर बिल्कुल भी निर्भर नहीं है। यह एक ऐसा गाँव जिसने संकट से खुद को अलग कर लिया है। कट्टनभावी का लचीलापन कोई इत्तफाक नहीं है। यह एक शांत, लगातार चलने वाले आंदोलन का नतीजा है, जिसकी अगुवाई समाज-सेवी डॉ. शिवाजी कागनीकर ने तीन दशक से भी पहले की थी। उस दौर में, जब एलपीजी की पहुँच ही बहुत सीमित थी और रिन्यूएबल एनर्जी (नवीकरणीय ऊर्जा) मुख्य चर्चा का हिस्सा नहीं थी, कागनीकर घर-घर जाकर गाँव वालों को गोबर गैस यूनिट अपनाने के लिए मना रहे थे। आज, करीब 1200 लोगों की आबादी वाले इस गाँव के अधिकांश घरों में 30-35 साल पहले लगाए गए बायोगैस सिस्टम से काम चलता है, जिनमें से कई आज भी चालू स्थिति में हैं। गाँव के लोग एलपीजी से जुड़ी मौजूदा चिंताओं से पूरी तरह बेफिक्र और शांत नजर आते हैं। गाँव के ही भैरवनाथ कोठेकर कहते हैं कि "हम अक्सर बेलगावी और हुक्केरी में एलपीजी की कमी के बारे में पढ़ते रहते हैं, लेकिन हमें कोई चिंता नहीं है। यहाँ बहुत कम लोगों के पास ही सिलेंडर हैं।" यह सिर्फ ऊर्जा के मामले में आत्मनिर्भरता ही नहीं है बल्कि यह दुनिया भर में होने वाले उतार-चढ़ाव से खुद को सुरक्षित रखने का एक जरिया भी है।

अपने समय से आगे

कागनीकर का काम 1990 के दशक की शुरुआत में शुरू हुआ, जब वे स्कूल छोड़ चुके बच्चों के लिए एक स्कूल चलाने के लिए कट्टनभावी पहुँचे। उस समय उन्होंने जो देखा, वह गाँवों का एक जाना-पहचाना नजारा था। जलाऊ लकड़ी के लिए पेड़ों की अंधाधुंध कटाई, हरियाली का कम होना और प्राकृतिक संसाधनों पर बढ़ता दबाव। नीतियों या सब्सिडी का इंतजार करने के बजाय, उन्होंने एक आसान और स्थानीय रूप से उपलब्ध समाधान का सहारा लिया, जो था 'पशुओं का गोबर'। खादी ग्राम अभिवृद्धि संघ जैसे संस्थानों से ट्रेनिंग और जन जागरण संस्था के सहयोग से उन्होंने 'दीन बंधु' बायोगैस यूनिट को बढ़ावा देना शुरू किया। ये सिस्टम जानवरों और इंसानों के कचरे को जमीन के नीचे बिछी पाइपलाइनों के जरिए खाना पकाने के साफ ईंधन में बदल देते थे, जिससे जलाऊ लकड़ी और बाद में एलपीजी की जरूरत खत्म हो गई। गाँव वालों को मनाना आसान नहीं था। लोगों में शक था, जानकारी की कमी थी और यह सोच थी कि ऐसी टेक्नोलॉजी सिर्फ बड़े किसानों के लिए है। कागनीकर और उनकी टीम ने लगातार जमीनी स्तर पर लोगों से जुड़कर इस सोच को बदला। वे हर घर गए, इसके फायदे बताए और आर्थिक या तकनीकी मदद पक्का की। नतीजा यह हुआ कि बड़े पैमाने पर लोगों के व्यवहार में बदलाव आया।

अपने समय से आगे, सिर्फ ईंधन से कहीं ज्यादा कट्टनभावी ने जो बनाया, वह सिर्फ एक वैकल्पिक ऊर्जा सिस्टम नहीं था, बल्कि यह एक चक्रीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था का मॉडल था। बायोगैस यूनिट से कई फायदे हुए:

- खाना पकाने के लिए साफ-सुथरा ईंधन, जिससे धुएँ से भरे रसोईघरों की समस्या खत्म हो गई
- ऑर्गेनिक स्लरी, जिससे मिट्टी की उर्वरता में सुधार हुआ

- पशुपालन में बढ़ोत्तरी, जिससे ग्रामीण आय को बढ़ावा मिला
- शौचालयों के साथ जुड़ाव के जरिए बेहतर सफाई-व्यवस्था
- जंगलों और बाहरी ईंधन स्रोतों पर निर्भरता में कमी

जैसे-जैसे टेक्नोलॉजी विकसित हुई, गाँव ने भी उसके हिसाब से खुद को ढाला। अब नई, छोटी यूनिटें एक वर्ग मीटर से भी कम जगह घेरती हैं और उन्हें काफी कम लागत पर लगाया जा सकता है। कुछ मामलों में तो यह लागत महज ₹25,000 ही होती है। इनका रखरखाव आज भी आसान है और इसे समुदाय के लोग ही मिलकर करते हैं। गृहिणी मल्लव्वा पावले कहती हैं, "हम सुबह एक बाल्टी स्लरी डालते हैं और शाम को एक और इसके अलावा और कुछ भी करने की जरूरत नहीं पड़ती है।"

एक गाँव से आगे विस्तार, कागनीकर का काम केवल कट्टनभावी तक ही सीमित नहीं रहा।

पिछले कुछ सालों में कागनीकर और उनके स्वयंसेवकों के नेटवर्क ने कथित तौर पर बेलगावी जिलेभर में लगभग 20,000 किसानों को बायोगैस सिस्टम अपनाने के लिए राजी किया है। हुक्केरी, खानापुर और आस-पास के इलाकों के गाँवों में भी इसी तरह के बदलाव देखने को मिले, जिससे विकेंद्रीकृत ऊर्जा आत्मनिर्भरता के ऐसे केंद्र बन गए, जब यह शब्द इतना लोकप्रिय भी नहीं हुआ था।

दशकों की सफलता के बावजूद भी नीतिगत अनदेखी

भारत की ऊर्जा योजना में ऐसे मॉडल अभी भी हाशिए पर ही हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में खाना पकाने की नीति पर अभी भी एलपीजी का ही दबदबा है, जो भारी सब्सिडी वाली और केंद्र द्वारा वितरित प्रणाली है, लेकिन यह वैश्विक झटकों के प्रति भी संवेदनशील है। पश्चिम एशिया का मौजूदा संकट एक बार फिर इस ढांचागत कमजोरी को उजागर करता है। दूसरी ओर, कट्टनभावी यह दिखाता है कि सच्ची ऊर्जा सुरक्षा कैसी होती है:

- स्थानीय स्रोतों से प्राप्त
- समुदाय द्वारा प्रबंधित
- पर्यावरण के अनुकूल और टिकाऊ
- भू-राजनीतिक उथल-पुथल से सुरक्षित

एक सबक फिर से मिला कि शिवाजी कागनीकर ने काम करने के लिए किसी संकट का इंतजार नहीं किया।

उन्होंने संकट का पहले ही अंदाजा लगा लिया था — जियोपॉलिटिकल नजरिए से नहीं, बल्कि इकोलॉजिकल और सोशल नजरिए से और जो हाथ में था, उसी से जवाब दिया। तीस साल बाद, जब एलपीजी सप्लाई चेन पर दबाव पड़ रहा है और कीमतें ऊपर-नीचे हो रही हैं, तो उनका काम न सिर्फ काम का लगता है, बल्कि दूर की सोच वाला भी लगता है। अब सवाल यह नहीं है कि बायोगैस काम करती है या नहीं। हमें यह समझने के लिए वैश्विक संकट का इंतजार क्यों करना पड़ा, जबकि एक छोटे से गाँव ने इसका दशकों पहले ही हल खोज निकाला था।



पत्थरों की अद्भुत दुनिया (विजयनगर साम्राज्य हंपी)



किशोर पाटिल



पहली बारिश का मौसम हर किसी को आकर्षक लगता है। पहली बारिश से मिट्टी से आती खुशबू मन को मोह लेती है। सागर का अथाह जल मन को भव्यता का एहसास कराता है। समुद्र तट और खुला आकाश शरीर और मन को आराम और तनावमुक्त करके समृद्ध बनाता है। यह सृष्टि का चमत्कार है।

लेकिन क्या आपने कभी सोचा है? बड़ी-बड़ी चट्टानें, विशाल पहाड़ और अनोखे आकार के पत्थर आपको मानो सपनों की दुनिया में ले जाते हैं। जी हाँ, यह बिल्कुल सच है। हमारे देश में एक ऐसी जगह है, जहाँ के पत्थरों और प्राकृतिक संरचनाओं को देखकर हम हैरान रह जाते हैं। ये हमें सोचने पर मजबूर कर देते हैं कि क्या यह सचमुच संभव है? जी हाँ, यह बिल्कुल सच है। ऐसी ही एक अद्भुत जगह भारत में स्थित है, जिसका नाम है हंपी।

हंपी कर्नाटक राज्य में स्थित है और यह विजयनगर साम्राज्य की गौरवशाली विरासत को संजोए हुए है। विजयनगर साम्राज्य के महान शासकों में श्री कृष्णदेवराय का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उनका शासनकाल कला, संस्कृति, साहित्य और प्रशासनिक समृद्धि के लिए जाना जाता है।

मध्यकालीन भारत में विभिन्न राजवंशों और शक्तियों के बीच राजनीतिक परिवर्तन और संघर्ष होते रहे। इन्हीं परिस्थितियों में दक्षिण भारत में विजयनगर साम्राज्य का उदय हुआ। इस साम्राज्य ने क्षेत्रीय संस्कृति, परंपराओं और प्रशासनिक व्यवस्था को मजबूत आधार प्रदान किया तथा कई शताब्दियों तक दक्षिण भारत के राजनीतिक और सांस्कृतिक इतिहास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

त्रेता युग में इस हंपी को किष्किंधा नगरी कहा जाता था। हंपी विजयनगर की राजधानी है। यह नगर तुंगभद्रा नदी के तट पर बसा है। यहाँ के मंदिरों और महलों की भव्यता की प्रशंसा 14वीं और 16वीं शताब्दी के दौरान यहाँ आने वाले विदेशी पर्यटकों ने की थी। हंपी पौराणिक कथाओं के लिए भी जाना जाता है। यहाँ रामायण से जुड़ी कहानियों का उल्लेख देखने को मिलता है, ऐसे प्रमाण हैं। यह श्री हनुमान की जन्मभूमि है। किष्किंधा नगरी वानरों का राज्य था। इस राज्य पर वालि नामक चक्रवर्ती राजा का शासन था। वालि, सुग्रीव, हनुमान, राम और सीता इस क्षेत्र से संबंधित हैं। इन सभी चीजों को जानकर और देखकर मुझे बहुत खुशी हुई। मुझे ऐसी दिलचस्प जगह के हर चप्पे-चप्पे को देखने की इच्छा हुई।

हंपी यूनेस्को का विश्व धरोहर स्थल भी है। विजय विठ्ठल मंदिर, लोटस पैलेस, विरुपाक्ष मंदिर हंपी के मुख्य आकर्षण हैं। विजय विठ्ठल मंदिर के सामने स्थित एक प्रतिष्ठित स्मारक है। इस जगह की सांस्कृतिक विरासत को हमारे 50 रुपये के नोट पर दर्शाया गया है। जो विजयनगर की भव्यता और प्रसिद्धि की पहचान को दर्शाता है। यह एक पत्थर का रथ है, जो ओडिशा के कोणार्क सूर्य मंदिर की प्रतिकृति है।

हंपी में तीन सबसे प्रसिद्ध मंदिर हैं। विरुपाक्ष मंदिर भगवान शिव को समर्पित है। विठ्ठल मंदिर भगवान विष्णु को समर्पित है और हजारा राम मंदिर भगवान राम को समर्पित है। हंपी के सभी ऐतिहासिक स्मारकों में से विठ्ठल मंदिर को सबसे सुंदर



स्मारक के रूप में जाना जाता है। भगवान विठ्ठल मंदिर महाराष्ट्र के पंढरपुर में भी है, लेकिन हंपी के विठ्ठल मंदिर में भगवान विठ्ठल की मूर्ति नहीं है। इसके विपरीत, महाराष्ट्र के पंढरपुर में भगवान विठ्ठल की एक मूर्ति है। ऐसा क्यों है? इससे संबंधित मुझे अलग-अलग कहानियाँ और तथ्य सुनने को मिले। विजयनगर के राजा रामराय भगवान विठ्ठल को नमन करने के लिए पंढरपुर आए थे। वे वहाँ भगवान विठ्ठल की सुंदर मूर्ति देखकर बहुत खुश हुए और वे इस मूर्ति को हंपी ले गए और हंपी में एक सुंदर भव्य मंदिर का निर्माण कराया। एक प्रचलित मान्यता यह भी है कि अशांत राजनीतिक परिस्थितियों और आक्रमणों के दौर में भगवान विठ्ठल की मूर्ति को सुरक्षित रखने के उद्देश्य से उसे हंपी से पंढरपुर लाया गया था। हालाँकि इस विषय में विभिन्न मत और ऐतिहासिक विवरण उपलब्ध हैं। इसका प्रमाण भगवान विठ्ठल पर आधारित एक मराठी भक्ति गीत से मिलता है।

कानडा विठ्ठल कानडा विठ्ठल ।
कानडा विठ्ठल विटेवरी ॥१॥
कानडा विठ्ठल नामें बरवा ।
कानडा विठ्ठल हृदयीं घ्यावा ॥२॥
कानडा विठ्ठल रूपे सांवळा ।
कानडा विठ्ठल पाहिला डोळां ॥३॥
कानडा विठ्ठल चंद्रभागें तटीं ।
कानडा विठ्ठल पाहावा उठाउठी ॥४॥
कानडा विठ्ठल कानडा बोले ।
कानड्या विठ्ठलें मन वेधियेलें ॥५॥
वेधियेलें मन कानड्यानें माझें ।
एका जनार्दनीं दुजें नाठवेचि ॥६॥

इससे पता चलता है कि भगवान विठ्ठल की मूर्ति पहले कर्नाटक के हंपी में थी।

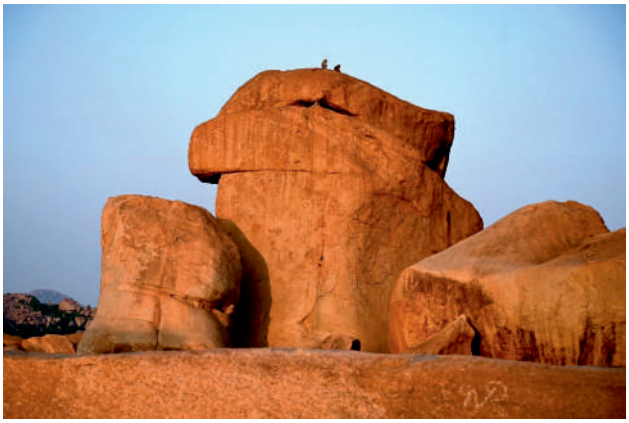
हंपी का सबसे सुंदर मंदिर विरुपाक्षय मंदिर है। इसकी भव्यता और वास्तुकला देखकर हम दंग रह जाते हैं। इस मंदिर की ऊँचाई और भव्य क्षेत्र अद्भुत है। यह मंदिर कृष्णदेवराय के शासन से पहले बनाया गया था। विरुपाक्ष को पंपापति के नाम से भी जाना जाता है। अच्युतराय मंदिर, इस मंदिर का निर्माण कृष्णदेवराय के छोटे भाई अच्युतराय ने करवाया था। वर्तमान में इस मंदिर में कोई मूर्ति नहीं है।

16वीं शताब्दी में तालीकोटा के युद्ध के बाद विजयनगर साम्राज्य का पतन प्रारंभ हुआ। इसके पश्चात हंपी के अनेक भव्य मंदिरों, महलों और स्मारकों को भारी क्षति पहुँची,

जिसके परिणामस्वरूप यह समृद्ध नगर धीरे-धीरे खंडहरों में परिवर्तित हो गया। आज भी इन ऐतिहासिक अवशेषों में उस गौरवशाली साम्राज्य की कहानी देखी और महसूस की जा सकती है।

अब वहाँ सिर्फ खंडहरों से भरा बंजर इलाका बचा है। हालाँकि, कर्नाटक सरकार ने अब इसे काफी हद तक आकर्षक बना दिया है। इस वजह से कई पर्यटक वहाँ जाते हैं और इसकी कहानी जानकर रोमांचित हो जाते हैं।

सी-डैक में मेरा कार्य भारतीय भाषाओं और लिपियों से जुड़ा है। अपने प्रारंभिक कार्यकाल में मैंने कन्नड़ लिपि का अध्ययन किया था तथा कन्नड़ भाषा के लिए कुछ फॉन्ट विकसित किए थे। इनमें हंपी, विरुपाक्ष और पंपा जैसे नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। तभी से मेरे मन में हंपी को प्रत्यक्ष देखने की इच्छा थी। समय के साथ जब मुझे इसकी ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और स्थापत्य विरासत के बारे में विस्तार से जानने का अवसर मिला, तब यह अनुभूति और भी प्रगाढ़ हो गई। इस अनमोल धरोहर को देखकर और उसके इतिहास को समझकर मुझे यह महसूस हुआ कि हंपी वास्तव में पत्थरों की एक अद्भुत दुनिया है, जिसके प्रत्येक शिलाखंड में भारत के गौरवशाली अतीत की अमिट कहानी अंकित है।














FIFTY RUPEES
₹50



परंपरा से पिक्सेल तक : रंग, रूप और नई सोच की यात्रा



काजल किरण

क्या कभी आपने अपनी स्क्रीन पर उभरते किसी रंग, पैटर्न या डिजाइन को देखते हुए यह महसूस किया है कि यह सिर्फ एक डिजिटल रूप नहीं, बल्कि कहीं न कहीं हमारी मिट्टी, हमारी स्मृतियों और हमारी संस्कृति की छाया है? भारतीय डिजाइन की यही खासियत है— यह समय के साथ बदलता है, लेकिन अपनी आत्मा को हमेशा संजोए रखता है।

भारत में डिजाइन केवल देखने की वस्तु नहीं, बल्कि एक अनुभव है, एक ऐसा अनुभव जो भावनाओं, परंपराओं और समय के साथ गहराता जाता है। मधुबनी की कोमल रेखाएँ हों, वारली की सरल आकृतियाँ या कलमकारी की कहानी कहती बारीकियाँ—हर कला अपने भीतर एक अर्थ, एक पहचान और एक जुड़ाव लिए होती है। यह केवल सजावट नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक संवाद है, जो पीढ़ियों से हमारे जीवन का हिस्सा रहा है।

जब हम कहते हैं कि डिजाइन हमारी मिट्टी से जुड़ा है, तो इसका अर्थ यह है कि उसमें केवल रंग और आकार नहीं, बल्कि हमारी सोच और प्रतीकों की छाप भी होती है। जैसे कमल का प्रतीक पवित्रता और नई शुरुआत को दर्शाता है, वहीं मंडला संतुलन और एकता का संकेत देता है। रंगों की अपनी भाषा होती है—केसरिया ऊर्जा और साहस का प्रतीक है, हरा प्रकृति और विकास का और नीला शांति और विश्वास का। यही तत्व आज भी आधुनिक डिजाइन में कहीं न कहीं जीवित है।

समय के साथ जब दुनिया डिजिटल हुई, तब डिजाइन ने भी एक नया रूप अपना लिया। कैनवास अब स्क्रीन में बदल गया और ब्रश की जगह तकनीक ने ले ली। लेकिन इस बदलाव के बीच सबसे सुंदर बात यह है कि परंपरा कहीं खोई नहीं, बल्कि और भी नए रूप में उभरी है। आज के डिजाइनर पारंपरिक कला से प्रेरणा लेकर उसे डिजिटल माध्यम में ढाल रहे हैं—जहाँ हर पिक्सेल में एक कहानी छुपी होती है।

डिजाइन का यह नया रूप अब केवल सुंदरता तक सीमित नहीं रहा, बल्कि अनुभव का केंद्र बन गया है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, उपयोगकर्ता अंतरफलक (User Interface)/उपयोगकर्ता अनुभव (User Experience) डिजाइन ने इसे और भी संवेदनशील बना दिया है। अब डिजाइन हमारी पसंद को समझता है, हमारे व्यवहार को पहचानता है और उसी के अनुसार खुद को ढाल लेता है। यह केवल एक इंटरफेस नहीं, बल्कि एक ऐसा संवाद है, जो उपयोगकर्ता और तकनीक के बीच सहजता से स्थापित होता है।

इस बदलते परिदृश्य में हिंदी भाषा की उपस्थिति इस अनुभव को और भी आत्मीय बना देती है। गूगल पे जैसे ऐप्स में हिंदी इंटरफेस उपयोगकर्ताओं को सहजता प्रदान करता है, वहीं यूट्यूब पर हिंदी सामग्री और वॉइस फीचर्स डिजिटल दुनिया को और अधिक अपनापन देते हैं। अब तकनीक केवल समझने की चीज नहीं, बल्कि अपनी भाषा में महसूस करने का माध्यम बन गई है।

आज एक और दिलचस्प बदलाव देखने को मिलता है—"लोकल से ग्लोबल" का सफर। कई ब्रांड्स अपने डिजाइन में भारतीय पैटर्न, पारंपरिक रंगों और लोक कला को शामिल कर रहे हैं। इससे डिजाइन में एक अलग ही आत्मीयता और पहचान उभरती है, जो लोगों के दिलों से सीधे जुड़ती है। यह केवल एक ट्रेंड नहीं, बल्कि अपनी जड़ों की ओर लौटने की एक खूबसूरत कोशिश है।

हालाँकि, इस तेजी से बदलती दुनिया में एक संतुलन बनाए रखना बेहद जरूरी है। मशीनों की गति के बीच हाथों की कला कहीं पीछे न छूट जाए, इसका ध्यान रखना हमारी जिम्मेदारी है। पारंपरिक कलाकारों की मेहनत और उनकी कला को सम्मान और संरक्षण मिलना उतना ही आवश्यक है, जितना आधुनिक तकनीक को अपनाना।

आने वाला समय उसी का होगा, जो इस संतुलन को समझेगा—जहाँ कृत्रिम बुद्धिमत्ता की समझ, उपयोगकर्ता अंतरफलक/उपयोगकर्ता अनुभव (UI/UX) की सरलता और हिंदी की आत्मीयता एक साथ मिलकर डिजाइन को एक नई दिशा देंगी। तब डिजाइन केवल देखने का माध्यम नहीं रहेगा, बल्कि एक ऐसा अनुभव बनेगा, जो हर व्यक्ति को अपनी भाषा, अपनी संस्कृति और अपनी पहचान से जोड़ सके।

शायद यही भारतीय डिजाइन की सबसे सुंदर सच्चाई है—हर पिक्सेल में एक परंपरा छुपी है और हर डिजाइन में एक नई कहानी जन्म लेती है।

“ एक दिन हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा होकर रहेगी, क्योंकि हिंदी की सहायता से ही भारत के विभिन्न प्रदेशों में एकता स्थापित की जा सकती है।”

बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय

आईपी का प्रभाव : रचनात्मकता, व्यापार और समाज में इसकी भूमिका



परिमल खाडे

बौद्धिक संपत्ति (आईपी) वह कानूनी सुरक्षा है, जो व्यक्तियों या संगठनों को उनके मौलिक कार्यों, आविष्कारों और नवाचारों के लिए प्रदान की जाती है। यह अधिकार रचनाकारों के प्रयासों की रक्षा करने के लिए होते हैं, ताकि वे अपनी बौद्धिक मेहनत से लाभ उठा सकें। आईपी आधुनिक अर्थव्यवस्थाओं में एक केंद्रीय भूमिका निभाता है, क्योंकि यह रचनात्मकता, प्रतिस्पर्धा और सांस्कृतिक विकास को प्रोत्साहित करता है। इसका प्रभाव विभिन्न उद्योगों में फैला हुआ है, जैसे कि व्यापार, प्रौद्योगिकी, विज्ञान, कला और संस्कृति, जो छोटे उद्यमों और बड़े आर्थिक गतिविधियों दोनों को प्रभावित करता है। नीचे आईपी के महत्व को समझने के लिए कुछ कारण दिए गए हैं:

1. नवाचार और रचनात्मकता को प्रोत्साहित करना

आईपी का मूल कार्य नवाचार को प्रेरित करना है। आविष्कारों और रचनात्मक कार्यों पर विशेष अधिकार प्रदान करके आईपी कानून व्यक्तियों और संगठनों को यह नियंत्रण देता है कि वे अपनी बौद्धिक संपत्ति का उपयोग और उसका मुद्रीकरण कैसे करें। यदि ये सुरक्षा न होती, तो नए विचारों, उत्पादों और कलात्मक कृतियों को विकसित करने में समय, संसाधन और प्रयास निवेश करने की प्रेरणा कम हो जाती।

प्रौद्योगिकी उद्योग इसका एक प्रमुख उदाहरण है। एप्पल, माइक्रोसॉफ्ट और गूगल जैसी कंपनियाँ अपने अभूतपूर्व तकनीकी और सॉफ्टवेयर नवाचारों की सुरक्षा के लिए पेटेंट, ट्रेडमार्क और कॉपीराइट्स पर निर्भर करती हैं। यदि प्रतियोगी इनके नवाचारों का स्वतंत्र रूप से उपयोग कर सकते हैं, तो नए समाधान बनाने के लिए वित्तीय प्रेरणा घट जाती, जिससे उद्योग में प्रगति धीमी हो जाती।

2. आर्थिक विकास और रोजगार निर्माण को बढ़ावा देना

आईपी आर्थिक विस्तार में एक महत्वपूर्ण योगदानकर्ता है। बौद्धिक संपत्ति पर आधारित उद्योग हर साल अरबों डॉलरों को उत्पन्न करते हैं और वैश्विक जीडीपी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विश्व बौद्धिक संपत्ति संगठन (डब्ल्यूआईपीओ) के अनुसार, आईपी क्षेत्र दुनिया भर में लाखों नौकरियों का समर्थन करता है और अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण मूल्य को जोड़ता है।

इसके अतिरिक्त, आईपी सुरक्षा शोध और विकास (आरएंडडी), विपणन और आईपी-संरक्षित उत्पादों और सेवाओं की बिक्री में रोजगार के अवसर उत्पन्न करती है। उच्च मूल्य वाली नौकरियाँ दवाइयों (फार्मास्युटिकल्स) जैसे उद्योगों में उत्पन्न होती हैं, जहाँ दवा पेटेंट कंपनियों को अनुसंधान लागत की वसूली करने और महत्वपूर्ण स्वास्थ्य स्थितियों के लिए नए उपचारों के विकास में मदद करती है।

3. वैश्विक व्यापार और व्यवसाय विस्तार को सरल बनाना

आईपी अधिकार अंतरराष्ट्रीय व्यापार के लिए आवश्यक हैं। वे देश और कंपनियाँ जो आईपी कानूनों का सम्मान और प्रवर्तन करती हैं, वे एक सुरक्षित और पूर्वानुमानित व्यापार वातावरण तैयार करती हैं। जब व्यवसाय विदेशी बाजारों में विस्तार करते हैं, तो ये सुरक्षा यह सुनिश्चित करती है कि उनके ब्रांड, उत्पाद और सेवाएँ नकली माल और बौद्धिक चोरी से सुरक्षित रहें।

एक मजबूत आईपी प्रणाली सीमा पार सहयोग को भी बढ़ावा देती है। कंपनियाँ अपने पेटेंट, ट्रेडमार्क्स और कॉपीराइट्स को अंतरराष्ट्रीय साझेदारों को बिना अनाधिकृत उपयोग के भय के

बिना लाइसेंस दे सकती हैं। उदाहरण के लिए, बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अक्सर अपनी प्रौद्योगिकियों को विदेशी बाजारों को रॉयल्टी के बदले में लाइसेंस देती हैं, जिससे पारस्परिक रूप से लाभकारी व्यापार संबंध बनते हैं।

4. उपभोक्ताओं की रक्षा करना

आईपी कानून उपभोक्ताओं की सुरक्षा के लिए भी कार्य करते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि उत्पाद की प्रामाणिकता और गुणवत्ता सही बनी रहे। ट्रेडमार्क्स उपभोक्ताओं को असली उत्पाद पहचानने में मदद करते हैं, जिससे वे सूचित खरीद का निर्णय ले सकते हैं। प्रसिद्ध ब्रांड गुणवत्ता, सुरक्षा और विश्वसनीयता के कुछ मानकों को बनाए रखते हैं और आईपी कानून ब्रांड नामों और लोगो के अनधिकृत उपयोग को रोककर इन मानकों को बनाए रखने में मदद करते हैं।

खासकर दवाइयों, इलेक्ट्रॉनिक्स और विलासिता के उत्पादों जैसे उद्योगों में नकली माल विशेष रूप से खतरनाक हो सकते हैं। नकली दवाइयाँ उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य के लिए खतरनाक हो सकती हैं, जबकि नकली इलेक्ट्रॉनिक्स में सुरक्षा जोखिम या साइबर सुरक्षा खतरें हो सकते हैं। आईपी कानूनों को लागू करने से उपभोक्ताओं को सुरक्षित और उच्च गुणवत्ता वाले उत्पादों तक पहुँच सुनिश्चित करके इन खतरों से निपटने में मदद मिलती है।

5. सांस्कृतिक और कलात्मक विकास को बढ़ावा देना

कॉपीराइट कानून (मुद्राधिकार कानून), जो आईपी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, कलाकारों, संगीतकारों, लेखकों, फिल्म के निर्माताओं और अन्य रचनात्मक लोगों के बौद्धिक उत्पाद को संरक्षित करते हैं। ये सुरक्षा उन्हें अपने कार्य के वितरण और पुनरुत्पादन पर नियंत्रण बनाए रखने की अनुमति देती है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि उन्हें उचित वित्तीय मुआवजा प्राप्त हो। कॉपीराइट संरक्षण के बिना कलाकारों को नई कृतियाँ बनाने के लिए बहुत कम प्रोत्साहन मिलेगा, क्योंकि अन्य लोग आसानी से उनकी नकल कर सकते हैं और बिना अनुमति के उन्हें वितरित कर सकते हैं।

मनोरंजन उद्योग—जिसमें फिल्म, टेलीविजन, संगीत और प्रकाशन शामिल हैं—मुद्राधिकार कानूनों पर काफी हद तक निर्भर करता है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि रचनाकारों को उचित रूप से पुरस्कृत किया जाए। यह समर्थन प्रणाली न केवल व्यक्तिगत कलाकारों को लाभ पहुँचाती है, बल्कि सांस्कृतिक समृद्धि और आर्थिक विकास में योगदान करने वाले पूरे उद्योगों को बनाए रखती है।

6. निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देना

जबकि आईपी आविष्कारकों और रचनाकारों को विशेष अधिकार प्रदान करता है, यह प्रतिस्पर्धा को भी बढ़ावा देता है। अस्थायी सुरक्षा प्रदान करके, आईपी कानून दूसरों को वैकल्पिक समाधान और सुधार विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, जिससे निरंतर नवाचार को बढ़ावा मिलता है। उपभोक्ताओं को इस प्रतिस्पर्धी माहौल से लाभ मिलता है तथा उन्हें उन्नत सुविधाओं और बेहतर गुणवत्ता वाले उत्पादों की व्यापक विविधता तक पहुँच प्राप्त होती है।

उदाहरण के लिए, जब एक दवा का पेटेंट समाप्त होता है, तो अन्य कंपनियाँ उस दवा के सामान्य संस्करण का निर्माण कर सकती हैं, जिससे यह सस्ता और सुलभ हो जाता है। इसी तरह समाप्त पेटेंट नई प्रौद्योगिकियों के विकास की अनुमति देते हैं, जो उद्योग में उन्नति को बढ़ावा देते हैं। इस प्रकार, आईपी कानून नवाचार को पुरस्कृत करने और स्वस्थ बाजार प्रतिस्पर्धा सुनिश्चित करने के बीच संतुलन बनाए रखते हैं।

7. ज्ञान साझा करना और सहयोग को बढ़ावा देना

आईपी केवल रचनाकारों की रक्षा नहीं करता, बल्कि वैश्विक ज्ञान साझा करने में भी योगदान देता है। पेटेंट कानूनों के तहत आविष्कारकों को अपने नवाचारों के तकनीकी विवरण का खुलासा करने की आवश्यकता होती है, जिससे वैश्विक ज्ञान पूल में मूल्यवान जानकारी जोड़ी जाती है। यह पारदर्शिता शोधकर्ताओं, वैज्ञानिकों और उद्यमियों को मौजूदा खोजों को आगे बढ़ाने में सक्षम बनाती है, जिससे चिकित्सा, इंजीनियरिंग और अन्य क्षेत्रों की प्रगति में तेजी आती है।

विश्वविद्यालयों, निगमों और अनुसंधान संस्थानों के बीच सहयोग अक्सर आईपी सुरक्षा से समर्थित लाइसेंसिंग समझौतों पर निर्भर करता है। ये समझौते विचारों, संसाधनों और विशेषज्ञता के आदान-प्रदान को सुगम बनाते हैं, जिसके परिणामस्वरूप अभूतपूर्व नवाचार और तकनीकी प्रगति होती है।

8. पारंपरिक ज्ञान और सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा करना

आधुनिक आविष्कारों के अलावा आईपी पारंपरिक ज्ञान और आदिवासी सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। स्थानीय कारीगर और स्वदेशी समुदाय अपनी सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों, कलाकृति और पारंपरिक प्रथाओं के अनधिकृत व्यावसायीकरण को रोकने के लिए आईपी कानूनों का उपयोग कर सकते हैं।

उदाहरण के लिए, भौगोलिक संकेत क्षेत्र-विशिष्ट उत्पादों - जैसे इटैलियन चीज या फ्रेंच वाइन - की रक्षा करते हैं, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि उनकी प्रामाणिकता और धरोहर बरकरार रहे। पारंपरिक ज्ञान को आईपी अधिकार प्रदान करके, समुदाय अपनी सांस्कृतिक परिसंपत्तियों पर नियंत्रण बनाए रख सकते हैं तथा अपने योगदान के लिए उचित मान्यता और मुआवजा प्राप्त कर सकते हैं।

“ हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्रोत है और अंग्रेजी सर पर ढोना डूब मरने के बराबर है।”

डॉ. संपूर्णानंद

मेरी नई पहचान



अनिता एस

दुनिया उस दिन को जरूर याद रखती है, जब एक बच्चा जन्म लेता है। घर में खुशियाँ छा जाती हैं, मिठाइयाँ बँटती हैं और सबकी नजर उस नन्हे चेहरे पर टिक जाती है। लेकिन उसी पल एक और जन्म होता है, जिसे कोई नहीं देखता — माँ का जन्म।

जब मैंने मनविक आगस्त्य को पहली बार अपनी बाहों में लिया, तब मुझे एहसास हुआ कि अब मैं केवल अनिता नहीं रही। मैं अब उसकी माँ बन चुकी हूँ। मेरी धड़कनों की ताल उसकी लोरी बन गई, मेरी गोद उसका संसार बन गई और मेरे हर विचार का केंद्र वही बन गया।

माँ बनना आसान नहीं होता। यह किताबों में नहीं सिखाया जाता। यह आधी रात के आँसुओं, थके हुए हाथों और हर बार भगवान से की गई दुआओं के साथ शुरू होता है। यह थकान में भी मुस्कुराने की ताकत है और दर्द में भी हिम्मत जुटाने की क्षमता है।

माँ बनते ही एक नई स्त्री का जन्म होता है, जो पहले से कहीं अधिक मजबूत, कोमल और साहसी होती है। अब जिंदगी समय की घड़ी से नहीं, बल्कि छोटे-छोटे पलों से मापी जाने लगती है। पहली मुस्कान, पहली बार उसकी नन्ही उँगली पकड़ना और पहली खिलखिलाहट, ये सब जीवन के अनमोल पल बन जाते हैं।

इन सबके बीच एक माँ का दिन कभी खत्म नहीं होता। घर के सारे काम, रसोई में परिवार के लिए छोटे-छोटे व्यंजन तैयार करना, दफ्तर की जिम्मेदारियाँ निभाना और बीच-बीच में अपने बच्चे की हँसी देखने के लिए वीडियो कॉल करना, यह सब केवल एक जिम्मेदारी नहीं, बल्कि उससे कहीं बढ़कर है। यह तो ईश्वर द्वारा हर माँ को प्रदान की गई एक अलौकिक शक्ति है।

चाहे काम कितना भी हो, दिल हमेशा यही कहता है कि जल्दी से सब काम पूरा करूँ ताकि घर लौटकर उस नन्हे दिल को गले लगा सकूँ, जो दरवाजे पर अपनी माँ का इंतजार कर रहा है। वह दिल जिसे माँ की खुशबू, माँ की गोद और माँ की मुस्कान से ही सुकून मिलता है।

यह यात्रा बहुत ही खूबसूरत है — कभी थकान से भरी, कभी आँसुओं से भीगी और कभी हँसी से भरी। लेकिन एक बात निश्चित है कि जब बच्चा जन्म लेता है, तब माँ भी जन्म लेती है और वही सबसे सुंदर जन्म होता है।

"जब बच्चा जन्म लेता है, माँ भी जन्म लेती है। उसके हर आँसू में माँ की धड़कन होती है और उसकी हर मुस्कान में माँ की नई पहचान छिपी होती है।"



सपनों और जिम्मेदारियों के बीच



रेणुका परदेशी

मोबाइल का कैमरा ऑन करते हुए उसके चेहरे पर हल्की-सी मुस्कान थी। आज पहली बार वह अपने बेटे को स्कूल से लेने आई थी। मन में उत्साह भी था और एक अजीब-सी बेचैनी भी। उसने सोचा था कि जैसे ही बेटा उसे देखेगा, दौड़कर गले लग जाएगा। उसी पल को कैद करने के लिए उसने मोबाइल का कैमरा पहले से ही चालू कर लिया था।

थोड़ी देर बाद स्कूल की छुट्टी हुई और बच्चे बाहर आने लगे। तभी उसका बेटा भी बाहर आया। उसने प्यार से उसकी तरफ हाथ हिलाया, लेकिन बेटे के चेहरे पर वह खुशी नहीं थी, जिसकी उसे उम्मीद थी। वह थोड़ा नाराज होकर बोला -

“मम्मी, आप अचानक कैसे आ गईं? पापा कहाँ हैं? वो ही आते हैं ना मुझे लेने... आप क्यों आईं?”

उसके मासूम शब्द सुनकर वह कुछ पल के लिए बिल्कुल शांत हो गई। जितनी खुशी से उसने मोबाइल का कैमरा ऑन किया था, उतनी ही चुप्पी और उदासी के साथ उसने उसे बंद कर दिया। दिल जैसे कहीं भीतर तक टूट-सा गया था। लेकिन उसने अपने चेहरे पर मुस्कान बनाए रखी और बेटे का हाथ पकड़कर घर की ओर चल पड़ी।

घर पहुँचने के बाद भी उसका मन बेचैन था। उसे पहली बार एहसास हुआ कि शायद नौकरी और जिम्मेदारियों के बीच कहीं वह अपने बेटे के बचपन के कुछ खूबसूरत पल खोती जा रही है। उसी पल उसे अपनी माँ की याद आई।

उसकी माँ भी एक कामकाजी महिला थी। तीन बच्चों की परवरिश, घर की जिम्मेदारियाँ और नौकरी - सब कुछ उन्होंने बिना किसी शिकायत के संभाला था। समाज के ताने भी सुने, लेकिन बच्चों को कभी किसी चीज की कमी महसूस नहीं होने दी। उस दिन उसे अपनी माँ का संघर्ष पहले से कहीं ज्यादा समझ आया।

वह सोचने लगी कि एक लड़की की जिंदगी कितनी जल्दी बदल जाती है। बचपन में जो लड़की सिर्फ अपने सपनों में खोई रहती है, शादी के बाद वही अचानक जिम्मेदारियों से घिर जाती है। घर, परिवार, रिश्ते, सबकी अपेक्षाएँ... और फिर एक दिन वह माँ बनती है।

माँ बनना किसी भी महिला के जीवन का सबसे खूबसूरत एहसास होता है। लेकिन उसी के साथ शुरू होता है एक नया संघर्ष - अपने बच्चे को संभालना, परिवार को समय देना और अपने सपनों को भी जिंदा रखना। कई बार इन जिम्मेदारियों को निभाते-निभाते एक महिला खुद को ही भूल जाती है।

उसने भी यही सब महसूस किया था। उसका बेटा एक साल का भी नहीं हुआ था कि उसने नौकरी शुरू कर दी थी। नौकरी शुरू करना उसके लिए आसान फैसला नहीं था। एक तरफ उसका छोटा-सा बच्चा था और दूसरी तरफ उसका करियर। हर सुबह ऑफिस जाते समय उसका मन बेटे के पास ही रह जाता था।

उसे आज भी याद है कि बेटे के बचपन के कई छोटे-छोटे पल वह खुलकर जी नहीं पाई। स्कूल के कार्यक्रम हों या उसके साथ बिताने वाले कुछ खास पल - ऑफिस की जिम्मेदारियाँ कई बार उसके सामने खड़ी हो जाती थीं। अक्सर बेटे को स्कूल से उसके पापा ही लेने जाते थे।

लेकिन उसने कभी हार नहीं मानी। क्योंकि उसके जीवन में एक ऐसा साथी था, जिसने हर कदम पर उसका साथ दिया। बेटे के जन्म के बाद जब उसे नौकरी का अवसर मिला, तब उसके पति ने उससे कहा था - “तुम अपने करियर पर ध्यान दो, बेटे को मैं संभाल लूँगा।”

उनके इन शब्दों ने उसके भीतर नया आत्मविश्वास भर दिया। उसे एहसास हुआ कि अगर परिवार का साथ हो, तो एक

महिला अपने सपनों को बिना डर के जी सकती है। उसके पति ने न सिर्फ बेटे की जिम्मेदारी संभाली, बल्कि उसे ऐसे संस्कार दिए कि आज उसका बेटा बहुत समझदार और संवेदनशील बन चुका है।

कभी-कभी वह अपने बेटे के साथ खेलते हुए खुद भी बच्ची बन जाती थी। बचपन में उसे गुड़ियों से खेलने का कभी शौक नहीं था, लेकिन आज जब वह अपने बेटे के साथ खेलती, तो उसे लगता जैसे भगवान ने उसे एक प्यारा-सा "गुड्डा" देकर उसकी वह अधूरी ख्वाहिश भी पूरी कर दी हो।

समय के साथ उसने यह समझ लिया था कि जिंदगी में हर चीज एक साथ पाना आसान नहीं होता। कुछ पाने के लिए कुछ छोड़ना पड़ता है। समझौता शायद हर कामकाजी महिला की जिंदगी का हिस्सा होता है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि उसके सपने खत्म हो जाते हैं।

उस दिन स्कूल से लौटते समय बेटे की कही बात ने उसे अंदर तक जरूर दुखी किया था, लेकिन उसी घटना ने उसे और मजबूत भी बना दिया। उसने तय कर लिया कि वह अपने रिश्तों और अपने सपनों - दोनों को साथ लेकर चलेगी।

आज वह खुद को खुशनसीब मानती है कि उसे अपने माँ-बाप का प्यार, पति का साथ और अपने बेटे का स्नेह मिला। उसने जिंदगी से यही सीखा कि अगर एक महिला को परिवार का विश्वास मिल जाए, तो वह हर मुश्किल को पार कर सकती है।

आज महिलाएँ हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं, लेकिन अभी भी समाज में कई जगह उन्हें वह सम्मान और सहयोग नहीं मिलता जिसकी वे हकदार हैं। एक कामकाजी महिला सिर्फ अपने परिवार को ही नहीं, बल्कि पूरे समाज को मजबूत बनाने की क्षमता रखती है। इसलिए उसके संघर्ष को समझना और उसके प्रयासों का सम्मान करना बहुत जरूरी है।

क्योंकि एक महिला जब अपने सपनों और जिम्मेदारियों के बीच संतुलन बनाना सीख जाती है, तभी वह सही मायनों में जिंदगी को खूबसूरती से जी पाती है।

अंत में उन सभी महिलाओं को समर्पित -

"वो उजड़े हुए गाँवों से निकलती है शहर बनाने,
बेटी अपना घर छोड़कर निकलती है किसी और का घर बसाने..."

पारिवारिक स्तंभ

भारतीय कला : हमारी गौरवशाली विरासत



आरना गुप्ता
पुत्री मनीष कुमार गुप्ता

भारत की कला दुनिया की सबसे पुरानी और सबसे सुंदर कलाओं में से एक है। कला का अर्थ सिर्फ चित्र बनाना नहीं है, बल्कि अपनी खुशी, त्योहारों और कहानियों को दुनिया के सामने रखने का एक तरीका है।

महान कवि रवींद्रनाथ टैगोर ने कहा है, "कला के माध्यम से मनुष्य अपने आप को व्यक्त करता है, अपनी वस्तुओं को नहीं।"

हिंदी के सबसे प्रसिद्ध लेखक मुंशी प्रेमचंद ने कला के बारे में बहुत सुंदर बात कही है, "कला केवल मनोरंजन ही नहीं है, बल्कि वह सत्य को सुंदर रूप में प्रस्तुत करने का नाम है।"

आइए, भारत के अलग-अलग कोनों की प्रसिद्ध कलाओं के बारे में जानते हैं:

1. प्रसिद्ध चित्रकला शैलियाँ

भारत के हर राज्य की अपनी एक अनोखी चित्रकला है, जो वहाँ की मिट्टी की खुशबू समेटे हुए है।

- **मधुबनी (बिहार):** इसमें उँगलियों, टहनियों और प्राकृतिक रंगों से देवी-देवताओं और प्रकृति के सुंदर चित्र बनाए जाते हैं।
- **वारली (महाराष्ट्र):** यह आदिवासियों की सरल कला है, जिसमें सफेद रंग से गोल, त्रिकोण और रेखाओं की मदद से इंसानों के नाचते हुए चित्र बनाए जाते हैं।
- **गोंद कला (मध्य प्रदेश):** इसमें बिंदुओं और बारीक रेखाओं का उपयोग करके बहुत रंगीन पेड़-पौधे और जानवर बनाए जाते हैं।
- **तंजौर पेंटिंग (तमिलनाडु):** इन चित्रों में असली सोने की परत और कीमती पत्थरों का काम होता है, जो इन्हें बहुत शाही बनाता है।
- **पट्टचित्र (ओडिशा):** यह कपड़े के टुकड़ों पर की जाने वाली बारीक चित्रकारी है, जिसमें भगवान जगन्नाथ की कथाएँ दिखाई जाती हैं।
- **कलमकारी (आंध्र प्रदेश):** इसमें हाथ से बनी बाँस की कलम और प्राकृतिक रंगों से सूती कपड़ों पर पौराणिक कहानियाँ उकेरी जाती हैं।

2. सुंदर हस्तशिल्प और खिलौने

हाथों से बनी चीजें भारत की पहचान हैं।

- **चन्नापटना खिलौने (कर्नाटक):** ये लकड़ी के रंगीन और चिकने खिलौने होते हैं, जिन्हें बच्चों के लिए पूरी तरह सुरक्षित माना जाता है।
- **टेराकोटा (पश्चिम बंगाल):** पकी हुई मिट्टी से बने घोड़े और मूर्तियाँ यहाँ की बहुत पुरानी परंपरा है।
- **कठपुतली (राजस्थान):** धागों से बंधी लकड़ी और कपड़े की गुड़िया, जो अपनी नाच-अदाओं से पुरानी कहानियाँ सुनाती हैं।

3. नाच और गाने की परंपरा

भारत में नृत्य और संगीत केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि ईश्वर की भक्ति और खुशी मनाने का तरीका है। इसे मुख्य रूप से दो भागों में बाँटा गया है:

क) शास्त्रीय नृत्य: ये नृत्य बहुत पुराने हैं और इन्हें सीखने के लिए बहुत अनुशासन और अभ्यास की जरूरत होती है। इनमें हाथों की मुद्राओं और चेहरे के हाव-भाव का बहुत महत्व है।

- **भरतनाट्यम (तमिलनाडु):** यह सबसे पुराना नृत्य है, जिसमें बहुत ही सुंदर मुद्राएँ होती हैं।
- **कथक (उत्तर भारत):** इसमें पैरों के काम और चक्करों का जादू देखने लायक होता है।

- **कथकली (केरल):** इसमें कलाकार भारी मेकअप और बड़े मुकुट पहनकर कहानियाँ सुनाते हैं।
- **ओडिसी (ओडिशा):** यह अपनी कोमलता और मूर्तिकला जैसी मुद्राओं के लिए प्रसिद्ध है।
- **मणिपुरी (मणिपुर):** यह बहुत ही धीमा और भक्तिपूर्ण नृत्य है।

ख) लोक नृत्य: ये आम लोगों द्वारा अपनी क्षेत्रीय खुशी, फसल कटाई या शादियों के मौके पर किए जाते हैं।

- **भांगड़ा और गिद्दा (पंजाब):** ढोल की थाप पर किया जाने वाला जोश से भरा नृत्य।
- **गरबा और डांडिया (गुजरात):** नवरात्रि के समय रंगीन कपड़ों में किया जाने वाला सामूहिक नृत्य।
- **कालबेलिया (राजस्थान):** इसे 'सपेरा नृत्य' भी कहते हैं, जिसमें महिलाएँ साँप की तरह लचीली चाल से नृत्य करती हैं।
- **बिहू (असम):** नई फसल आने की खुशी में किया जाने वाला आनंदमयी नृत्य।
- **लावणी (महाराष्ट्र):** यह अपनी ढोलक की तेज थाप और ऊर्जा के लिए जाना जाता है।

4. साहित्यिक और कथा कला: कहानियों का जादू (Storytelling)

भारत में कहानियाँ सुनाने की परंपरा बहुत पुरानी है। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की ये पंक्तियाँ हमारी संस्कृति की सुंदरता बताती हैं: "अनेकता में एकता, यही भारत की विशेषता।"

पहले जब किताबें नहीं होती थीं, तब लोग चित्रों और गीतों के जरिए कहानियाँ याद रखते थे।

- **पांडुलिपियाँ:** पुराने समय में राजाओं और ऋषियों के विचार ताड़ के पत्तों या भोजपत्रों पर हाथ से लिखे जाते थे। इन्हें बहुत संभालकर रखा जाता था।
- **चेरियाल स्क्रॉल (तेलंगाना):** इसमें एक लंबे कपड़े या कागज पर चित्रों के जरिए पूरी कहानी (जैसे रामायण या महाभारत) दिखाई जाती है। इसे खोलते जाते हैं और कहानी सुनाते जाते हैं।
- **कावड़ कला (राजस्थान):** यह लकड़ी का एक छोटा मंदिर जैसा बॉक्स होता है जिसमें कई दरवाजे होते हैं। हर दरवाजे पर एक चित्र होता है जो कहानी के एक हिस्से को बताता है।
- **मौखिक परंपरा:** हमारे देश में दादी-नानी की कहानियाँ और लोकगीत भी महान कलाएँ हैं, जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक बोलकर पहुँचाई जाती हैं।

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' जी ने लिखा है कि हमारी कला ही हमारी असली शक्ति है, जिसे निम्नलिखित पंक्तियों से समझ सकते हैं-

"संस्कृति वह चीज है जो हमारे व्यवहार में झलकती है, जिसे हमने युगों-युगों की साधना से प्राप्त किया है।"

5. फर्श पर सजावट: रंगोली के अनेक नाम

भारत में हर शुभ काम पर फर्श को सजाया जाता है, जिसे अलग-अलग राज्यों में अलग नामों से बुलाते हैं।

- **ऐपण (उत्तराखंड):** इसे गेरू (लाल मिट्टी) के ऊपर चावल के घोल से बनाया जाता है। इसमें खास तरह की रेखाएँ और चौखटें बनाई जाती हैं।
- **कोलम (दक्षिण भारत):** तमिलनाडु और केरल में चावल के आटे से हर सुबह घर के बाहर सफेद और सुंदर कोलम बनाया जाता है, जो शांति और समृद्धि का प्रतीक है।
- **अल्पना (पश्चिम बंगाल):** बंगाल में त्योहारों पर हाथ की उँगलियों से चावल के लेप द्वारा बहुत ही घुमावदार और फूल-पत्तियों वाले सुंदर डिजाइन बनाए जाते हैं।
- **मंडाना (राजस्थान और मध्य प्रदेश):** दीवारों और जमीन पर गेरू और खड़िया (सफेद मिट्टी) से बनाए जाने वाले ये चित्र बहुत ही शुभ माने जाते हैं।
- **रंगवल्ली (कर्नाटक):** इसे चटक रंगों और फूलों से सजाया जाता है, जो घर के आंगन की शोभा बढ़ाते हैं।
- **झोंटी (ओडिशा):** उड़ीसा में महिलाएँ त्योहारों पर चावल के पेस्ट से दीवारों और फर्श पर बहुत ही बारीक फूलों की आकृतियाँ बनाती हैं।

छायावाद के महान कवि जयशंकर प्रसाद की ये पंक्तियाँ भारत की गौरवशाली कला और इतिहास को सलाम करती हैं:

"अरुण यह मधुमय देश हमारा, जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज

को मिलता एक सहारा।"

रंगों का जादू: प्रकृति के साथ हमारी दोस्ती

पुराने समय में कलाकार बाजार से प्लास्टिक वाले रंग नहीं खरीदते थे, वे 'प्रकृति के वैज्ञानिक' थे। वे रसोई और बगीचे की चीजों से पक्के रंग तैयार करते थे।

- **पीला और नारंगी:** यह रंग रसोई की हल्दी से या जंगल में खिलने वाले पलाश (टेसू) के फूलों को पानी में उबालकर बनाया जाता था।
- **नीला रंग:** यह नील नाम के पौधे की पत्तियों से निकाला जाता था। यह इतना पक्का होता है कि सालों-साल नहीं छूटता।
- **सफेद रंग:** इसे पिसे हुए चावल के घोल से बनाया जाता है। कभी-कभी शंख या चूने को बारीक पीसकर भी सफेद रंग तैयार किया जाता है।
- **काला रंग:** तेल के दीपक की कालिख (काजल) को इकट्ठा करके उसे गोंद के साथ मिलाया जाता था ताकि वह गहरा और चमकदार दिखे।
- **हरा रंग:** इसे ताजी हरी पत्तियों या सेम की फली के रस से निकाला जाता था।
- **लाल और भूरा:** लाल रंग के लिए लाल मिट्टी (गेरू), बीट (चुकंदर) का रस या कत्था इस्तेमाल किया जाता था।
- **बैंगनी रंग:** जामुन या काले अंगूर के रस से हल्का बैंगनी रंग तैयार होता था।

खास बात: इन रंगों को पक्का करने के लिए कलाकार इनमें बबूल की गोंद या बेल का रस मिलाते थे, जिससे रंग सूखने के बाद झड़ते नहीं थे।

★क्या आप जानते हैं?

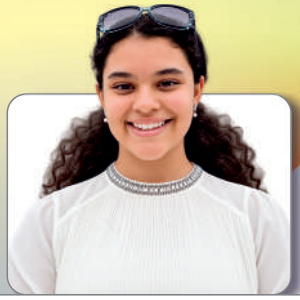
भारतीय कला का गौरव: हमारे देश के प्रसिद्ध चित्रकार नंदलाल बोस जी ने भारत के संविधान की मूल प्रति को अपनी सुंदर कलाकृतियों से सजाया था। उन्होंने इसमें अजंता की गुफाओं, भगवान बुद्ध के जीवन और भारतीय इतिहास के गौरवशाली दृश्यों का चित्रण किया था। यह दर्शाता है कि हमारी कला हमारे देश की पहचान का एक अनिवार्य अंग है।

हमारी कलाएँ हमें सिखाती हैं कि हम अपनी धरती और परंपराओं से कैसे जुड़े रहें। ये कलाएँ केवल पुरानी चीजें नहीं हैं, बल्कि ये हमारे देश की आत्मा हैं। हमें इनका सम्मान करना चाहिए और इन्हें सीखने की कोशिश करनी चाहिए।

"संस्कृति किसी राष्ट्र के दिल और आत्मा की आवाज होती है।"



पूर्वोत्तर भारत की अद्भुत सैर : असम और मेघालय



पूर्वा गोडबोले
पुत्री सायली गोडबोले

भारत का पूर्वोत्तर भाग अपनी अद्भुत प्राकृतिक सुंदरता, हरियाली और सांस्कृतिक विविधता के लिए प्रसिद्ध है। हाल ही में मुझे अपने परिवार के साथ असम और मेघालय की यात्रा करने का अवसर मिला, जो मेरे जीवन की एक अविस्मरणीय यात्रा बन गई।

हमारा सफर गुवाहाटी पहुँचने के साथ शुरू हुआ। गुवाहाटी पहुँचने के बाद हम काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान की ओर रवाना हुए। रास्ते में, नगाँव में महामृत्युंजय मंदिर के दर्शन किए, जहाँ विश्व का सबसे ऊँचा शिवलिंग स्थापित है। 126 फीट ऊँचा यह शिवलिंग अत्यंत भव्य और अद्भुत प्रतीत होता है। मंदिर का शांत वातावरण और आध्यात्मिक ऊर्जा हम सभी को बहुत सुकून दे रही थी। वहाँ जाकर एक अलग ही सकारात्मकता का अनुभव हुआ।

असम का प्रसिद्ध काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान हमारे लिए विशेष आकर्षण का केंद्र था, जो एक सींग वाले गैंडे के लिए विश्व प्रसिद्ध है। यहाँ हमने वन्यजीवों को देखने के लिए रोमांचक खुली जीप सफारी का अनुभव किया। इसके साथ ही हमने हाथी की सवारी (एलीफेंट राइड) का भी आनंद लिया, जो इस यात्रा का सबसे खास और अनोखा अनुभव रहा। हाथी पर बैठकर जंगल के अंदर घूमते हुए हमने एक सींग वाले गैंडे, हाथियों, हिरणों और दुर्लभ प्रवासी पक्षियों को बेहद करीब से देखा। यह अनुभव हम सभी के लिए अत्यंत रोमांचकारी और अविस्मरणीय रहा।

वहाँ हमने ऑर्किड पार्क का भी दौरा किया, जहाँ उत्तर-पूर्व भारत की 600 से अधिक प्रजातियों के ऑर्किड देखने को मिले। यहाँ बाँस और औषधीय पौधों के उद्यान, कैक्टस हाउस और हस्तशिल्प संग्रहालय भी आकर्षण का केंद्र थे। इसके साथ ही हमने हरे-भरे चाय बागानों की सैर की, जो अपनी प्राकृतिक सुंदरता के कारण मन को बेहद भा गए।

इसके बाद हम मेघालय की ओर बढ़े, जिसे "बादलों का घर" कहा जाता है। यहाँ का मौसम ठंडा और मनमोहक था। शिलांग और आसपास के क्षेत्रों में हमने कई सुंदर झरनों का आनंद लिया। एलीफेंट फॉल्स अपनी बहु-स्तरीय सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है। चेरापूंजी में स्थित सेवन सिस्टर्स फॉल्स (नोहस्नगिथियांग फॉल्स) सात धाराओं में गिरता हुआ अत्यंत आकर्षक दृश्य प्रस्तुत करता है। नोहकालिकाई फॉल्स, जो भारत के सबसे ऊँचे झरनों में से एक है, अपनी ऊँचाई और आसपास की हरियाली के कारण मन को मंत्रमुग्ध कर देता है। चेरापूंजी में हमने मावस्माई गुफाओं का भी भ्रमण किया। इन गुफाओं के भीतर प्राकृतिक चट्टानों की बनावट, संकरे रास्ते और ठंडा वातावरण एक अलग ही रोमांच का अनुभव कराते हैं।

मेघालय में हमने मौलिन्नोंग गाँव का भी दौरा किया, जिसे एशिया का सबसे स्वच्छ गाँव कहा जाता है। वहाँ की स्वच्छता, सुंदरता और लोगों की अनुशासनप्रिय जीवनशैली देखकर हम सभी अत्यंत प्रभावित हुए। साफ-सुथरी गलियाँ, हरियाली से घिरा वातावरण और बाँस से बने कूड़ेदान इस गाँव की विशेष पहचान हैं।

इसके बाद हम दावकी नदी (उमंगोट नदी) पहुँचे, जो अपनी अद्भुत पारदर्शिता के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ की बोटिंग इस यात्रा का सबसे अनोखा अनुभव रही। पानी इतना साफ था कि ऐसा लगता था मानो नाव हवा में तैर रही हो। नीचे तक दिखाई देने वाले पत्थर और मछलियाँ इस दृश्य को और भी आकर्षक बना देते हैं। वहाँ नौकायन का अनुभव अत्यंत आनंददायक था।

चेरापूंजी की यात्रा इस सफर का सबसे रोमांचक हिस्सा रही। यहाँ के लिविंग रूट ब्रिज प्रकृति और मानव के अद्भुत सहयोग का अनोखा उदाहरण हैं। इन पुलों का निर्माण रबर के पेड़ों की जड़ों को वर्षों तक दिशा देकर और उन्हें आपस में गूंथकर किया जाता है। यह प्रक्रिया कई दशकों तक चलती है, जिसके बाद एक मजबूत और टिकाऊ पुल तैयार होता है। ये पुल न केवल देखने में अद्भुत लगते हैं, बल्कि आज भी स्थानीय लोग इनका उपयोग करते हैं। परिवार के साथ इन पुलों तक पहुँचने की यात्रा भी एक यादगार अनुभव रही।

लगातार गिरती वर्षा, बादलों से ढकी पहाड़ियाँ और प्राकृतिक सौंदर्य इस पूरे क्षेत्र को स्वर्ग जैसा बना देते हैं। मेघालय के लोगों की सरलता और मेहमाननवाजी ने हमारा दिल जीत लिया। उनकी संस्कृति, खान-पान और जीवनशैली ने हमें बहुत कुछ सिखाया।

यात्रा के अंतिम चरण में हम वापस गुवाहाटी आ गए। हमने ब्रह्मपुत्र नदी पर बने सबसे लंबे रिवर रोपवे का आनंद लिया। इस रोपवे की सवारी करते हुए हमें ऊँचाई से उमानंद मंदिर, पीकॉक आइलैंड, ब्रह्मपुत्र नदी और आसपास की पहाड़ियों का अद्भुत विहंगम दृश्य देखने को मिला। शाम के समय हमने असम का प्रसिद्ध बिहू नृत्य भी देखा, जो यहाँ का पारंपरिक लोकनृत्य है। यात्रा के बिल्कुल अंत में सुबह जल्दी हमने कामाख्या मंदिर के दर्शन किए। माँ कामाख्या के इस पवित्र धाम में जाकर मन को अपार शांति और संतोष प्राप्त हुआ। यह आध्यात्मिक अनुभव हमारी पूरी यात्रा का सबसे सुंदर और पूर्ण करने वाला क्षण बन गया।

असम और मेघालय की यह यात्रा मेरे जीवन की सबसे सुंदर यादों में से एक बन गई है, जिसे मैं हमेशा संजोकर रखूँगी।



काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान



लिविंग रूट ब्रिज



कामाख्या मंदिर



दावकी नदी



चेरापूंजी



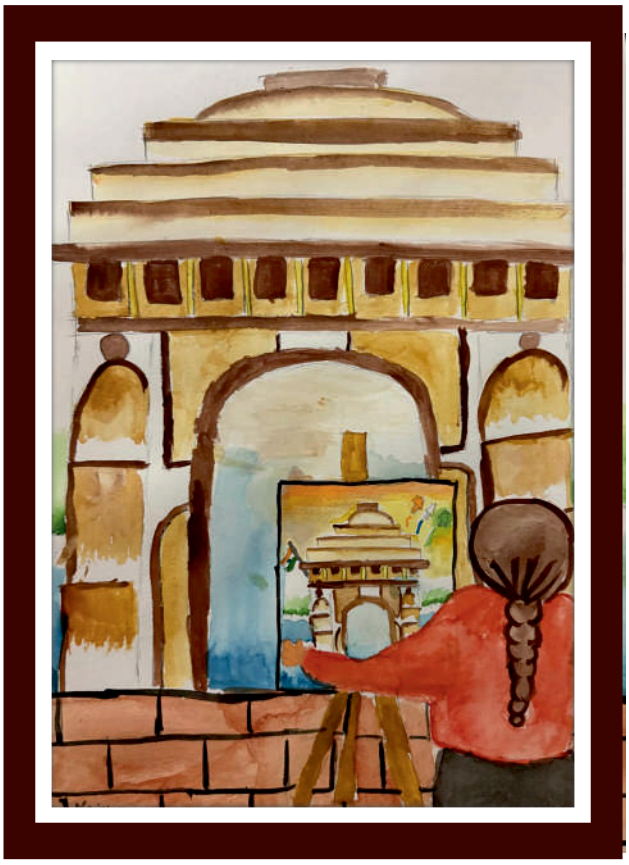
हरे-भरे चाय बागान



नोहकालिकाई फॉल्स



कु. नाइशा कवडीकर
पुत्री सुश्री नेहा गुप्ता



कैनवास के उस पार



कु. आरना गुप्ता
पुत्री श्री मनीष कुमार गुप्ता



घुंघरू की गुंजन



शाम का दृश्य



कु. तोमथीन लाइश्रम
पुत्री श्री लाइश्रम ऋषिकांत मैतै



चि. देवोमीत भास्कर
पुत्र सुश्री मौमिता चौधुरी



तारों की छाँव में



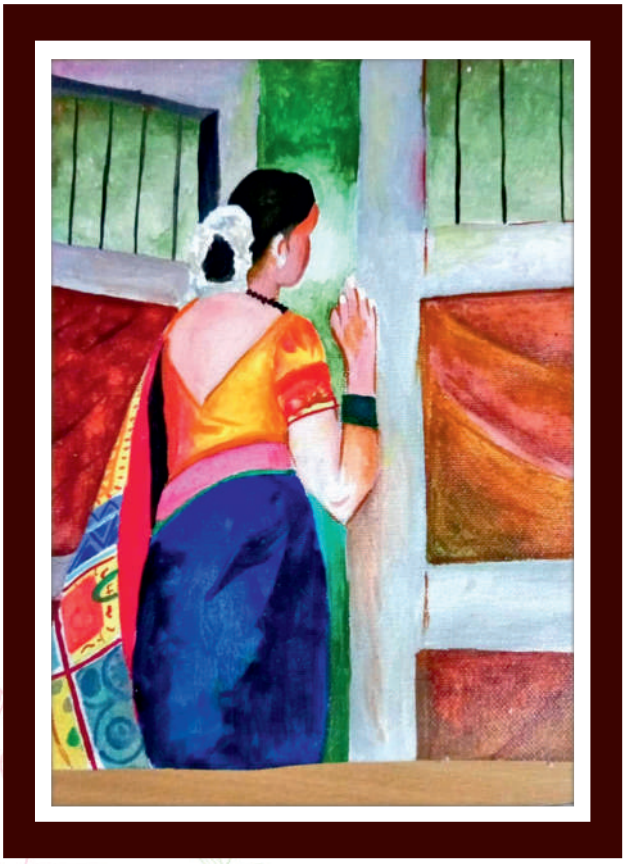
कु. निष्ठा सैनी
पुत्री श्री करुनेश्वर प्रसाद



राधा एवं कृष्ण



कु. हर्षीणि हासलकर
पुत्री सुश्री नूतन हासलकर



प्रतीक्षा



प्रकृति की सुंदरता



चि. परम तांबे
पुत्र श्री प्रितम तांबे



मोहम्मद नूह खान
पुत्र डॉ. अतिउर रहमान खान



गोजो बनाम काकाशी



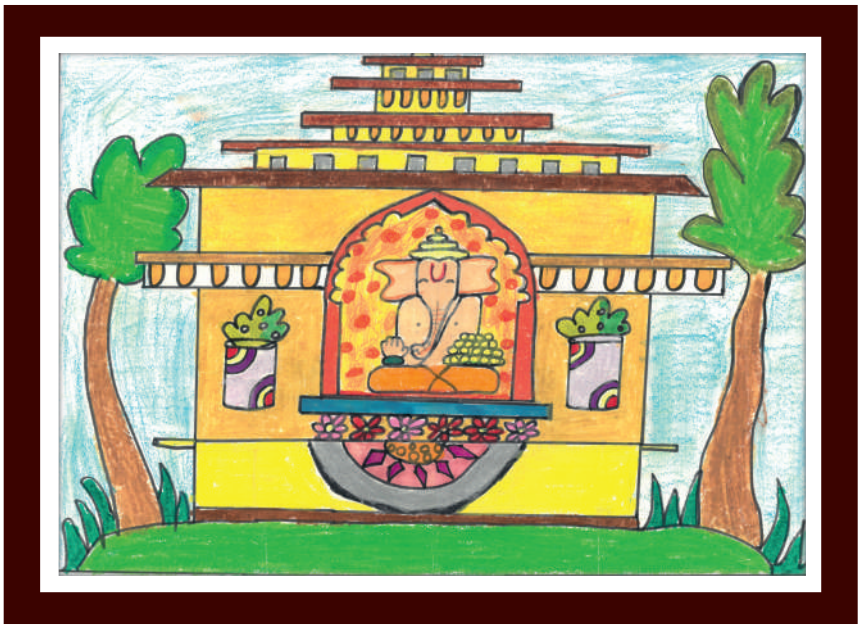
शुभ होली



चि. श्रीअंश विश्वकर्मा
पुत्र श्री शशांक कुमार



कु. सिया गोडबोले
पुत्री सुश्री सायली गोडबोले



मेरे घर आए बाल गणेशजी



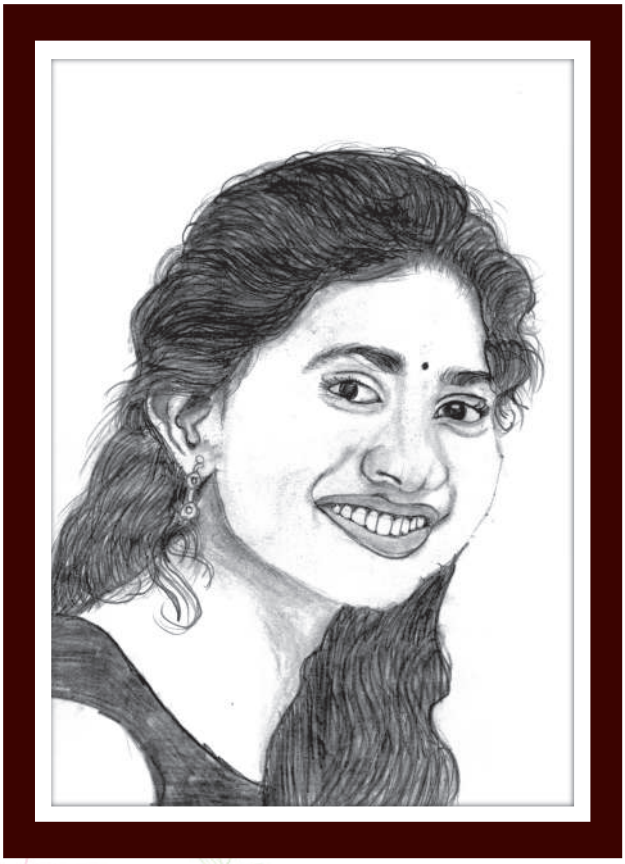
कु. लास्या येनिशेट्टी
पुत्री सुश्री स्वप्ना येनिशेट्टी



विविधता में एकता



कु. लाइश्रम हेनथोइ चनु
पुत्री श्री लाइश्रम ऋषिकांत मैतै



भारतीय अभिनेत्री - साई पल्लवी

विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर सीडैक पुणे केंद्र द्वारा आयोजित ऑनलाइन राजभाषा हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता परिणाम 2026

प्रतियोगिता : राजभाषा हिंदी प्रश्नोत्तरी
(ऑनलाइन) विजेता

सुश्री तेजश्री नामदेवराव मेहर
श्री विमल गंगराड़े
श्री विजय बाळू शिंदे
श्री ऋषीश्वर कौशिक
श्री योगेश गुप्ता
सुश्री वैशाली जैन
सुश्री पूजा मंदार काळे
सुश्री जयश्री संजय पोकळे
सुश्री नीलिमा साहू
डॉ. धनंजय झालटे
सुश्री मौमिता चौधुरी
श्री सुबोध पाण्डेय
श्री नितेशकुमार हरणे
श्री देवेन्द्र कुमार
श्री गणेश अविनाश तावरे
सुश्री सुनैना शर्मा
श्री मौलिक दयाल
सुश्री स्नेहा कालगी
मोहम्मद अजीज मालिक
सुश्री वैशाली समीर सातपुते
श्री अक्षय विलास फराकटे
श्री शशांक कुमार
श्री संतोष वारक
श्री भूषण सुरेश बधान
श्री तेजस विलास मुर्डीव
श्री सिद्धार्थ जैन
सुश्री विशाखा चंद्रकांत धुतड़मल
सुश्री शीतल विशाल निमजे
श्री कमलेश वसंतराव रामटेके
श्री लाइश्रम ऋषिकांत मैतै
सुश्री मनीषा शुक्ला दुबे
सुश्री दीक्षा कुशवाह
श्री नितिन कराळे
श्री गिरीशचंद्र राजाराम येंडरगाये
श्री श्रेयस घोलप
श्री वैनतेय अविनाश कोरटकर
सुश्री वंदना
श्री तुषार दामोदर राणे
श्री संदीप सहाने
श्री अभिषेक तिवारी
श्री रितेश मालवीय
सुश्री प्रीतम दिगंबर तांबे
श्री आशुतोष नरेंद्र नागदेव
डॉ. अतिउर रहमान खान
सुश्री अस्मिता कुलकर्णी
सुश्री श्रद्धा राजेश वटाणे
श्री शुभांशु गुप्ता
श्री विशाल विजय सूर्यवंशी
श्री बाबासाहेब भालेकर
श्री महेश भार्गव

सीडैक पुणे केंद्र स्तरीय हिंदी पखवाड़ा प्रतियोगिता परिणाम 2025

प्रतियोगिता : स्वरचित लेख प्रतियोगिता

दिनांक : 15.09.2025

विजेता:

सुश्री नीलिमा साहू – प्रथम

श्री अक्षय विलास फराकटे – द्वितीय

सुश्री जयश्री पोकळे – तृतीय

डॉ. अतिउर रहमान खान – प्रोत्साहन

श्री नितेशकुमार हरणे – प्रोत्साहन

मोहम्मद अजीज मालिक – प्रोत्साहन

प्रतियोगिता : पावर प्वाइंट प्रस्तुति प्रतियोगिता

दिनांक : 16.09.2025

विजेता:

सुश्री जयश्री पोकळे – प्रथम

श्री नितेशकुमार हरणे – द्वितीय

सुश्री सुनैना शर्मा – तृतीय

श्री दीपू सी वी – प्रोत्साहन

श्री सचिन नांदुरकर – प्रोत्साहन

श्री दिपक देवकर – प्रोत्साहन

प्रतियोगिता : हिंदी अनुवाद सह टंकण

दिनांक : 17.09.2025

विजेता:

श्री नितेशकुमार हरणे – प्रथम

सुश्री जयश्री पोकळे – द्वितीय

सुश्री सुनैना शर्मा – तृतीय

श्री भूषण बधान – प्रोत्साहन

सुश्री शिवानी परदेशी – प्रोत्साहन

सुश्री भाग्यश्री दत्तात्रय भोकरे – प्रोत्साहन

प्रतियोगिता : दिए गए चित्र के आधार पर कहानी लेखन

दिनांक :18.09.2025

विजेता:

सुश्री वंदना – प्रथम

सुश्री नीलिमा साहू – द्वितीय

सुश्री शिवानी परदेशी – तृतीय

सुश्री स्नेहा कालगी – प्रोत्साहन

सुश्री रूपाली पांडुरंग देवळे – प्रोत्साहन

सुश्री भाग्यश्री बोबडे – प्रोत्साहन

प्रतियोगिता : स्वरचित कविता प्रतियोगिता

दिनांक : 19.09.2025

विजेता:

सुश्री नीलिमा साहू – प्रथम

मोहम्मद अजीज मालिक – प्रथम

सुश्री सुनैना शर्मा – द्वितीय

सुश्री तेजश्री मेहर – तृतीय

सुश्री रूपाली पांडुरंग देवळे – प्रोत्साहन

सुश्री रोशनी चव्हाण – प्रोत्साहन

श्री अरुण आर वर्मा – प्रोत्साहन

श्री सुबोध पाण्डेय – प्रोत्साहन

सुश्री नेहा गुप्ता – प्रोत्साहन

प्रतियोगिता : राजभाषा हिंदी प्रश्नोत्तरी (ऑनलाइन)

दिनांक : 23.09.2025

विजेता:

सुश्री रूपाली पांडुरंग देवळे

सुश्री तेजश्री मेहर

सुश्री मौमिता चौधुरी

श्री ऋषीश्वर कौशिक
श्री निलेश विठ्ठल दराडे
सुश्री श्रद्धा काळेले
सुश्री नीलिमा बोडखे
सुश्री दीपाली पिंगळे
मोहम्मद अजीज मालिक
श्री सचिन नांदुरकर
श्री नितिन कराळे
सुश्री पूजा काळे
श्री नीलकुमार शाह
सुश्री नेहा दातीर
श्री अमित श्रीवास्तव
डॉ. अतिउर रहमान खान
श्री देवेन्द्र कुमार
सुश्री सायली गोडबोले

प्रतियोगिता : वाद विवाद प्रतियोगिता
दिनांक :23.09.2025
विजेता:
श्री अरुण गुप्ता एवं श्री पंकज डोरलीकर – प्रथम
सुश्री जयश्री पोकळे एवं श्री महेश मेनन – द्वितीय
श्री अरुण वर्मा एवं सुश्री ज्योति दहिवेले – तृतीय

प्रतियोगिता : हिंदी शब्द ज्ञान
दिनांक :24.09.2025
विजेता:
श्री अरुण गुप्ता एवं श्री पंकज डोरलीकर – प्रथम
डॉ. अतिउर रहमान खान
एवं सुश्री मौमिता चौधुरी – द्वितीय
सुश्री नीलिमा साहू एवं सुश्री सुनैना शर्मा – तृतीय

विभाग/समूह स्तरीय राजभाषा शील्ड पुरस्कार के विजेता:
प्रथम - केंद्र प्रमुख कार्यालय
द्वितीय - क्रय विभाग

राजभाषा शील्ड पुरस्कार के विजेता
प्रथम - सुश्री नीलिमा साहू
द्वितीय - श्री विवेक सराटकर

सी-डैक मुख्यालय स्तरीय हिंदी पखवाड़ा प्रतियोगिता परिणाम 2025
हिंदी अनुवाद सह टंकण -
सुश्री सुनैना शर्मा, पुणे केंद्र – तृतीय
स्वरचित कविता -
सुश्री नीलिमा साहू, पुणे केंद्र – तृतीय
पीपीटी प्रस्तुति -
श्री नितेशकुमार हरणे, पुणे केंद्र - प्रोत्साहन
सर्वश्रेष्ठ आयोजन (केंद्र) - ख क्षेत्र – पुणे (प्रथम)

न्यूनतम 20,000/- शब्द हिंदी में लेखन हेतु नकद पुरस्कार
श्री विवेक सराटकर प्रथम पुरस्कार - रु. 5000/-
सुश्री नीलिमा साहू प्रथम पुरस्कार - रु. 5000/-
सुश्री सुनैना शर्मा द्वितीय पुरस्कार - रु. 3000/-
सुश्री जयश्री पोकळे द्वितीय पुरस्कार - रु. 3000/-
मोहम्मद अजीज मालिक द्वितीय पुरस्कार - रु. 3000/-

पत्रिका में लेख हेतु नकद पुरस्कार
श्री मनीष कुमार गुप्ता
सुश्री सविता सोलंके
सुश्री नेहा गुप्ता
श्री पुनीत बक्शी
सुश्री शुभांगनी असाटी
श्री बिनय कुमार
डॉ. शिल्पा
श्री धवल सोपचंद बारेवार
डॉ. अतिउर रहमान खान
सुश्री वैशाली महेशकर
श्री मनीष कुमार गुप्ता और डॉ. सुधीर कुमार मिश्र
श्री अक्षय फराकटे
श्री नितीन कराळे

सुश्री नीलिमा साहू
श्री राजेश कुमार त्रिपाठी
सुश्री जयश्री पोकळे
सुश्री अस्मिता गारगोटे
श्री अमित गुप्ता
श्री राहुल बोराडे
श्री योगेश सिंह
डॉ. धनंजय झालटे
श्री प्रशांत खैरनार
श्री किशोर पाटिल
श्री विवेकानंद पाटिल
श्री निरंजन पटगांवकर
श्री देवाशीष ताम्रकार
श्री तानाजी नारायण झेंडे
श्री अरुण वर्मा

पत्रिका में लेख/रचना हेतु– प्रोत्साहन पुरस्कार

1. सुश्री रश्मि ताम्रकार
पत्नी श्री देवाशीष ताम्रकार

2. सुश्री सुचिता विकास गुप्ता एवं
श्री राजेश मुरुमकार

3. सुश्री सरिता गुप्ता
पत्नी श्री अमित गुप्ता

4. कु. नाइशा कवडीकर
पुत्री सुश्री नेहा गुप्ता

5. चि. परम तांबे
पुत्र श्री प्रितम तांबे

6. कु. अक्षिता राहुल बोराडे
पुत्री श्री राहुल बोराडे

7. कु. सिया गोडबोले
पुत्री सुश्री सायली गोडबोले

8. श्री गुरु ओम प्रसाद भागवतराव डोंगरे
भाई सुश्री प्रियंका डोंगरे

9. कु. पूर्वा गोडबोले
पुत्री सुश्री सायली गोडबोले

10. चि. प्रेम पाटिल
पुत्र श्री विवेकानंद पाटिल

11. मोहम्मद नूह खान
पुत्र डॉ. अतिउर रहमान खान

12. चि. यायीन सिंह
पुत्र श्री योगेश सिंह

13. कु. लास्या
पुत्री सुश्री स्वप्ना येनिशेट्टी

14. कु. जिया शोभानी
पुत्री सुश्री दीप्ति शोभानी

15. चि. अभीष्ट ताम्रकार
पुत्र श्री देवाशीष ताम्रकार

16. कु. आरना गुप्ता
पुत्री श्री मनीष कुमार गुप्ता



राजभाषा गतिविधियाँ













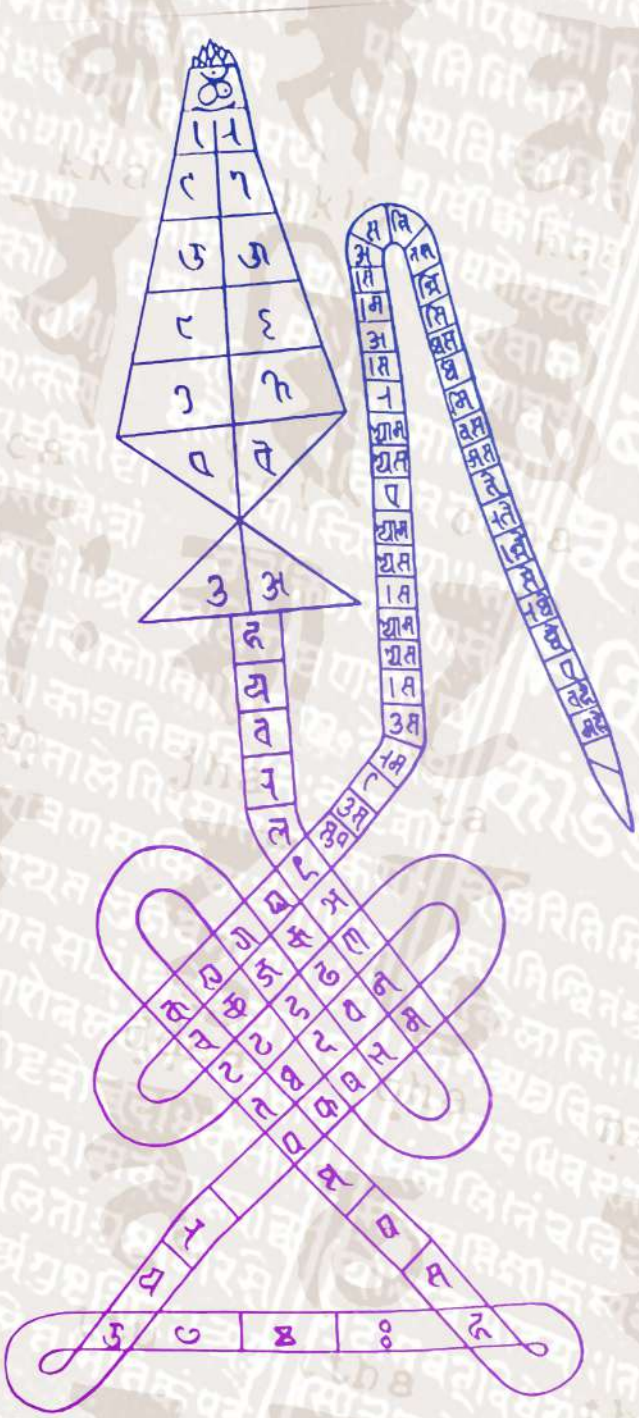




राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 और 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरंतर निगरानी से; अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से; प्रशिक्षण और पुरस्कार से अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाए रखेंगे, उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे; अपने अधीनस्थों के हितों का ध्यान रखते हुए तथा अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल एवं प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा हिंदी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएँगे। हम राजभाषा के संवर्द्धन के प्रति सदैव ऊर्जावान और निरंतर प्रयासरत रहेंगे।

जय राजभाषा ! जय हिंद !



Branding and Communications/Sudha Hindi Patrika/2026

प्रगत संगणन विकास केंद्र
CENTRE FOR DEVELOPMENT OF ADVANCED COMPUTING